ॐ श्रीं सदगुरुदेव चरण कमलेभ्यो नमः

Vol. 01 - No 14

गणेशं भजेऽहं सदा भावगम्य ,

लक्ष्मीमुदासं सौभाग्यरूपं |

मानं यशस्तं परिचायमानः,

श्री मदगुरू संतत मानतोऽस्मि ||

मंगलमूर्ति ,सत्यभावो से ज्ञेय भगवान गणपति एवं सौभाग्यशाली लक्ष्मी को,जो परम उदार गुणों से युक्त हैं नमन करता हूँ | मान यश और शुभ्र प्रतिष्ठा की कामना करता हुआ ह्रदय के अत्यंत कोमलतम स्नेहपूर्ण भावो से सदगुरुदेव निखिल के श्री चरणों मे नमन करता हूँ.

I bow to bhagvaan Ganesh who are magalmurti (the auspicious idol) and able to known through true and pure feelings of heart and also goddess lakshmi, who is very kind and be of all the auspicious quality. i also praying for respect and all type of auspicious things for my life and bow to the divine lotus feet of sadgurudev Nikhil with full heart.

Dedicated
To
The Divine Holy Lotus Feet of
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI
(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)
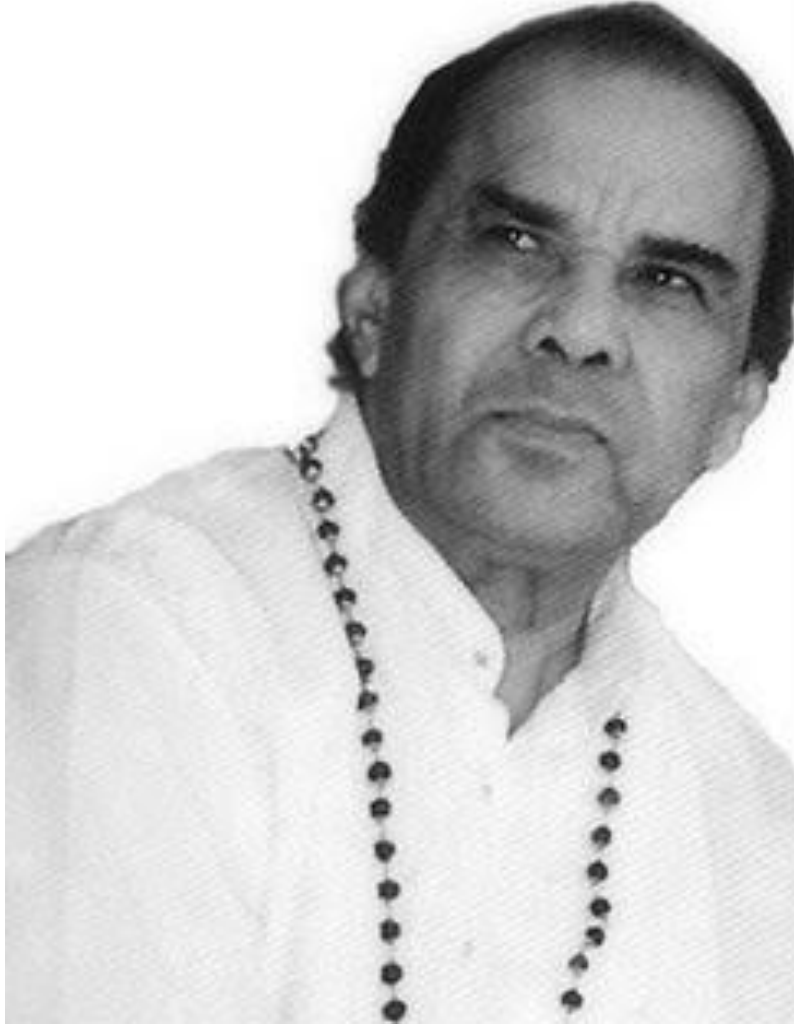
Publisher

Of

Tantra kaumudi e-magazine

Nikhil Para Science Research Unit

Can be contacted through

www.npru.org

www.Nikhil-alchemy2.blogspot.com & Nikhil_alchemy yahoo group

TEAM MEMEBERS OF TANTRA KAUMUDI E- MAGAZINE

Editor *Associates editor s And Creative Designer*

nikhilarif@gmail.com raghunath.nikhil@yahoo.in anuwithsmile@rediffmail.com

Name of the Articles

You can Contact Us at nikhilalchemy2@yahoo.com.

General Rules :

This free e magazine available only to the follower register in the blog Nikhil-alchemy2.blogspot.com. and also nikhil-alchemy groups memeber . the article appear here, are /will be based on the divine wisdom of **SadGurudev Dr Shri Narayan Dutt Shrimali ji** , and his sanyasi shishyas . we as a your fellow guru brothers, here just providing words to their thought. For the address of these mahayogi's are not known to us, as they all are wondering saints.

The sadhana and mantra's appeared /mentioned in any article can be practiced ,on your own responsibility, to get success in sadhana you can have Diksha from anywhere where your faith,devotion and trust calls . for sadhana articles needed for that , you can purchase from any place ,as per you faith and trust suited to you ,

Please do not ask us for any type of sadhana related materials, and also for Diksha related Queries at any cost /condition , we does not sell any sadhana material (yantra , rosary etc).

Since sadhana is a very complex matter, for success and failure of any sadhana mentioned in any article here , many things required , to get success . that's why ,we do not take any responsibility in this connection. we also request, not to do any sadhana ,which is adverse and not permitted as per legal, morel, society belief.

This e magazine will be published monthly. You are receiving this magazine means that you are accepting the terms and conditions . at any time , you can withdraw your registration . this e magazine just a forum to share knowledge between us (Sadgurudev ji's shishyas - All guru brother and sisters),

if still any one raises questions regarding the authenticity of articles published here , for them, treat all articles just as a fiction and a ear say.

......

प्रिय आत्मजनों,

निखिल प्रणाम,

अन्याय शास्त्रेषु विनोद मात्रं

न तेषु किन्चिंद भुवि दृस्टमस्ति |

चिकीत्सित ज्यौतिष तंत्रवादा :

पदे पदे प्रत्यय माबहन्ति ||"

वेदांत साहित्य तर्क की ग्रंथियों मे उलझा हुआ हैं.जब की आगम साहित्य सरल परिभाषाओ के द्वारा रहस्यार्थ का उदघाटन करता हैं.तांत्रिक साधक अंतरतम मे प्रविष्ट हो कर प्रकृति और आत्मा के गुढ़तम रहस्यों के अनुसन्धान मे व्यस्त रहता हैं,आगम शास्त्र गुप्त मार्ग को प्रकाशित करता हैं एवं पग पग पर सत् पंथ निर्दिष्ट कर साधक को विश्वमय एवं विस्वोत्क्रीण ब्रम्ह से साक्क्षात्कार कराता हैं .अन्य शास्त्र केबल विनोद मात्र हैं तथा इस संसार का कुछ भी प्रत्यक्ष कराने मे समर्थ नही हैं. यह केबल तंत्र ,चिकित्सा और ज्योतिष शास्त्र हैं ही जो प्रत्येक पद पर अपनी प्रत्यक्षता का परिचय देते हैं .

इन्ही भावना को ध्यान मे रखते हुये,आपके तंत्र कौमुदी के इस १४ वे अंक को जो प्रकृति तंत्र और रत्न शक्ति तंत्र महाविशेषांक के रूप मे आपकेसभी अपने लिए उपलब्ध करते हुये हमारे लिए यह बहुत ही प्रसन्नता के क्षण हैं.जो यात्रा इस पत्रिका के प्रथम अंक के साथ प्रारंभ हुयी थी,उसका आपके द्वारा इतना अधिक स्नेह पाना और हर महीने इतनी उत्सुकता से इसका इंतज़ार करना, हमारे श्रम के लिए एक गौरव का विषय हैं साथ ही साथ जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य हैं की हमने कोशिश की,सदगुरुदेव के अनन्त ज्ञान के एक अत्यंत लघु अंश को आपने सामने प्रस्तुत करने का,क्योंकि किसी भी व्यक्ति की सामर्थ्य सीमा ही नही हैं सदगुरुदेव के दिव्य ज्ञान के एक भी अंश को सीमाबद्ध करने का.कुछ काल पहले समय ऐसा जरुर बीच मे आया की जब सभी इस बात पर चिंतित हो रहे थे की कुछ नया क्यों नही .

और हमने एक छोटी सी कोशिश की इस दिशा मे आगे चलने की और सदगुरुदेव के सन्यासी शिष्य शिष्याओ के आशीर्वाद से और आप सभी का जो इतना सहयोग मिला,उसी का यह परिणाम आज आपके सामने हैं.मित्रो, साधना कभी भी कोई हलके मे लेने की वस्तु नही हैं,वरन बहुत ही गंभीर विषय है.इस क्षेत्र की रहस्यमयता और गहनता अपने आप मे एक अलग ही विषय हैं.हमारा पूरा प्रयास रहा हैं की तन्त्र कौमुदी का हर अंक विगत मे आये अंको से अपने आप मे श्रेष्ठ हो और आपके लिए न केवल उपयोगी जानकारी युक्त हो बल्कि ऐसी साधनाओ से युक्त हो जिनको आप आसानी से सम्पन्न कर भी सकें.और जिनमे लगने वाले उपकरण लगभग न केबराबर हो.जिससे आपके ऊपर कोई अनावश्यक आर्थिक बोझ ना आये.इस हेतु हम इस महीने से आप सभी के लिए भगवती नील तारा मेधा साधना और सौन्दर्य लुतिका साधना की साधना सामग्री निशुल्क उपलब्ध करा रहे हैं.किसी आर्थिक लाभ की अपेक्षा हमारे ह्रदय में यही भावना हैं कि आप में से सभी सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान की महत्वता को समझे और न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात कर उस ज्ञान के एक प्रत्यक्ष प्रमाण भी सम्पूर्ण विश्व के सामने बने.

पुरुष और प्रकृति तो सारे विश्व का आधार हैं,इसे दूसरे तरह से कहा जाए की शिव और शक्ति से ही सारा ज्ञान, सारा संसार, सारी सृजनात्मकता का उद्भव हुआ हैं.इस अंक मे हमने प्रकृति, जो शक्ति का ही दूसरा नाम हैं उससे सबंधित अनेको अति दुर्लभ साधनाए हमने आपके लिए संजोयी है जो बहुत ही कठिनता से प्राप्त हुयी हैं ,अब आप पर यह हैं की आप केवल इन साधनाओ की प्रशंसा नही बल्कि इन्हें सही अर्थो मे आत्मसात करें तभी हमारे श्रम का मूल्य होता हैं.साधनाए लिख देने से नही बल्कि उन्हें करने से ही कुछ अर्थ सार्थक होता हैं.हम यह पूरी कोशिश कर रहे हैं की एक ऐसे वातावरण का निर्माण हो जहाँ हम साधनाओ को कर भी सकें और उचित मार्ग दर्शन के लिए आपको इंतज़ार न करना पड़े बल्कि वह आपको उसी समय उपलब्ध भी हो .मित्रो हमारे हर प्रयासों को, जो हमने इस कार्य के प्रारंभ मे किये. आलोचकों के साथ, अनेको के मन मे भी यह रहा की कैसे सम्भव होगा यह सब.पर आज आलोचक भी मानने लगे हैं की हम जो कहते हैं वह हम करते भी हैं और कोई भी गुप्त अजेंडा या छल कपट हमारे कार्यों का हिस्सा नही हैं, जो हैं वह सबके सामने हैं.आज " निखिल कल्प कुटीर " के निमित्त जो बृहद भूमि खण्ड लिया गया हैं. उसपर हम सभी ने भूमि पूजन समारोह आयोजित किया .

आप सभी इस बात का स्वयम गवाह हैं की सारा कार्य कितने सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ और इस कार्यक्रम मे नारी शक्तियों द्वारा सारा पूजन का भार और उनके कुशल निर्देशन और गरिमायुक्त मे होना, इस बात का गवाह हैं की सदगुरुदेव ने ज्ञान देने मे कोई भी भेदभाव नही रखा और हमारे परिवार मे जो भी नारी शक्ति हैं,

वह अपने आप मे पूर्ण सक्षम हैं.वह केबल शक्ति शब्द से सबोधित ही नही बल्कि उस तत्व को अपने आप मे पूर्णता से आत्मसात कर आज सामने भी आ रही हैं .और यह तो हम सभी के लिए गौरव की बात हैं .

इस अंक मे हमने “रत्न शक्ति तंत्र” से भी आपका परिचय कराने का प्रयास किया हैं क्योंकि रत्न वह अद्भुत शक्ति प्रदाता हैं,जो मानव को उसके द्वारा विगत के किये गए अशुभ कार्यों के परिणामों को कम करके या अति न्यून करने मे समक्ष हैं तो वहीँ दूसरी ओर शुभता को कई कई गुणा बढ़ा सकने मे समर्थ भी और इस अंक मे इस से सबंधित, जो तथ्य हमने आपके सामने रखे हैं. आप उनका अध्ययन करें निश्चय ही यह अंक अपने आपमें आप सभी के लिए एक श्रेष्ठता और साधानात्मक उच्चता लिए हुये हैं .हमारा प्रयास रहता हैं की हम जिस भी विषय को अपने महाविशेषांको का विषय बनाते हैं उस विषय को पूर्णता के साथ आपके सामने स्पस्ट कर सकें,जब इसी श्रंखला मे इन्ही महाविशेषांको के अगले भागों का प्रकाशन होगा,तब और भी उच्च कोटि की साधना सामग्री आपके सामने आएगी ही.इन सबके पीछे बस इतना ही अर्थ हैं की हम सभी साधनारत हो कर उन सभी उच्च स्थितियों को आत्मसात करें जो सदगुरुदेव जी के एक आत्मांश को पाना ही चाहिये और यह सिर्फ और सिर्फ दृढ और विनीत भाव के साथ स्थिर मानस वाले साधक साधिकाओ से ही संभव हैं जिनमे अपने उच्च चरित्र और नैतिक आधार के साथ भारतीय संस्कृति के गुण पूर्णता से हो .

और हमेशा की तरह यही कहूँगा की भाई अनुराग सिंह गौतम निखिल और भाई रघुनाथ निखिल के सहयोग से ही यह अंक इस रूप मे आपके सामने आ सका हैं, मैं यहाँ पर अपने **समस्त NPRU परिवार** की ओर से आप सभी भाई बहिनों का सहयोग जो हमें पल प्रतिपल प्राप्त हो रहा हैं,और सेमिनारो की श्रंखला के लगातार गतिशील होने से आप सभी से सीधे मिलना और आपके विचार जानने और आपके स्नेह को महसुस करना, सदैव से हम सभी के लिए प्रेरणादाई रहता हैं,जो हमें और भी श्रम करने केलिए शक्ति प्रदान करता हैं.आप सभी के अविचल और मधुर स्नेह की सदैव कामना के साथ

"**निखिल प्रणाम** "

सदैव से आपका ही भाई

आरिफ खान निखिल
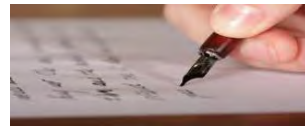
SADGURUDEV - PRASANG
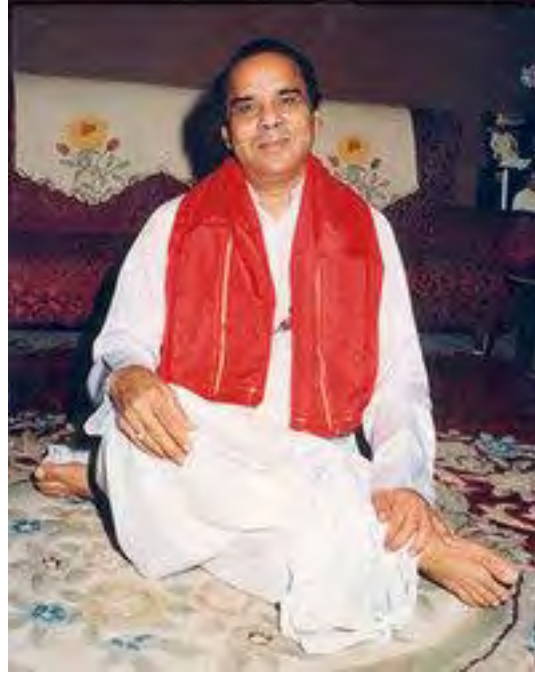
सिद्धि दर्शन

उन दिनों हम काशी मे ही निवास करते थे. नित्य दशाश्वमेध घाट जाते,गंगा स्नान करते और बाकी का सारा समय गुरुदेव के साथ साधना सिद्धियों मे ही व्यतीत करते.

एक दिन मेरे गुरू भाई प्रियंकू बाबा ने पूंछा "क्या सिद्धियों का चमत्कार उचित हैं "?

स्वामी जी ने उत्तर दिया " जो साधनाए सीख रहे हैं या जो सिद्धियों मे प्रविष्ठ हो रहे हैं,उन्हें भूलकर भी चमत्कार मे नही पड़ना चाहिए.इससे उनकी शक्ति क्षीण हो जाती हैं और साधना की तरफ उनका ध्यान नही रह जाता हैं, साथ ही साथ साधना क्षेत्र की एक मर्यादा हैं और इस मर्यादा का पालन प्रत्येक साधक,योगी या सन्यासी को करना ही चाहिये"

" जो साधना क्षेत्र मे हैं और अभी तक गुरुवत नही बन् सकें हैं,उन्हें लोगों के उकसाने पर भी चमत्कार या सिद्धियों का प्रदर्शन नही करना चाहिए .बहुत ही शान्त,सरल एवं सामान्य अवस्था मे ही उन्हें रहना चाहिए की पडौसी को भी उनकी सिद्धियों के बारे मे ज्ञान न हो सकें "

"पर जो सिद्ध हैं जिन्होंने सिद्धियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया हैं वे चाहे तो समय समय पर इसका प्रदर्शन कर सकते हैं,पर इस सिद्धियों के प्रदर्शन मे उनका व्यक्तिगत स्वार्थ नही होना चाहिए.अपना बड़प्पन,उच्चता या सिद्ध होने की प्रक्रिया के लालच मे ऐसा प्रदर्शन करना उचित नही हैं, हकीकत भी यह हैं की जो सही अर्थो मे सिद्ध हैं वह न तो क्षुद्र हो सकता हैं न स्वार्थी.उन्हें अहंकार भी व्याप्त नही हो सकता हैं.वे तो पर दुःख कातर होते हैं और दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए ही आवश्यकता पड़ने पर ऐसी सिद्धियों का प्रदर्शन कर लेते हैं."

"यदि सन्यासी किसी कारण वश गृहस्थ जीवन मे जाता हैं और इस सन्यासी ने जीवन मे सोद्ध्यों पर अधिकार प्राप्त किया हैं तब भी गृहस्थ जीवन मे जाने पर उसे सिद्धियों का प्रदर्शन भूल कर भी नही करना चाहिए . चाहे लोग उसे कितना ही अधिक उकसाए ,कुछ भी कहें, कभी कभी अपमान,लांछन या तिरस्कार भी सहन करना पड़ सकता हैं. सभी स्थितियों मे उसे संयत बने रहना चाहिए,और भूल कर भी चमत्कार प्रदर्शन नही करना चाहिए."

मैंने पूंछा " क्या गृहस्थ मे साधना सिद्धि प्रदर्शन अनुचित हैं ?"

उन्होंने उत्तर दिया " अनुचित तो नही हैं, पर ये गृहस्थ लोग या गृहस्थ शिष्य क्षीण बुद्धि होते हैं.उनकी भावना साधना की उच्चता या महत्ता नही होती,सीखने या प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की भावना नही होती,अपितु मूल मे स्वार्थ सिद्धि या चमत्कार दर्शन ही होता हैं.यदि कोई गृहस्थ शिष्य चमत्कार दिखने की बात करें तो समझ लेना चाहिए की यह क्षीण बुद्धि हैं और शिष्य बनने के योग्य नही हैं."

मैंने पूंछा " शिष्य कैसे बनना चाहिए ?"

उन्होंने कहा " शिष्य बनने की प्रक्रिया नही हैं ,यह तो स्वत: गुरू के प्रति अनुरक्ति हैं. पिछले जीवन मे भी जिस गुरू से वह दीक्षा लिये हुये हैं इस जीवन मे भी उसी गुरू से वह अनुरक्त रहता हैं. हो सकता हैं की भ्रम वश किसी दूसरे सन्यासी या पाखंडी के पास चला जाए,हो सकता हैं कुछ समय के लिए भ्रमित हो जाए, परन्तु ऐसा होने पर भी उसके मन को शांति नही मिल पाती हैं. ऐसे गुरुदेव से भी दीक्षा लेने पर भी उसके चित्त मे चंचलता बराबर बनी रहती हैं. मन मे उद्विनगता और तनाव विद्यमान रहता हैं "

' पर जब वह उसी गुरू के पास पहुँच जाता हैं जो जन्म जन्म से उसका गुरू होता हैं तो उसे देखकर सहसा ऐसा अनुभव होता हैं की इनका मेरा कई कई वर्षों का सम्बन्ध हैं, यद्दपि उन्हें पहली बार देख रहा हूँ परन्तु ऐसा लगता हैं की इससे पूर्व मे भी इन्हें देखा हैं. उनके पास बैठने से शांति मिलती हैं,मन मे संतोष होता हैं, और ह्रदय मे तृप्ति का अनुभव होता हैं.

और जब ऐसा अनुभव हो, जहाँ बैठने से शांति मिलती हो, जिनसे बात करने पर अपनत्व का बोध होता हो,जहाँ चित्त की चंचलता समाप्त होती हो, उसी गुरू से दीक्षा या पुनः दीक्षा ले कर उनके बताए पथ पर आगे बढ़ना चाहिए ."

मैंने पूंछा "फिर शिष्य क्या करें?"

उन्होंने उत्तर दिया " शिष्य को कुछ भी करना नही होता हैं. जो कुछ करना होता हैं, वह गुरू करता हैं . शिष्य का तो केबल एक ही धर्म, एक ही कर्तव्य, और एक ही चिंतन होता हैं कि वह गुरू आज्ञा का पालन करे उसमे किसी भी प्रकार की हील हुज्जत न करें. किई भी प्रकार का तर्क –वितर्क, सन्देह-असदेंह उत्पन्न होने पर समझ जाना चाहिए की वह शिष्य बनने के काबिल नही हैं.शिष्य का तात्पर्य यह हैं की वह गुरू के निकट जाए और उनके ह्रदय के सन्निकट पहुचे और इतना आधिक निकट पहुचे कि वह अपने अस्तित्व का विसर्जन कर दे,उसे अपना होश ही न रहे. पूर्ण रूपेण समर्पित चिंतन ही शिष्य कहलाता हैं ."

यदि गुरू शिष्य को छत पर खड़ा कर दें और नीचे दहकता हुआ अग्नि कुंड हो और गुरू शिष्य को नीचे छलांग लगाने को कहे तो उस शिष्य को एक क्षण का भी विचार नही करना चाहिए ,बिना सोचे बिना विचार करीब उस दहकते हुये अग्नि कुंड मे कूद जाना ही शिष्यता हैं "

"पर ऐसी आज्ञा गुरू देगा ही क्यों "

स्वामी जी ने उत्तर दिया यह गुरू का कार्य हैं उस क्या आज्ञा देनी हैं और क्या आज्ञा नही देनी हैं. गुरू का कोई भी आदेश अकारण नही होता हैं.उसके पीछे कोई न कोई उसका चिंतन अवश्य होता हैं .और वह चिंतन शिष्य के हित मे होता मे होता हैं .गुरू का एक मात्र उदेश्य पूर्ण रूप से शिष्य को सभी दृष्टियों से योग्य और संपन्न बनाना हैं और इसके लिए वह बराबर प्रयत्न करता हैं .

" जिस प्रकार सुनार बार बार सोने को अग्नि मे डालता हैं, लाल सुर्ख करता हैं, और बाहर ला कर हथौड़े से पीटता हैं, ऐसा होने पर ही वह स्वर्ण देव मुकूट बनता हैं,देवताओं के सिर पर चढ़कर बैठता हैं.शिष्य को भी स्वर्ण वत होना चाहिए,गुरू उसे तपाये या हथौड़े से चोट करें उसे बिलकुल भी न नुकुर नही करना चाहिये,अपितु अपने लक्ष्य पर बराबर गतिशील बना रहे,ऐसा होने पर ही वह शिष्य आगे चलकर प्रसिद्ध योगी बन् जाता हैं.

उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुये बताया ,"पूर्ण सिद्धियाँ और सिद्धिता पाने के लिए यह जरूरी नही हैं कि संन्यास ही ले, श्री कृष्ण पूर्णतः गृहस्थ थे मगर फिर भी योगीराज कहलाये.गृहस्थ मे रहकर भी जो असम्प्रक्त रहता हैं जो सही अर्थो मे ही अपने गुरू को अपना इष्ट,सखा,मित्र,माता,पिता,भाई,बहिन,इश्वर और सब कुछ मान लेता हैं,वह सही अर्थो मे योगी होता हैं,कपडे बदलने या भभूत लगाने से ही सब कुछ नही हो जाता हैं.

बात का समापन करते हुये गुरुदेव ने कहा "ऐसा ही शिष्य गुरू के चित्त पर अंकित होता हैं,और गुरू का सारा ज्ञान और सिद्धियाँ स्वत ही उसे प्राप्त हो जाती हैं जिससे वह सही अर्थो मे सिद्ध बनकर पूरे विश्व का कल्याण करने मे समर्थ बन् जाता हैं . मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं से साभार

==

Siddhi Darshan

Those days, we resided in Kaashi (Varanasi).Daily we used to go to Dashaashvmegh bank, take bath in Ganga and rest of time was spent with Gurudev in sadhna accomplishments.

One day my Guru Brother Priyanku Baba asked "Is it right to show miracle of siddhis (spiritual accomplishments) "?

Swami Ji answered “Those who are learning sadhnas or those who are entering into siddhis, even by mistake they should not show it off. By doing so, their power becomes feeble and they could not concentrate on sadhnas. Along with it sadhna field has got its own decorum and this decorum should be followed by every sadhak, yogi or ascetic”

“Those who are in sadhna field and have not yet become Guru; they should not show miracles or exhibit siddhis even when they are instigated by people. They should remain in very peaceful, sober and simple manner so that even his neighbour is not aware of his siddhis”

“ But those who are siddhs, who have established control over siddhis , they from time to time can exhibit them but that exhibition should not be done for selfish ends. Showing the siddhis just to show your supremacy, greatness is not right. Reality is also that those who are siddh in real sense, they can neither be contemptible nor selfish. Even ego cannot come into their head. They show their siddhis only at the time of need in order to remove miseries of others.”

“If any ascetic lives a life of householder for any reason and this ascetic has attained control over accomplishments, then also upon living householder’s life, he should not exhibit siddhis even by mistake. He may be instigated by so many people, people may say anything, he may have to sometime bear insult, blames etc. He should remain calm and patient in all circumstances and should not show miracles even by mistake”

I asked “Is it wrong to show off sadhna accomplishments in household life”

He answered that “It is not wrong but these householders or household disciples are feeble-minded. They do not want to understand the importance and supremacy of sadhna, they do not have feeling to learn or secure win over nature rather they want to meet their selfish ends and are interested in seeing miracles .

If any householder disciple says about seeing miracles then it has to be understood that he is feeble-minded and is not capable of being a disciple."

I asked "How one should become disciple?"

He said "There is no procedure of becoming disciple; it is automatic passion towards Guru. In past life, The Guru from which one has taken Diksha (initiation); in this life too he will be passionate towards that Guru. It may happen that due to delusion, he can go to some other ascetic or fraud and is misled for some time but in such case he does not attain peace. After attaining initiation from such Gurudev, his mind is still anxious and stressed"

'But when he goes to the Guru, who has been his Guru in his previous births then seeing him he feels that his relation with me is of many years. Maybe I am seeing him for first time but it seems that I have seen him earlier. Sitting near him gives me peace, a sense of satisfaction.

And when someone feels such a thing, sitting where gives you peace, talking to whogives feeling that he belongs to me, where volatility of mind evaporates,and then he should take initiation from that Guru and move forward on path told by him"

I asked "Then what disciple should do?"

He answered "Disciple does not have to do anything. Whatever has to be done has to be done by Guru. There is only one duty, one task and one thinking of disciple that he should follow Guru Orders, he should not make any type of argument. In case there is arguments, state of doubt then it should be understood that he is not capable of becoming disciple. Disciple is the one who goes closer to Guru, near to his heart and so much near that he completely surrenders himself. Attitude of complete dedication is called disciple"

If guru takes disciple to terrace and there is fire vessel downside and Guru orders disciple to jump in it then disciple should not think even for one second, without thinking, jumping in that fire vessel is duty of disciple"

"But why will Guru give such orders"

Swami Ji answered that it is the work of Guru to decide which orders are to given and which are not to be given. Any order of guru is not without any reason. There is some thinking or the other behind it. And that thinking is in better interest of disciple. Only aim of Guru is to make disciple capable and complete in all respects and for this, he continuously put in efforts.

"As goldsmith put gold into fire again and again, make it red-hot and take it out and hit it with hammer, when it happens that gold becomes crown of Devs. Disciple should also be like gold, how much he is hammered by Guru, he should never hesitate rather he should continuously move towards his aim. When it happens, that disciple in future becomes famous Yogi.He made his point clear and said "It is not necessary that in order to attain accomplishments one should become ascetic. Shri Krishna was completely householder but still he went on to be called king of yogis. The one who even leading a householder life remains free of illusion , who truly considers his Guru to be his Isht , friend , mother ,father .brother , sister , god and everything , he truly is a Yogi , just change of clothes and applying ashes is not everything. Gurudev ended his talks and said "Such disciple writes his name on heart of Guru and all knowledge and accomplishments of Guru is attained by him by which he becomes siddh in real sense and becomes capable to do welfare of entire world**.**

From mantra tantra yantra vigyan

सौभाग्य प्रदायक सरल गणेश साधना

SHRI GANPATI PRAYOG

भगवान गणपति के वरदायक स्वरुप से सम्बंधित एक सरल साधना

गण का एक अर्थ मानव इन्द्रियाँ भी होता हैं, और जो इन इन्द्रियों के भी स्वामी हैं उनको कैसे कोई साधक कम करके आंक सकता हैं ,क्योंकि बिना इन्द्रियों के मानव देह का कोई अर्थ नही हैं और इन्द्रियाँ हैं पर उनपर कोई भी नियंत्रण नही तब भी कम से कम बात तो यही हैं.अतः जिन्हें भी साधना मार्ग पर आगे चलना हैं, उन्हें इस बात का भान होना चाहिए की भगवान गणेश का एक अपना ही स्वरुप हैं.

भले ही उनके भोलेपन और प्रसन्तायुक्त स्वरुप से हम सभी का कहीं जायदा परिचय रहा हो पर इस बात से भी इनकार नही की वे ही सर्व प्रथम पूज्यदेव हैं और सर्वमान्य देव भी .इसलिए हर साधना से पूर्व उनका स्मरण, पूजन, मंत्र जप एक अनिवार्यत: स्थित हैं अन्यथा किसी भी प्रकार का विघ्न सामने आ सकता हैं .

यह भी साधना का एक भाग हैं की भगवान गणेश का आशीर्वाद लेना आवश्यक हैं क्योंकि सिर्फ सर्व पूज्य और प्रथम पूज्य होने मात्र से नही बल्कि वे समस्त देव वर्ग का मानो एक सामूहिक स्वरुप भी हैं और उनके पूजन मात्र से सभी देव शक्तियों का पूजन हो जाता हैं. जैसे सदगुरुदेव पूजन से समस्त शुभ शक्तियों का पूजन तो हर साधक को अपने दैनिक पूजन मे इस साधना को "गणेश साधना" का एक आधार तो होना ही चहिये ,अगर किसी भी कार्य मे अनावश्यक विघ्न आ रहे हो तो निश्चय ही भगवान गणेश की उपासना, उसमे बहुत लाभकारी या हितकारी होगी ही .हमने अनेको प्रयोग ब्लॉग और तंत्र कौमुदी के माध्यम से आप सभी के सामने रखने का प्रयास किये हैं उन प्रयोग की महत्वता को समझना ही चाहिए तभी रहस्य सूत्रों का कोई अर्थ हैं.

ॐ श्रीं एकदंताय गणेशाय विजयाय श्रीं ॐ नमः ||

प्रस्तुत मंत्र विधान को अपने दैनिक जीवन मे अपनाए और कम से कम एक माला मंत्र जप तो प्रतिदिन करें और अनुभव करें की भगवान गणेश का वरद हस्त सदैव से आपके ऊपर हैं और वह हर परिस्थितियों मे आपके विघ्न को दूर करेंगे ही जब तक हमारा संकल्प शुभता की ओर होगा .

===

GANESH SADHNA

One meaning of "Gan" (as in Ganpati) is also human senses. Then how can we consider sadhna of master of these senses lesser because without senses, human body has got no meaning and besides this, if senses are present but they are not under our control then also same thing applies. Therefore, those who want to move forward on sadhna path, they should be well aware that Lord Ganesh has got its own form.

May be till now we have been more familiar with his innocent and pleasant form but there is no doubt in the fact that among gods he is the first one to be worshipped and also he is recognised by all. Therefore, before any sadhna, remembering him, his poojan, mantra Jap is one essential condition otherwise any type of hurdle can come in front of us.

This is one of the important points in sadhna to take blessings of Lord Ganesh because not only he is worshipped by all and that too at first place but he is combined form of entire Dev category and poojan of him is poojan of entire Dev Shaktis. It is same as the case that when we worship Sadgurudev, worship of entire auspicious power is done. Therefore, sadhak should make "Ganesh Sadhna" as one of the basis of daily worship. If unnecessary hurdles are coming in any work then definitely worship of Lord Ganpati will be much more beneficial. We have given so many prayogs through blog and Tantra Kaumadi. We should understand the importance of these prayogs. Only then, these secrets will be meaningful.

Om shreem ekdantaay ganeshaay vijyaay shreem om namah

Follow the mantra procedure presented here in your daily life and at least chant one round of it daily and feel that blessings of Lord Ganesh is always with us and in every circumstances he will get rid of your hurdles provided your resolution is auspicious.

Why we need prakriti tantra sadhana ? .

एक परिचय ...

सारा विश्व शिव और शक्ति के संयोग का ही एक स्वरुप हैं,और प्रकृति का मतलब शक्ति ही तो हैं एक आधार,जिस पर सारा विश्व टिका हैं,शक्ति के बिना शिव भी असहाय हैं ये बात तो सभी ने पढ़ी होगी पर यह भी सत्य हैं की शक्ति को भी शिव का आधार चहिये ही अन्यथा कैसे संभव हो सकता हैं सृष्टि के तीनो नियम सृजन,पालन और संहार और नित नूतनता, यह तो एक बात का प्रतीक हैं की शिव और शक्ति दोनों का संयुग्मन ही सारे तंत्र और सारी प्रगति और जो भी दृश्य या अदृश्य मे घटित हो रहा हैं, उन सभी का प्रतीक हैं,इस बात को तो सभी मानते हैं बस वहां शब्दों का रूप बदल जाता हैं पर अर्थ वही रहता हैं.

जीवन मे भी यही कहीं न कहीं पक्ष हैं ही, बहुत ही सूक्षमता से देखने पर यही अनुभव मे आता हैं जो घटना सारे विश्व मे अबाध रूप से घटित हो रही हैं वहीँ कहीं न कहीं हर मानव के अंतर मन मे भी तो .

सारा तंत्र, शिव और शक्ति के आपसी वार्तालाप पर ही तो आधारित हैं और किसी भी तंत्र के मूल ग्रन्थ मे उसके प्रारंभ मे लगभग यही अवस्था रहती हैं ही,इसलिए किसी भी तंत्र मे शक्ति को उपेक्षित किया ही नही जा सकता हैं.क्योंकि तंत्र का अर्थ हैं स्वयम के जीवन का शक्तियुक्त विस्तार, जो जीवन अभी तक मानो बिना रीढ़ की हड्डी का रहा हो उसे अब एक स्थिरता देना .इसलिए शक्ति की उपासना आदि काल से मानव के जीवन का एक आवश्यक अंग रही हैं.और जो भी व्यक्ति स्वयं अपने जीवन का अनुसंधान या खोज करना या उसे अपना सही स्वरुप जानना हो उसे तो इस रास्ते पर जाना ही होगा यही एक मात्र उपाय हैं. जिसको समझना ही होगा, उसी एक मात्र आद्य शक्ति के मुख्तय: १० बिभाग किये गए जिन्हें हम १० महाविद्या के रूप मे भी जानते हैं.और यह वर्गीकरण अनेक रूप मे हुआ, कहीं गुण प्रधानता रही तो कहीं सौम्यता तो कहीं कोई अन्य आधार पर सभी के मूल मे एक वही आद्याशक्ति पराम्बा ही हैं .

अगर मानव को अपने जीवन को एक अर्थ देना हैं और उसे श्रेष्ठता की उचाई छूना हैं तो उसे शक्ति या प्रकृति तत्व को आत्म सात करने के लिए आगे बढ़ना ही होगा, यह अनेक मार्ग से हो सकता हैं पर साधना मार्ग मे तंत्र साधना इसका एक सरल और सहज उपाय हैं जिसे आज इस आपाधापी वाले युग मे एक वरदान ही कहा जा सकता हैं .पर तंत्र अगर जल्दी असर देने वाला हैं तो उसमे सावधानी की भी आवश्यकता हैं यह बात समझने की भी की अगर से क्रिया का परिणाम अगर चाहना हैं तो उसे उन सारी क्रियाओं के गुप्त और रहस्य मय सूत्रों को भी समझना होगा और साथ ही साथ इस मार्ग पर जो सबसे बड़ा आश्रय हैं वह हैं सदगुरुदेव ..तो उनके श्री चरणों मे समर्पित होना भी ..यह जीवन का एक उच्च लक्ष्य कहा जा सकता हैं .

शक्ति तत्व की साधना दो प्रकार से संभव हैं एक तो दक्षिण मार्गी और दूसरा वाम मार्गी. यह समझने की बात हैं की वाम मार्ग कहने मात्र से उसे घृणा की दृष्टी से नही देखा जाना चाहिये क्योंकि इस शब्द के गहन अर्थ हैं.और इस पूरे ब्रम्हांड मे कोई भी वस्तु निरर्थक नही हैं बस काल और परिस्थिति के अनुसार हर व्यक्ति के लिए साधना क्रम अलग अलग हो सकता हैं.यह भी एक समझने वाला तथ्य हैं की साधना वही भी शक्ति तत्व की न केबल व्यक्ति मे एक प्रसन्नता और आहलाद की सृष्टि करती हैं वहीँ दूसरी ओर जीवन और आध्यात्म के एक से एक नवीन तथ्य उसके सामने साकार भी करती हैं.

इन अर्थो मे आज शक्ति साधना और शक्ति साधक का नितांत आवश्यकता हैं क्योंकि जब व्यक्ति बल युक्त होगा तभी समाज भी ऐसा ही होगा और व्यर्थ की न्युनताये भी नही होगी .क्योंकि जितना ज्यादा व्यक्ति असुरक्षित होगा जितना ज्यादा शक्ति हीन होगा वह उतनी ही ज्यादा समस्याए भी.और शास्त्रों मे तो स्पस्ट कहा गया हैं कि शक्ति युक्तता ही पुण्य हैं और शक्ति हीनता ही पाप.इस बात का अर्थ हैं .

हमारे प्राचीन आचार्य और संस्कृति इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं की सभी शक्ति उपासक रहे हैं और वह समाज अपने आप मे उन्नति दायक और सर्व दृष्टी से समपन्न भी रहा हैं .बस कुछ काल विशेष मे यह धारा मंद सी हो गई और इसका बहुत ही भयानक असर हमारे जीवन पर पड़ा पूरा देश मानो पंगु सा हो गया, और अब दूसरे के आसरे होने लगा ,अपना स्वरूप भूल सा गया और पाश्चात संकृति के अच्छे गुण तो नही बल्कि दुर्गुण जरुर अपनाने लगा कुछ शिक्षा व्यवस्था का भी दोष रहा .इन सब का परिणाम साधना क्षेत्र की ओर उपेक्षा ..और यह कोई भी समझ नही पा रहा था की यह कैसे हो गया .इस विपरीत काल मे सदगुरुदेव जी के अनथक अतिमानवीय श्रम का ही यह परिणाम हुआ की आज साधना पक्ष के प्रति एक नया रुझान, एक नयी सोच और एक पूरी नयी पीढ़ी का इस ओर आना सिर्फ उन्ही की ही मेहनत का ही परिणाम हैं जिसे भले ही कुछ अति बुद्धिवादी महत्त्व दे या न दें,यह जरुर हैं की सदगुरुदेव के पवित्र नाम पर अपना उल्लू सीधा करने वालों की तो आज भीड़ हैं सामने .

साधारणतः प्रकृति का मतलब आपका आचरण व्यवहार होता हैं क्योंकि कहा भी जाता हैं न, की मुझे उसकी प्रकृति ठीक नही लगती या वह बुरी प्रकृति का जीव हैं.इस तरह एक अर्थ यह भी होता हैं जिसे शिवलिंग के आधार को भी प्रकृति कहा जाता हैं और एक अर्थ मे तो जो भी दृश्य जगत हैं उसकी आधार भी .और जब बात तंत्र की आये तो सभी का मिश्रण स्वरुप हैं प्रकृति तंत्र

एक साधक मे यह गुण होना चहिये की वह पहले तो निष्ठा पूर्वक साधनारत रहे और मन मे प्रकृति से विजय पाने की भावना और जिस पथ पर आगे जा कर वह प्रक्रति का सहचर बन जाता हैं .पर पहले तो इस पर विजय पाने की भावना होना ही चाहिये,बिभिन्न साधना मार्ग से व्यक्ति इसी मार्ग पर आगे बढ़ना ही चाहता हैं .और प्रस्तुत अंक इसी बात का ही तो परिचायक हैं इसी भावना को ध्यान मे रखकर यह अंक बहुत ही उपयोगी साधनाए आप सभी के लिए हुये हैं ..

WHY THERE IS NEED OF PRAKRITI TANTRA?

Entire world is culmination of combination of Shiva and Shakti. Prakriti (nature) means Shakti only. Shakti forms base on which entire world rests. Without Shakti, even Shiva is helpless. This fact would have been read by all of you but it is also true that Shakti also needs base of Shiva otherwise how it can be possible. All three rules of universe creation, maintenance and destruction and its ever-newness are indicative of the fact that combination of Shiva and Shakti represents all Tantra, whole progress and all the things which are happening in visible and invisible world. This fact is recognised by all. Just the words change, essence is the same. After looking very subtly, it is felt that the incident which is happening in entire world unknowingly is also happening in inner mind of every person.

Entire Tantra is based on mutual conversation between Shiva and Shakti and this fact is quite evident in starting of any basic scripture of Tantra. Therefore, in any Tantra, Shakti cannot be ignored. Tantra means powerful (Shakti Yukt) expansion of one's own life, providing stability to the life which was earlier without backbone. Therefore, worship of Shakti has been essential element of human life from ancient times. The person who wants to do research on his own life or discover it or wants to know about one's own real form then he has to move forward on this path. This is the only solution. That sole Aadya Shakti was primarily divided into 10 parts which we know as Ten Mahavidyas also. And this categorization happened in many ways, somewhere based on qualities, somewhere based on politeness, somewhere on any other basis but root of all is only that Aadya Shakti Paramba.

If human being wants to give meaning to his life and reach supreme heights then he has to move ahead to imbibe Shakti or Prakriti element.

It can happen through different paths but in sadhna path, Tantra sadhna is simple and easy way which can be called boon in today's busy era. But it Tantra is capable of producing quick results, precaution is also needed while practising it. If one wants to attain results from procedure then he/she has to understand hidden and secretive facts related to that procedure. To add to that, the biggest reliance on this Path is of Sadgurudev….so surrendering ourselves in his lotus feet…..can be called supreme aim of this life.

Sadhna of Shakti element is possible in two ways, firstly by Dakshin Maarg (Right Hand Path) and secondly by Vaam Maarg (Left Hand Path). Here one thing needs to be understood that Vaam Maarg should not be seen in hateful manner because this word has got deep meaning. And in this Universe, nothing is meaningless, just that sadhna procedure of each person can be different depending upon time and circumstances. One more fact worth understanding is that Sadhna and that too of Shakti element not only makes person joyful and happy, it also materializes novel facts of life and spirituality in front of him.

In this sense, there is extreme need of Shakti Sadhna and Shakti sadhak today because when person will be strong, then society will also be like this and there will be no useless deformities. Because more the person is insecure, more the person is devoid of strength, more will be the problems confronting him. And it has been said clearly in Shastra that being strong is virtuous and being powerless is evil.

Our ancient Acharya and culture are clear evidence of this fact that all were worshipper of Shakti and that society was progress and complete in all respects. Just at particular point in history, these things gradually started vanishing which had disastrous repercussions on our life.

it seemed that nation became handicapped and started depending on others , forgot his real form and started adopting bad qualities of western culture , educational system was also at fault. Results of all this deformity was ignoring sadhna….and nobody was able to understand why it happened. In these adverse times, Sadgurudev's super-human work resulted into new interest, new attitude towards sadhna aspect. Today one complete new generation has started moving towards it and this all is result of hard-work put by Sadgurudev which may or may not be given importance by few highly-educated people. It is also true that crowd of people has come forward who wants to meet their selfish end using divine name of Sadgurudev.

Generally nature means your conduct and behaviour. It is also said that I do not like his nature or that person has bad nature. In the similar manner, base of Shivling is also called Prakriti. And in one sense, base of visible world is also Prakriti. And when we talk about Tantra, then mixed form of all of these is Prakriti Tantra.

One sadhak should possess quality that he should do sadhna with dedication and with the feeling to win over nature and later on he become companion of nature. But in starting, he should have feeling to win nature. Person takes help of various sadhna paths to achieve this thing. And edition presented here is indicator of the same fact. Keeping this sentiment in mind, this edition has got lot of useful sadhnas for you all…..

विद्याकालिका साधना

VIDYA KALIKA SADHANA ?
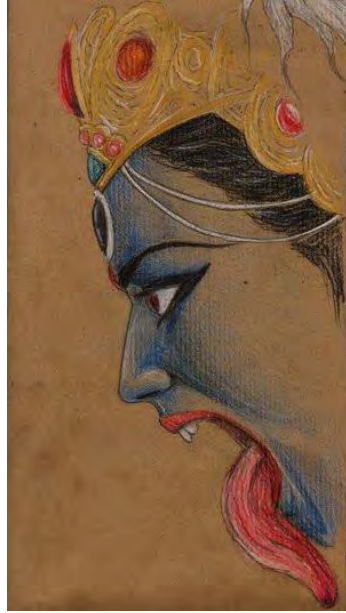
परम दुर्लभ एक अद्वितीय साधना

महाकालिका महाविद्यां कलौपूर्णफलप्रदा

ब्रह्माण्ड की श्रेष्ठतम विद्या और अधिष्ठात्री दस शक्तियां जो की दस महाविद्या के नाम से साधको के मध्य प्रचलित है. सभी स्वरुप अपने आप में विलक्षण तथा साधक को ब्रह्माण्ड के सभी सुख भोग की प्राप्ति कराने में समर्थ है .

लेकिन सभी महाविद्याओ की अपनी अपनी अलग ही महत्ता है जिसको आदि काल से ही निर्विवादित स्वीकार किया जाता है. लेकिन महाकाली का स्वरुप तो सभी साधको के ह्रदय में हमेशा उपास्य रहता ही है. तथा इनके भी कई मुख्य रूप और कई विशेष रूप साधना जगत में विख्यात रहे है. चाहे वह दक्षिण मार्ग हो या कापालिक साधना हो, श्मशान या औघड साधना या फिर त्रिक या कॉल मत भी हो, देवी की साधना उपासना सभी मार्ग में सभी साधको के द्वारा कई कई स्वरुप में कई कई पद्धतियों से आदि काल से होई आई है. महाकाली भले ही संहार क्रम की शक्ति मानी जाती हो लेकिन निश्चय ही वह तीनों क्रम में बराबर गतिशील रहती है. आदि शिव के महाकाल स्वरुप की यह शक्ति हमेशा कल्याणकारी तथा रक्षात्मक स्वभाव के कारण जनमानस में पूज्य रही है. उच्च से उच्चतम सिद्धो और साधको ने एक मत में यह स्वीकार किया है की भगवती महाकाली की साधना और उपासना करने पर साधक कई कई प्रकार से सिद्धियों की प्राप्ति कर अपने जीवन के भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों में पूर्ण सफलता की प्राप्ति कर सकता है. महाकाली एक ऐसी महाविद्या है जिनके बारे में यह कहा जाता है की वह कलयुग में शीघ्र फल प्रदान करने वाली है. निश्चय ही देवी के सबंध में यह तथ्य एक निर्विवादित सत्य है जिसका अनुभव कई कई साधको ने इस युग में किया है. पुरातन तंत्र ग्रंथो में कहा है की भगवती की साधना करना किसी भी साधक के लिए सौभग्य उदय की ही संज्ञा है.

भगवती से सबंधित कई स्वरुप साधको के मध्य प्रचलित है ही लेकिन भगवती का विद्याकाली या विद्याकालिका स्वरुप अत्यधिक गुढ़ तथा विलक्षण माना जाता है. क्योंकी यह स्वरुप विद्याओ से अर्थात गुढ़ ज्ञान से सबंधित स्वरुप है, जिसको सिद्ध करने पर साधक को कई गुढ़ ज्ञान की प्राप्ति होती है. परन्तु, देवी के इस स्वरुप से सबंधित साधना क्रम अत्यधिक तीव्र तथा विलक्षण है, जिसे सहज ही संपन्न करना असंभव है. तथा आज के युग में गृहस्थ साधको के लिए यह क्रम कई द्रष्टि से असहज है. लेकिन इस रहस्यमय स्वरुप से सबंधित कुछ सौम्य लघु प्रयोग भी है. जिसको कोई भी साधक बड़ी सहजता से संपन्न कर सकता है. इसी क्रम में देवी विद्याकालिका से सबंधित यह प्रयोग प्रस्तुत है. इस प्रयोग को संपन्न करने के बाद साधक को ज्ञान सबंधित कई लाभों की प्राप्ति होती है. साधक को कोई भी विषय को समझने में सहजता का अनुभव होने लगता है, साधक की स्मरणशक्ति का विकास होता है, विशेष रूप से साधक को गुढ़ ज्ञान तथा सांकेतिक ज्ञान का अर्थ समझने में भी विशेष सुभीता का अहसास होता है. विद्यार्थी वर्ग के लिए भी यह साधना प्रयोग वरदान स्वरुप है, क्यों की विद्या से सबंधित होने के कारण साधको को अभ्यास में भी प्रगति इस साधना के माध्यम से प्राप्त हो सकती है.

यह प्रयोग साधक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को संपन्न करे. समय रात्रि में १० बजे के बाद का रहे. साधक रात्रि में स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे. इसके बाद साधक लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाये.

इसके बाद साधक अपने सामने भगवती महाकाली का कोई चेतन विग्रह या यंत्र या चित्र को स्थापित करे. साधक गुरु पूजन, गणपति पूजन तथा महाकाली पूजन को संपन्न करे. साधक को गुरुमन्त्र का जप करे. इसके बाद साधक न्यास की प्रक्रिया करे.

करन्यास

क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्रीं तर्जनीभ्यां नमः

क्रूं मध्यमाभ्यां नमः

क्रैं अनामिकाभ्यां नमः

क्रौं कनिष्टकाभ्यां नमः

क्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अङ्गन्यास

क्रां हृदयाय नमः

क्रीं शिरसे स्वाहा

क्रूं शिखायै वषट्

क्रैं कवचाय हूम

क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

क्रः अस्त्राय फट्

न्यास करने के बाद साधक महाकाली का ध्यान कर निम्न मन्त्र की ११ माला मन्त्र जप करे. यह मन्त्र जप शक्तिमाला, मूंगामाला या रुद्राक्षमाला से किया जा सकता है.

मन्त्र - ॐ आं आं क्रों क्रों क्रीं क्रीं कालि कालिके हूं हूं फट स्वाहा

(OM AAM AAM KROM KROM KREEM KREEM KAALI KAALIKE HOOM HOOM PHAT SWAAHAA)

मन्त्रजप पूर्ण होने पर साधक योनी मुद्रा से देवी को जप समर्पित कर श्रद्धा से वंदन करे. साधक को यह क्रम ३ दिन तक रखना चाहिए. माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक इसको भविष्य में भी उपयोग में ला सकता है.

===

VIDYAKAALIKA SADHNA

MAHAKAALIKA MAHAVIDYAAM KALAUPORNPHALPRADA

Ten Shaktis, known by the name of Das Mahavidya among sadhaks is best Vidya and ruler of universe. All its forms are special in them and are capable of providing every type of happiness and pleasure to sadhak. But every Mahavidya has got its own significance which has been indisputably agreed upon from ancient ages. But the form of Mahakaali has always been worshipped in hearts of every sadhak. Its many prime forms and some special forms have been famous among sadhna world. May be it is Dakshin Maarg (right hand path of Tantra) or Kapaalik sadhna, shamshaan or Augarh sadhna or Trik or Kaula path , sadhna/upasana of Devi has been done in all paths by every sadhak in many of its forms in many padhatis from ancient ages. May be Mahakaali has been considered to be the Shakti of destruction procedure but she is operational in all three basic procedure of universe (Construction, Maintenance and destruction).

This Shakti of Mahakaal from of Aadi Shiv has always been worshipped among common public due to her nature to do welfare and provide security. Highest-level Siddhs and sadhaks have accepted unanimously that sadhak can attain various types of accomplishments by doing sadhna/upasana of Bhagwati Mahakaali and attain complete success in both materialistic and spiritual aspects of life. Mahakaali is one such Mahavidya about which it is said that she provides quick results in Kalyuga. Certainly, it is indisputable truth related to Devi which has been witnessed by many sadhaks in this era. Ancient Tantra scriptures say that doing sadhna of Bhagwati is equivalent to rise in good-luck of any sadhak.

There are many forms related to Bhagwati known among sadhaks but Vidyakaali or Vidyakaalika form of Bhagwati is considered to be very abstruse and special since this form is form related to Vidya i.e. abstruse knowledge, accomplishing which sadhak attains many types of abstruse knowledge. But sadhna procedure related to this form of goddess is very intense and exceptional, which cannot be easily carried out. And in today's era, this procedure is uncomfortable in many respects for householders. But there are Saumya (peaceful) Laghu (Small) prayog related to this secretive form which can be very easily done by sadhak. In this context, prayog related to Devi Vidyakaalika is presented here. After doing this prayog, sadhak attains many knowledge-related benefits. Sadhak feels easiness to comprehend any subject, there is development in memory-power of sadhak, and especially sadhak feels comfortable in understanding meaning of abstruse knowledge and indicative knowledge. This prayogs is boon for student category because sadhak can attain progress in their practice since it is related to Vidya.

Sadhak should do this prayog on eighth day of Krishn paksha of any month. It should be done after 10:00 P.M in the night. Sadhaks should take bath and wear red dress. After it, sadhak should sit on red aasan facing North direction.

Thereafter sadhak should establish any energized idol/yantra/picture if Bhagwati Mahakaali in front of him. Sadhak should do Guru Poojan, Ganpati Poojan and Mahakaali poojan. Sadhak should chant Guru Mantra and then do the Nyaas procedure.

KAR NYAAS

KRAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

KREEM TARJANIBHYAAM NAMAH

KROOM MADHYMABHYAAM NAMAH

KRAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH

KRAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH

KRAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

ANG NYAAS

KRAAM HRIDYAAY NAMAH

KREEM SHIRSE SWAHA

KROOM SHIKHAYAI VASHAT

KRAIM KAVACHHAAY HUM

KRAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT

KRAH ASTRAAY PHAT

After doing Nyaas, sadhak should do the dhayan (meditation) and chant 11 rounds of below mantra. This can be done by Shakti rosary, Moonga rosary or Rudraksh rosary.

Mantra - OM AAM AAM KROM KROM KREEM KREEM KAALI KAALIKE HOOM HOOM PHAT SWAAHAA (ॐ आं आं क्रों क्रों क्रीं क्रीं कालि कालिके हूं हूं फट स्वाहा)

After completion of Mantra Jap, sadhak should dedicate mantra Jap to Dev by showing Yoni Mudra and pray to her with reverence. Sadhak should do this procedure for 3 days. Rosary should not be immersed. Sadhak can use this rosary in future.

वसन्त सुन्दरी साधना

VASANT SUNDARI SADHANA PRAYOG
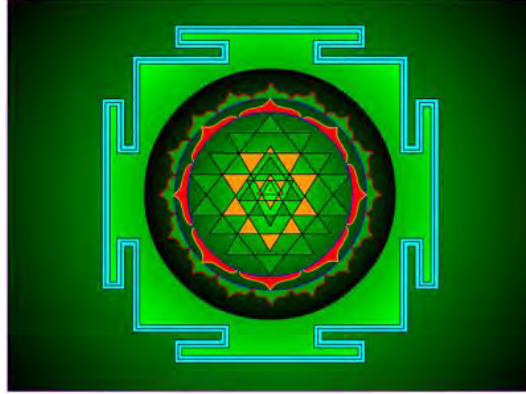
भगवती त्रिपुर सुंदरी साधना का एक अद्भुत प्रयोग

वसंत, एक ऐसा शब्द जिसको सुनते ही मनुष्य एक मधुर परिकल्पना को अपने सामने साकार करने लगता है. समय का एक ऐसा भाग, जो की व्यक्ति को चारों तरफ से सौंदर्य और माधुर्य बरसाने के लिए आतुर हो जाता है. पुष्प जुमने लगते है, पैड जेसे मौन अंगडाई से उठ कर कुछ कहने के लिए बेताब हो जाते है, नदियों की कल कल कुछ और शांत, स्थिर सा गीत गुनगुनाती है, प्रकृति का यह एक ऐसा भाग है जिसमे सिर्फ मधुरता ही मधुरता बिखरी हुई है. इसी लिए एक विशेष काल खंड या ऋतू को भी वसंत का नाम दिया गया है, क्यों की उस समय प्रकृति अपने पूर्ण सौंदर्य को मनुष्य के लाभार्थ प्रदान करने के लिए उद्वत रहती है. हाँ, यह बात अलग है की मनुष्य क्या और कितना प्राप्त करता है या कितना कर सकता है, हो सकता है इस वसंत का या दूसरे शब्दों में प्रकृति की मुग्धता का वरण कर वह हर एक क्षण का आनंद उठाये या ये भी हो सकता है वह उपेक्षित कर दे और अपने जीवन में वसंत को स्थान ही न दे पाए, लेकिन प्रकृति का इसमें कोई दोष नहीं है.

मनुष्य के ऊपर यह आधार रखता है की वह प्रकृति तंत्र से क्या तथा कितना प्राप्त कर पता है. यह चर्चा करने का उद्देश्य वसंत का स्पष्ट अर्थ निर्देशित करना था. वसंत कोई ऋतू मात्र नहीं यह प्रकृति का एक वरदान है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की न्यूनता का दूर कर सही अर्थो में माधुर्य की प्राप्ति कर सके तथा अपने जीवन का सौंदर्य औरभी निखार सके. और जब बात सौंदर्य माधुर्य की हो तो भगवती त्रिपुरसुंदरी के विविध स्वरुप की चर्चा कैसे न हो? तीनों लोक में सर्वश्रेष्ठ सौंदर्य को धारण करने वाली, भगवती त्रिपुरा के विविध स्वरुप से सभी साधक प्रायः परिचित ही है. लेकिन भगवती का एक ऐसा स्वरुप भी है जो की जनमानस में सुपरिचित नहीं है लेकिन सिर्फ साधको के मध्य यह रूप प्रचलित रहा है. भगवती का यही रूप वसंत सुंदरी के नाम से जाना जाता है. यह स्वरुप और इसकी साधना पद्धति का विधान अत्यधिक गुढ़ तथा रहस्यमय रहा है. गुरुमुखी प्रणाली से भगवती से इस रूप से सबंधित कुछ प्रयोग प्रचलन में रहे है. प्रस्तुत प्रयोग उसी कड़ी में से एक प्रयोग है जो की सिद्धो के मध्य प्रचलन में रहा है. ब्रह्मांडीय यन्त्र अर्थात विशुद्ध पारद से निर्मित पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित श्रीयंत्र पर यह प्रयोग को संपन्न किया जाता है क्यों की भगवती त्रिपुरसुंदरी से सबंधित कोई भी प्रयोग में यह यंत्र का अपना ही महत्त्व है जो की तंत्र साधको को ज्ञात है ही. फिर भी, कोई कारणवश यंत्र अगर उपलब्ध न हो पाए तो व्यक्ति कोई भी योग्य एवं प्राणप्रतिष्ठित श्रीयंत्र पर यह प्रयोग को संपन्न करे. यह प्रयोग के कई प्रकार के लाभ साधक को मिलते है.

साधक के आर्थिक अभाव का निराकरण होता है, जीवन में रुके हुये धन की प्राप्ति होती है. साधक को आजीविका के नए नए स्त्रोत्र की प्राप्ति होने लगती है. इसके अलावा, साधक के अगर कोई पारिवारिक संकट है तो साधक को उस संकटो से मुक्ति मिलती है, घर का क्लेश नाश होता है, तथा शान्ति का वातावरण स्थापित होता है. साधक को शत्रुओ से रक्षण प्राप्त होता है, इसके अलावा साधक की प्रतिष्ठा तथा ख्याति का विकास होता है इस प्रकार साधक धन, यश, ऐश्वर्य आदि सुख की प्राप्ति कर अपने जीवन को पूर्णता की और अग्रसर कर सकता है.

इस प्रयोग को साधक कोई भी दिन शुरू कर सकता है.

साधक रात्रिकाल में १० बजे के बाद स्नान आदि से निवृत हो कर लाल वस्त्रों को धारण करे तथा लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाये.

साधक अपने सामने बाजोट पर या किसी पात्र में लाल वस्त्र पर विशुद्ध पारदश्रीयंत्र या अनुपलब्धि में कोई भी पूर्ण चैतन्य श्रीयंत्र का स्थापन करे. गुरुपूजन, गणपतिपूजन के बाद श्रीयंत्र का पूजन भी करे. इसके बाद व्यक्ति गुरुमन्त्र का जप कर गुरुदेव से साधना सफलता के लिए आशीर्वाद ले. इसके बाद साधक न्यास क्रिया को करे.

करन्यास –

ॐ क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः

ॐ नीलसुभगे अनामिकाभ्यां नमः

ॐ हिलि हिलि कनिष्टकाभ्यां नमः

ॐ विच्चे स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास –

ॐ क्लीं हृदयाय नमः

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ ऐं शिखायै वषट्

ॐ नीलसुभगे कवचाय हूं

ॐ हिलि हिलि नैत्रत्रयाय वौषट्

ॐ विच्चे स्वाहा अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक यंत्र को भगवती का ही पूर्ण रूप मानते हुये निम्न मन्त्र की २१ माला जप करे. यह जप साधक शक्तिमाला या मूंगामाला से कर सकता है.

मन्त्र - क्लीं ह्रीं ऐं नीलसुभगे हिलि हिलि विच्चे स्वाहा

(KLEENG HREENG AENG NEELASUBHAGE HILI HILI VICCHE SWAAHAA)

मन्त्रजप पूर्ण होने पर साधक योनी मुद्रा से यह जप देवी को समर्पित कर दे. इस प्रकार साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. माला का विसर्जन साधक को नहीं करना है. तीन दिन में यह प्रयोग पूर्ण होता है तथा साधक अगर चाहे तो भविष्य में भी इस मन्त्र को साधना में उपयोग में लायी गई माला से कर सकता है.

===

VASANT SUNDARI SADHNA

Vasant (spring season) is one such word listening to which person starts manifesting his sweet imagination in front of him. It is that time of year when there is beauty and sweetness spread all around , flowers starts flourishing , there is greenery all around , flowing river make such a pleasing noise . It is that portion of nature where only melody is spread all around. Therefore, this particular timeframe or season has been called Vasant because at that time nature is restless to provide complete beauty for welfare of humans. Though it is different thing altogether that what and how much person attain or how much he can. It is possible that he can enjoy each and every moment of this spring by feeling the beauty of nature or there is also a chance that he ignores it and could not give place to spring in his life. But Nature is not at fault if he does it like so. It all depends upon person that what and how much he attains from Prakriti (Nature) Tantra. Here purpose of discussion was to give clear and precise meaning of spring. Spring is not merely a season rather it is boon of nature through which person can get rid of shortcomings of life and make his life melodious in true sense and amplify the beauty of his life.

And when we are taking about sweetness and beauty than how is it possible that there is no discussion of various forms of Bhagwati Tripur Sundari? All sadhaks are aware of diverse forms of Bhagwati Tripura, most beautiful in all three loks. But there is one form of Bhagwati which is not very well known among common public but it has been known to sadhaks. This form of Bhagwati is known by the name of Vasant Sundari .This form and its sadhna padhati procedure has remained very abstruse and secretive. Some prayogs related to this form of Bhagwati are in vogue through Guru Tradition. Prayog presented here is one prayog in that series which has been known among siddhs. This prayog is carried out on universal Yantra i.e. completely energized Shri Yantra made form purest Parad since every Tantra sadhak knows that this yantra is very important whenever we talk about any prayog related to Bhagwati Tripur Sundari. But still, due to any reason if this Yantra is not available then person should do this prayog on any competent and energized Shri Yantra. This prayog provides many type of benefits to sadhak.Sadhaks gets rid of financial problems; there is attainment of money which was struck up due to some reason or other. New avenues of livelihood open for sadhak. Besides it, sadhak gets rid of family problems, if any, household quarrels are destroyed and peaceful environment is created. Sadhak is secured from his enemies. There is increase in fame and respect of sadhak. In this manner, sadhak attains money, fame, prosperity etc. and moves forward on the path towards completeness.

Sadhak can start this prayog on any day.

Sadhak should take bath after 10:00 P.M, wear red dress and sit on red aasan facing North direction.Sadhak should establish pure Parad Shri Yantra or in its absence any completely energized Shri Yantra on Baajot or on red cloth in any container in front of him. Sadhak should then do Guru Poojan, Ganpati Poojan and thereafter poojan of Shri Yantra. Thereafter, sadhak should chant Guru Mantra and pray to Sadgurudev for success in sadhna. Sadhak should then perform Nyaas procedure.

KAR NYAAS-

OM KLEENG ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

OM HREENG TARJANIBHYAAM NAMAH

OM AENG MADHYMABHYAAM NAMAH

OM NEELASUBHAGE ANAAMIKAABHYAAM NAMAH

OM HILI HILI KANISHTKABHYAAM NAMAH

OM VICCHE SWAAHAA KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAAS–

OM KLEENG HRIDYAAY NAMAH

OM HREENG SHIRSE SWAHA

OM AENG SHIKHAYAI VASHAT

OM NEELASUBHAGE KAVACHHAAY HUM

OM HILI HILI NAITRTRYAAY VAUSHAT

OM VICCHE SWAAHAA ASTRAAY PHAT

After it, sadhak should chant 21 rounds of below mantra considering Yantra as complete form of Bhagwati. Sadhak can use Shakti rosary or Moonga rosary for chanting.

Mantra- KLEENG HREENG AENG NEELASUBHAGE HILI HILI VICCHE SWAAHAA (क्लीं ह्रीं ऐं नीलसुभगे हिलि हिलि विच्चे स्वाहा)

After completion of Mantra Jap, sadhak should dedicate this Jap to goddess by showing Yoni Mudra. Sadhak should do this procedure for 3 days. Sadhak should not immerse this rosary. This prayog is completed in 3 days and if sadhak wants, he can chant this mantra in future using the same rosary.

ANAND SHIVA SADHANA PRAYOG

पूर्ण आनंद की प्राप्ति हेतु एक गोपनीय साधना विधान

साधना जगत में तांत्रिक साधनाओ का अपना एक विशेष ही स्थान है. हमारी संस्कृति में भले ही विविध प्रकार के साधना मार्ग का विकास हुआ लेकिन तांत्रिक साधना का स्थान सर्वोच्च रहा साथ ही साथ जनमानस के मध्य यह मार्ग विविध रहस्यों से परिपूर्ण कौतुहल का विषय भी रहा. समय समय पर कुछ विशेष महाऋषियो ने इस मार्ग का उद्धार किया तथा इस मार्ग का जो मूल तथ्य या मूल चिंतन है उस मूल तथ्य को जनमानस के मध्य रखा है तथा स्वार्थपरस्तो के हाथो जो भी क्षय इस मार्ग का हुआ है उसकी पूर्ति करने की कोशिश की गई. लेकिन इस क्रम में कई कई महासिद्धो ने अपने आप को समाज में अलग कर लिया इसके पीछे का चिंतन साफ़ है स्वार्थ परस्ता में ढोंग और पाखण्ड इतनी हद तक फ़ैल जाता है की सही चीजों को भी गलत नज़रिए से देखा जाने लगता है, तंत्र के साथ भी ऐसा ही हुआ और यही हुआ तान्त्रिको के साथ भी.

ऐसी परिस्थिति में उन्होंने अपने आप को समाज से अलग कर दूरस्थ निर्जन स्थानों में अपनी साधनाओ को करना ही उचित समझा . लेकिन मुख्य रूप से इसमें कई प्रकार से समाज का ही नुक्सान हुआ, लोक कल्याण की जगह ढोंग ने ले ली, आध्यात्म का विकृत स्वरुप ही प्रदर्शित किया जाने लगा. और धीरे धीरे नाना प्रकार की रहस्यों से परिपूर्ण तथा दुर्लभ साधनाएं पहले गुप्त और फिर लुप्त ही होने लगी. इस प्रकार समाज की उपेक्षा से कई कई प्रकार की साधनाएं लुप्त हो गई जिनमे विविध शक्ति साधना तथा प्रकृति तंत्र से सबंधित साधनाएं मुख्य रूप से है.

अपनी आतंरिक शक्तियों को बाह्य शक्तियों के साथ संयोग कर के जागृत करने तथा प्रकृति के रहस्यों को समझ कर उसके साहचर्य को पूर्ण रूप से प्राप्त करने की प्रक्रिया को ही तो तंत्र साधना कहते है. फिर भला कैसे संभव हो की इन साधनाओ में ऐसी साधनाएं न हो जो की अद्भुत और आश्चर्यजनक रूप से कोई भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर सके. मनुष्य जीवन में व्यक्ति सभी प्रकार के भोग की प्राप्ति के लिए अपने पुरे जीवन भर नाना प्रकार से परिश्रम करता है तथा अपने लक्ष्य की और आगे बढ़ने के लिए हमेशा उद्वत रहता है लेकिन यहाँ पर एक क्षण को रुक कर किसी भी व्यक्ति को यह सोचना नितांत आवश्यक है की क्या वह जो भी भोग को प्राप्त करेगा उसका सुख उसे मिल सकता है लेकिन आनंद की प्राप्ति क्या संभव है? क्यों की सुख तो व्यक्ति के शरीर की क्षणिक अनुभूति है, जैसे ही प्रक्रिया या भोग खत्म होता है तब सुख भी खत्म. लेकिन आनंद तो सुख से कई कई गुना ऊपर है, क्यों की यह स्थायी है. तथा इसका अनुभव आत्मिक होता है, शारीरिक नहीं.

उदहारण के लिए अगर अत्याधिक गर्मी के समय में पंखा चल रहा है तो वह सुख दे सकता है लेकिन नींद ही ना आये तो? और जेसे ही पंखा बंद हुआ वह सुख का जो शरीर को अनुभव हो रहा था वह भी खत्म हो जाता है. आनंद का जीवन में होना कितना और क्या महत्त्व रखता है यह सायद शब्दों की अभिव्यक्ति से बहुत ऊपर है. और जो आनंद का सिंचन अपने जीवन में कर लेता है वह फिर किसी भी परिस्थिति में विषम से विषम समस्या में भी आतंरिक रूप से शांत तथा निश्छल बना रहता है.

शैव मत में शिव की पञ्च शक्तियों का अत्यंत ही महत्त्व है. क्यों की श्रृष्टि के सभी रहस्य इन पञ्च शक्तियों के माध्यम से जाने जा सकते है तथा प्रकृति का पूर्ण आनंद इन पांच शक्तियों के माध्यम से लिया जा सकता है. यह पञ्च शक्ति क्रिया, ज्ञान, इच्छा, चित्त तथा आनंद है. भगवान आदि शिव के विविध स्वरुप है जिनको सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप से अवलोकित करने पर भी वे हमेशा रहस्यों से परिपूर्ण ही रहे है.

उनके साथ आदि प्रकृति भी इस लीला में शामिल होती है. तथा विविध स्वरुप के माध्यम से वे जनकल्याण के लिए सदैव ही कार्य करती रहती है. इसी लिए उनके कई स्वरुप को शिवा भी कहा गया है.

सूक्ष्म रूप से देखा जाए तो शिवा मूलतः शिव की ही विविध शक्तियां है जो की स्थूल रूप में स्त्री देवी या प्रकृति के रूप में द्रष्टिगोचर होती है. एसी ही एक अद्भुत शक्ति है आनंदशिवा. भगवान शिव की पञ्च शक्तियों में यह आनंद तत्व प्रधान शक्ति है. इनकी साधना गोपनीय तथा विलक्षण कही जाती है. क्यों की मूल रूप से यह आनंद की ही साधना है, और जिसने आनंद को ही प्राप्त कर लिया उसके लिए फिर सुख भोग ऐशवर्य आदि दुर्लभ नहीं है, वरन यह सब तो अनायास ही साधक को प्राप्त होते रहते है. इनकी साधना के बाद साधक का ह्रदय पक्ष भी विक्सित होता है परिणाम स्वरुप आने वाली घटनाओ तथा निकट भविष्य के बारे में भी उसको विविध संकेत प्राप्त होने लगते है. व्यक्ति पूर्ण रूप से अपने अंदर आनंद के गुणों को धारण करने लगता है तथा अपने ही अंदर डूबने लगता है, चित को निर्मलता का बोध होता है. न सिर्फ आध्यात्मिक रूप से लेकिन भौतिक रूप से भी यह एक उच्चतम स्थिति है. क्यों की व्यक्ति का सामाजिक मान सन्मान ऐश्वर्य तथा सभी सुख भोग की प्राप्ति भी एसी स्थिति में तो सहज हो जाती ही है, क्यों की जो शिव की पञ्च मुख्य शक्तियों की उपासना करे उसके लिए फिर क्या दुर्लभ रह जाता है.

साधक इस साधना को किसी भी सोमवार से शुरू करे

समय रात्रि में १० बजे के बाद का हो

यह साधना अगर साधक विशुद्ध पारद से निर्मित पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित पारदशिवलिंग पर करे तो साधक को कई प्रकार के विविध परिणामों की प्राप्ति हो सकती है, लेकिन अगर साधक के लिए यह संभव न हो तो साधक बिना पारदशिवलिंग के यह प्रयोग संपन्न करे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर सफ़ेद वस्त्र को धारण करे. तथा सफ़ेद आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए.

इसके बाद साधक अपने सामने पारदशिवलिंग को स्थापित करे. जिनके लिए यह संभव न हो वो कोई भी शिवलिंग को स्थापीत करे. साधक गुरुपूजन तथा गणपतिपूजन को संपन्न करे और शिवलिंग का भी पूजन करे. गुरु मन्त्र का जप करे.

पूजन के बाद साधक साधना क्रम को शुरू करे. सर्व प्रथम साधक न्यास क्रिया करे.

करन्यास

ॐ श्रीं ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ भगवतितर्जनीभ्यां नमः

ॐ सर्वानन्दमयिमध्यमाभ्यां नमः

ॐ शिवाअनामिकाभ्यां नमः

ॐ तस्यै वैकनिष्टकाभ्यांनमः

ॐनमो नमःकरतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ श्रीं ह्रीं हृदयाय नमः

ॐ भगवति शिरसे स्वाहा

ॐ सर्वानन्दमयि शिखायै वषट्

ॐ शिवा कवचाय हूं

ॐ तस्यै वै नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ नमो नमः अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास करने के बाद साधक मूल मंत्र का जप करे. यह जप साधक किसी भी रुद्राक्ष माला से करे. साधक को २१ माला मन्त्र का जप करना है.

मन्त्र –ॐ श्रीं ह्रीं भगवति सर्वानन्दमयिशिवातस्यै वै नमो नमः

(OM SHREENG HREENG BHAGAWATI SARVAANANDAMAYI SHIVAA TASYAI VAI NAMO NAMAH)

मंत्र जप पूर्ण होने पर साधक भगवती आनंदशिवा को प्रणाम करे. साधक यह क्रम ३ दिन तक करे. माला का विसर्जन नहीं करना है, साधक भविष्य में भी माला का प्रयोग कर सकता है.

===

ANAND SHIVAA SADHNA

In Sadhna world, the tantric sadhnas keeps special important place. In our culture, be it different types of sadhna paths are developed but the tantric sadhna has kept the prime importance. Along with that, this path contains a different type of curiosity and secrecy amongst the common people. Time to time some ancient saints had emancipated this path. Moreover, put forth the main zest of this path amongst the common people. In addition, whatever harm caused to these facts were tried to be consolidated. However, in this process many Mahasiddhas tried to become isolate. The intension was very clear behind this because now it has become that in this time manipulation and diplomacy has reached up to certain level where the right facts are also been portrayed in such a wrong manner and they became ruthless. The same happened with Tantra and with the Tantriks as well.In such circumstances; they made themselves so isolated in such remote areas where they can perform their sadhnas without any interruption. However, if we see, the main loss occurred to society only. Instead of public welfare dissemblance, side took place. A distorted form of spiritual side was reflecting more. Then gradually the secrecy regarding these sadhnas came first and consecutive by the time it was disappeared from normal eyes. By societal ignorance many such secret forms of sadhnas vanished which consists Shakti sadhna forms and the sadhnas related to nature tantra also.

Conjoining our internal and external powers and activating them as to get complete support from the nature known as Tantra sadhna. Then why someone would believe it does not contain such sadhna, which can change any body’s personality from root.

In human life a man does every type of hardship to get all kind of comforts in his life. Moreover, this is how he always head towards achievement of his goal. However, at this point one has to stop for a while, should give a thought whatever comforts he earns would give him that kind of pleasure but what about the happiness he is seeking for? Because happiness is a physical state, the physical comfort is endured that feeling gets end up by experiencing it. However, the real happiness lays very much high above all this. Moreover, it experiences soulful not on physical level.

For example, in hot summer if fan is switch on,its providing a pleasure but what if you don't feel sleepy? In addition, suddenly what if fan switched off and the pleasure, which was getting to our body, may get end up.So it is quite hard to calculate the importance of happiness in everyone's life. If anyone irrigates the happiness in his/her life, then in any situation he stays calm and quiet.

In Shaiv belief the five powers of shiva keeps prime importance. It is because all universal truth can be figure out via this medium. In addition, one can experience pleasure the complete happiness from the nature's secrets. These five powers – Kriya (activity), Gyan (knowledge), Ichha (wish), Chitt (conscious) and Anand (happiness). Lord Aadi Shiva's manifestation in many forms but every form keeps secret information in it. Moreover, along with him the Aadi Prakrati is equally involved in all such acts. Therefore, in various forms she also acts for public welfare. Moreover, this is how many forms of his are also known as Shivaa.If we see minutely, Shivaa originally is the power of Shiv only which in physical form represented in female or prakrati form. Here we are going to see one of his wonderful form ie.eAanadshiva. Well, amongst lord shiva's all five power she comes under one of the main important powers as described above. Her sadhna is said to be very secretful and eccentric. Basically, One who has achieved Anand (happiness) in his life then pleasure, comforts or luxuries hardly makes difference in his life. Rather its achieved by sadhak very casually.

After accomplishing her sadhna, the sadhak's heart side gets developed in such way as he ends up getting signals regarding immediate future. A person retains all types of happiness under him and starts sinking in his innerself, he realizes his innocence of his consciousness. Not only spiritually but also on materialistically he achieves a higher state in life.

Because only in this state only every type of heal, wealth comforts are easily achievable in this state. Ultimately one who does the Panchmukhya Shakti worship of Shiva cannot remain ignored in any front of life.

Sadhak can start this sadhna from any Monday.

Time after 10.00 pm (night)

If sadhaks attempts this sadhna on pure ParaadShivling then he may achieve many experiences. Nevertheless, if in case if it is not possible then he can carry on without paradshivling also.

After having bath, he should wear white clothes, be seated on white asana facing towards north direction.

Then he should establish paradshivlinginfront of him. One who cannot can use normal shivling. Sadhak should do Guru and Ganpati worshipping and then shivling worship also. Then he should do guru mantra Jaap.

After worshipping sadhak should starts Sadhna Kram. First Nyaas has to be done-

KARNYAAS

OM SHREENG HREENG ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

OM BHAGWATI TARJANIBHYAAM NAMAH

OM SARVAANANDAMAYI MADHYAMAABHYAAM NAMAH

OM SHIVAA ANAMIKAABHYAAM NAMAH

OM TASYAIVAI KANISHTHKAABHYAA MNAMAH

OM NAMO NAMAH KARTAL KARPRUSHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDAYNYAAS

OM SHREENG HREENG HRIDAYAAY NAMAH

OM BHAGWATI SHIRASE SWAAHAA

OM SARVAANANDAMAYI SHIKHAAYAI VASHAT

OM SHIVA KAVACHAAY HOOM

OM TASYAIVAI NETRATRAAY VOUSHAT

OM NAMO NAMAH ASTRAAY PHAT

This is how after doing all nyaasas sadhak should do 21 rosaries of the mantra. Any rudraaksh rosary can be use.

Mantra - OM SHREENG HREENG BHAGAWATI SARVAANANDAMAYI SHIVAA TASYAIVAI NAMO NAMAH (ॐ श्रीं ह्रीं भगवति सर्वानन्दमयिशिवातस्यै वै नमो नमः)

After completing mantra chanting sadhak should bow in front of aanandshivaa. Sadhak should follow this sequence for three consecutive days. Rosary need not be dispersed; if one wants, one can use the same rosary in next sadhnas.

ब्रह्म तारा साधना

BRAHAM TARA SADHANA

परम गोपनीय साधना

सर्वेसुहृदयेस्वस्मि संस्थितात्मस्वरुपिणी | यदिच्छामिक्षणादेव परतत्वे नयामितं ||

उपरोक्त श्लोक में भगवती तारा के सबंध में भले ही एक सामान्य श्लोक या उनकी प्रसन्नता के सन्दर्भ की पंक्ति मात्र लगे लेकिन यह एक अत्यंत ही नूतन तथ्य को प्रकट करती हुई पंक्ति है जो की भगवती तारा के एक विशेष स्वरुप के सबंध में है.

उपरोक्त पंक्ति का अर्थ है भगवती श्री तारा सभी के ह्रदयमें स्थित आत्मा स्वरुप है. तथा किसी को भी क्षणमात्र में परातत्व का ज्ञान देने में समर्थ है. भले ही यह सामान्य लगे लेकिन इसका अर्थ बहुत ही वृहद तथा विस्तृत है, और क्यों न हो.

भला भगवती तारा के सबंध में उच्चारित हुआ कोई भी शब्द सामान्य रह ही कैसे सकता है. अपने सदैव कल्याणमय रूप के कारण देवी हमेशा अपने साधको के मध्य अत्यंत श्रद्धेय तथा ह्रदय प्रिय रही है. तथा उच्च से उच्चतम तंत्राचार्यो ने भगवती तारा की साधना कर जीवन में श्रेष्ठतम ज्ञान की प्राप्ति की, चाहे वह भगवान वसिष्ठ, विश्वामित्र हो या स्वयं भगवान बुद्ध. वस्तुतः आदि काल में ब्रह्मज्ञान से सबंधित साधना क्रम में भगवती तारा की साधना का अतिविशेष स्थान हुआ करता है. लेकिन काल क्रम में वे सब साधनाएं गुप्त होती गई, फिर भी तिब्बत के कई तांत्रिक मठो में आज भी इन साधनाओ को गुप्त रूप से बौद्ध लामा अपने शिष्यों को संपन्न कराते है तथा आध्यात्म की उच्चतम स्थिति बोधिसत्व की प्राप्ति के लिए भगवती तारा से सबंधित क्रम को प्रदान करते है. बोधिसत्व ही आगम में ब्रह्मज्ञान है. अर्थात ब्रह्माण्ड के रहस्यों के बारे में जानना, समझना तथा आत्मसात करना. भगवती तारा के इसी स्वरुप को जो की ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्रदान करता है उसे ब्रह्म तारा कहा गया है. उपरोक्त पंक्तिया भी भगवती के ब्रह्मतारा स्वरुप का सांकेतिक वर्णन करता है. भगवती तारा ह्रदय में स्थित आत्म स्वरुप है का अर्थ कुछ इस प्रकार है की भगवती ह्रदय अर्थात अनाहतचक्र में आत्म स्वरुप अर्थात ज्योति स्वरुप में सभी व्यक्तियो में विराजमान है तथा देवी की उपासना करने वाले व्यक्ति को परतत्व या ब्रह्माण्ड के गुढ़ ज्ञान को प्रदान करती है. वस्तुतः साधक अपने जीवन में विविध प्रकार के रहस्य से परिचित होने के लिए ही साधना क्रम को अपनाता है. रहस्य का अर्थ यूँ भी समझा जा सकता है की किसी भी विषय से सबंधित अज्ञानता को दूर करना. भगवती ब्रह्मतारा भी प्रकृति का एक ऐसा स्वरुप है जो की साधक के ह्रदयचक्र या अनाहत का जागरण कर आत्म तत्व को चेतना देता है. फल स्वरुप साधक में विविध प्रकार के सकारात्मक भावो का विकास होता है.

आत्मविश्वास की कमी जिस भी साधक को हो उनको आत्मविश्वास की प्राप्ति होती है

साधक के क्रोध तथा अहंकार जैसे हीन भावो का क्षय होता है.

साधक का चित शांत तथा स्थिर होने लगता है.

साधक को ध्यान में सरलता तथा सहजता की प्राप्ति होती है.

साधक की सोच का विकास होता है तथा वह विविध रहस्यों के बारे में स्वयं ही जानने लगता है.

इस प्रकार इस सरल प्रयोग के माध्यम से साधक कई कई प्रकार की आवश्यक शक्तियों को सहज ही प्राप्त कर सकता है. और इसके साथ ही साथ इन सब से ऊपर साधक को भगवती का आशीर्वाद प्राप्त होता है जो की साधक के भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही मार्ग की समस्याओ को हटा कर सहज कर देता है. यूँ किसी भी साधक के लिए यह प्रयोग अत्यधिक आवश्यक प्रयोग है जिसे निश्चय ही संपन्न करना चाहिए.

साधक यह प्रयोग किसी भी रविवार से शुरू कर सकता है.

साधक रात्रि में १० बजे के बाद यह प्रयोग आरम्भ करे. स्नान आदि से निवृत हो कर साधक लाल वस्त्रों को धारण करे. तथा लाल आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए.

यह साधना मूल रूप से पारद सहस्त्रान्विता देह तारा के विग्रह के सामने संपन्न होती है. साधक अपने सामने देवी का पारद सहस्त्रान्विता विग्रह स्थापित करे, यह विग्रह की अनुपस्थिति में साधक देवी का सिद्ध यंत्र या चित्र स्थापित करे. साधक गुरुपूजन गणपति पूजन कर विग्रह का पूजन करे. गुरुमंत्र का जप करे. इसके बाद साधक देवी को वंदन कर न्यास प्रक्रिया करे.

करन्यास

ॐ हीं स्त्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ हीं स्त्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ हीं स्त्रीं माध्यमाभ्यां नमः

ॐ हीं स्त्रीं अनामिकाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं कनिष्टकाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रीं स्त्रीं हृदयाय नमः

ॐ ह्रीं स्त्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ ह्रीं स्त्रीं शिखायै वषट्

ॐ ह्रीं स्त्रीं कवचाय हूं

ॐ ह्रीं स्त्रीं नैत्रत्रयाय वौषट्

ॐ ह्रीं स्त्रीं अस्त्राय फट्

न्यास होने के बाद साधक को मूल मन्त्र का जप करना है. यह जप साधक मूंगामाला, शक्ति माला या तारामाल्य से कर सकता है. साधक को इस मन्त्र का २१ माला जप करना है.

मन्त्र - ॐ ह्रीं स्त्रीं ब्रह्म रूपिण्यै फट्

(OM HREEM STREEM BRAHM ROOPINYAI PHAT)

मन्त्रजप पूर्ण होने पर साधक योनी मुद्र से जप को देवी को समर्पित कर दे. इस प्रकार साधक यह क्रम कुल ३ दिन करे. तीन दिन करने पर यह साधना प्रयोग पूर्ण होता है. साधक को माला का विसर्जन नहीं करना है. यह माला का आगे भी मन्त्र जप के लिए उपयोग किया जा सकता है.

==

BRAHM TARA SADHNA

Sarvesuhridayeswasmi sansthitaatmaswaroopinee | yadicchhamikshanaadev paratatwe nayamitam ||

Above mentioned verse may seems like normal verse or may look like just appreciation of the goddess Tara but those lines describe complete new fact in relation to specific form of the Goddess Tara.

The meaning of the above lines is Goddess Tara is situated in the heart in the form of the soul. And can give anyone knowledge of the universe in a moment. Though, it may look very normal but the exact meaning is very descriptive and why it shouldn't. May it possible to have normal meaning of the lines said in praise to the goddess tara? No. because of her felicitous form, Goddess has remained always reverend and beloved. And higher scholars of the tantra like Vasistha, Vishwamitra and Lord Buddha too acquired knowledge by performing sadhana of Goddess Tara. Actually, in ancient time, sadhana of the Goddess Tara used to have very important place for the universal knowledge or BrahmaJnana. But time while, all such process became secret, though, in many tantric monastery of Tibet, Bauddh Lamas let their disciples perform such sadhanas today even and provides step procedures related to goddess Tara to attain highest level of the spiritualism 'BodhiSatva'. BodhiSatva is same BrahmaJnana of the Agam. This means to know about the universal secrets, to understand it and to realize it. The form of goddess Tara, providing knowledge of the universe is called Brahm Tara. The above mentioned lines were also allusively describing the same form. Goddess is situated in the heart in the form of soul that means, Goddess is situated in the heart of the every person, here, and heart means Anahat Chakra; in the form of the soul means in the form of the light and provides secret knowledge to those, who worship her. Actually, sadhaka approaches to the particular sadhana process just to have knowledge about the secrets. Secret here means, to remove the unawareness towards the subject. Goddess BrahmTara is form of the Prakriti i.e. nature which gives sadhaka consciousness to the soul by activating anahat chakra. This results in increments of the various positive feelings in the sadhaka.

Those who lack the confidence, such sadhaka receive self confidence.

Inferior feelings like anger and ego is reduce.

Chit or in other words mind of the sadhaka becomes stable.

Sadhaka receives comforts in the practice of the meditation

Thinking process of the sadhaka increases and one by self starts becoming aware of the many secret

This way, with medium of the easy process, sadhaka could receive many essential powers. And above all, sadhaka receives blessings of the goddess which can remove obstacles of both material and spiritual life. This way, for any sadhaka, this process is essential, which have to be attended.

Sadhaka can start this process from any Sunday.

Sadhak should start it after 10 in the night. After having bath, sadhak should wear red cloths and should sit facing north direction.

This sadhana is basically completed in front of Paarad Sastraanvita Idol. Sadhak should establish this idol in front and if this idol is not available one may establish activated yantra or picture of the goddess. Sadhak should do guru poojan, ganapati poojan and poojan of the idol. Guru mantra chanting should also be done. After that, sadhaka should bow to the goddess and do process of the Nyasa.

KAR NYAAS

OM HREEM STREEM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

OM HREEM STREEM TARJANIBHYAAM NAMAH

OM HREEM STREEM MADHYMABHYAAM NAMAH

OM HREEM STREEM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH

OM HREEM STREEM KANISHTKABHYAAM NAMAH

OM HREEM STREEM KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

ANG NYAAS

OM HREEM STREEM HRIDYAAY NAMAH

OM HREEM STREEM SHIRSE SWAHA

OM HREEM STREEM SHIKHAYAI VASHAT

OM HREEM STREEM KAVACHHAAY HUM

OM HREEM STREEM NAITRTRYAAY VAUSHAT

OM HREEM STREEM ASTRAAY PHAT

After this process, sadhak should start chanting of the main mantra. this mantra chanting could be done with coral rosary, Shakti rosary or Tara rosary. Sadhak should chant 21 rounds of the following mantra.

MANTRA - OM HREEM STREEM BRAHM ROOPINYAI PHAT (ॐ ह्रीं स्त्रीं ब्रह्म रूपिण्यै फट्)

When mantra chanting is completed, sadhaka should offer mantra chanting to the goddess performing Yoni Mudra. This way, sadhaka should do process for three days. By doing it three days, this process is completed. Sadhak should not immerse the rosary. This rosary could be used in future for mantra chanting.

ASTROLOGICAL YOGAS..?

जब भी कोई नया नया ज्योतिष सीखने वाला या इस शास्त्र मे रूचि लेने वाला व्यक्ति इन योगों को पढता हैं तो स्वाभाविक हैं कि वह अनेको योगों को खासकर शुभ योगों को तो अपने कुंडली मे लगाकर देखना चाहता हैं ही और इसके परिणाम पढकर एक प्रकार की खुशी से भर जाता हैं कि कुछ ऐसा हैं इसमे,वहीँ जब यह बात स्वयम की कुंडली मे व्याप्त कुछ अशुभ योगों पर आयें तो निराशा का आ जाना एक स्वाभाविक सी प्रक्रिया हैं या एक डर की कहीं सच मे ऐसा न हो जाए,अनेको व्यक्तित्वो का यह शौक सा रहा हैं कि रोज उठते ही वह अपने राशिफल को पढते हैं और उसके हिसाब से अपने दिन भर को आंकने का प्रयत्न करते हैं.अब यह कितना सही हैं या कितना गलत, अभी इस बात पर विचार नही करते हैं बल्कि यह देखते हैं कि क्यों कुछ पर सारे परिणाम सही से लगते हैं और क्यों कुछ पर एक भी परिणाम सही निकल नही पाते है.

जहाँ एक ओर जन्म लग्न की शुद्धता हैं पर कितने हैं जो यह कर पाते हैं या उन्हें कोई योग्य ज्योतिषी मिले जो यह सही गुणा भाग करने मे सक्षम हो वहीँ दूसरी ओर यह भी सत्य हैं कि हर शास्त्र की एक सीमा हैं,और उस सीमा के आगे उस व्यक्ति को कोई न कोइ अन्य आसरा लेना ही चाहिए, तभी उसके फल कथन मे सत्यता का अंश जायदा होगा.पर जब बात हैं कि क्या सारे ज्योतिष योग के परिणाम जो उस व्यक्ति कि कुंडली मे आ रहे हैं, उस व्यक्ति को मिलेंगे ही,यह निश्चित नही हैं सामान्यतः ज्योतिष कुछशुभ शुभ योग बता देता हैं और कुछ हैं जो कुछ और धन राशि अर्जित की आशा मे कुछ भयभीत करने वाले भयंकर योग आपकी कुंडली मे हैं, यह कह कर अपनी जेब गर्म कर लेंगे.सत्यता को दोनों तरफ से छुपाया जाता हैं,कुछ गलती हमारी भी हैं कि हम किसी भी ज्योतिष के श्रम को इतना सस्ता समझते हैं कि उसे उसके श्रम का पारिश्रमिक भी देने मे आनाकानी करते हैं, नतीजा आप समझ सकते हैं .

यहाँ एक बात अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि सिर्फ किसी योग शुभ या अशुभ के होने मात्र से उसके परिणाम आपको मिल ही जाए यह संभव नही हैं.खासकर कुछ साधनात्मक योगों के बारे मे तो यह निश्चितता हैं कि शायद उनके परिणाम कभी भी न मिले क्योंकि सबसे पहले तो यह देखना हैं कि क्या उस व्यक्ति मे इस ओर जाने की कोई लालसा या कोई गुण हैं या नही. फिर बात आती हैं की क्या उसमे जीवन काल मे ऐसी संभावनाए हैं कि इस प्रकार एक योग घटित हो ही जाए ,यहाँ पर मैं उस व्यक्ति कि आयु और स्थिति का भी आकलन करके कुछ कहा जाए उसकी बात रख रहा हूँ ..

ज्योतिष का एक वर्ग हैं जो कोई भी घटना के होने पर किसी न किसी तरह से उस घटना को कोई न कोई ज्योतिष योग से जोड़ कर अपनी वाहवाही कर ही लेता हैं, अपने ज्ञान की..... तो एक वर्ग हैं जो लगतार अनुसन्धान मे लगा रहा हैं उसका ध्यान इस बात पर रहता हैं कि क्यों और कब.न कि कोई किसी तरह का हो हल्ला ..हमेशा किसी भी योग के फलित होने का समय देखना चाहिये और की क्या वह समय उस व्यक्ति के जीवन काल मे आ रहा हैं? यहाँ मतलब सबंधीय दशा या महादशा उसके जीवन काल मे हैं या नही अगर नही हैं तो अन्य ग्रहों की दशाओ मे अंतर दशा देखें जहाँ पर उसके परिणाम मिलने की आशा हो ,साथ ही साथ यह भी ध्यान रखे कि क्या ऐसा हो पायेगा .कारण यह हैं कि आप किसी के विवाह की आयु ३५की अवस्था मे ज्योतिषीय गुणा भाग करके निकाल दो पर उसकी कुल आयु मात्र २७ /२८ वर्ष ही हो तो कैसे फलित हो पायेगा? यह योग यह भी तो सोचने कि बात हैं .

वहीँ एक बात यह भी हैं कि भूलकर भी किसी के चरित्र का आकलन आसानी से न करें क्योंकि इतने नियम और उपनियम हैं कि उच्चस्तरीय ज्योतिष भी गलती कर सकता हैं और इस गलती का व्यर्थ ही परिणाम अच्छा नही होगा .उदाहरण के लिए कुछ शुभ गृह किसी व्यक्ति के अष्टम भाव मे हैं और ज्योतिष योग मे से एक योग इस तरह का भी हैं जो असुर योग कहलाता हैं जिसके अनुसार व्यक्ति तानाशाह जैसा होगा आचरण भी वैसा ही ही होगा . या इसे ऐसे देखें की किसी के कुंडली मे व्यभिचार वाले योग हैं तो सामान्यतः उसके बारे मे कोई अच्छी राय समाज मे नही होगी,यह तो सामन्य सी बात हैं पर इतना आसन नही हैं ज्योतिष .यहाँ यह ध्यान से देखना होगा कि क्या उस व्यक्ति का दशवा भाव शुभता लिए हुये हैं या अशुभता .अगर श्रेष्ठ दशम् भाव हैं तो उस व्यक्ति की कुंडली मे भले ही ऐसे भयंकर योग हो वह कार्य रूप मे परिणित नही करेगा .क्योंकि दशम भाव तो कार्य का भाव हैं ,और किसी के चरित्र आंकने मे भी यही भाव को भू ध्यान मे रखें .

कई कई बार कोई व्यक्ति अत्याधिक चरित्रहीन व्यक्ति होता हैं पर किसी को उसका पता तक ही नही क्योंकि अपयश वाली बात या योग या अवस्था उसकी कुंडली मे होती ही नही हैं.उनके निकटस्थ व्यक्ति तक तो यह पता नही होता हैं कि ये व्यक्ति ऐसा हैं .

ठीक इसी तरह भले ही किसी कि कुंडली मे कितनी भी उच्चता दिख रही हो पर लग्न भाव की श्रेष्ठता बहुत इसको आधार देती हैं वहीँ मानसिक रूप से इस स्थिति को प्राप्त करने मे क्या वह सक्षम हैं?.यह भी तो सोचने विचारने वाली बातें अन्यथा भले ही वह उच्च अवस्था उसे मिल जाये पर रहेगी कितने देर .

हर ज्योतिष योग के फलित होने की कसौटी उसके फलित होने मे हैं .यहाँ केबल समय ही निर्धारण कर सकता हैं कि आप कहाँऔर किस स्तर पर खड़े हैं ,सिर्फ किसी घटना का विश्लेषण करने मात्र से आप भले ही ज्योतिष हो जाए पर सार्थकता आने वाले समय को पढ़ने मे हैं और दूर भविष्य नही बल्कि पास पास की घटनाओं को आकने मे हैं यहाँ प्रश्न सही होने या गलत होने का नही हैं बल्कि इसमें एक सच्चे अनुसंधानकर्ता होने मे हैं औरजो भी गलतियां फल कथन मे हो रही हैं उन्हें गलती स्वीकार करना या सही होने पर एक नया सूत्र पाने या समझने की अपनी ही एक खुशी भी तो हैं .अतः देखा जाए तो सबसे पहले जब कोई गंभीर प्रश्न सामने आ रहा हो तो उस व्यक्ति की आयु देखी जाए और यह भी देखा जाए की सबंधित योग जो शुभ कारक हैं या अशुभकारक हैं .

क्या वे जीवन भर असर देने वाले वर्ग के हैं या किसी विशेष समय तक ही उनका अर्थ हैं अगर विशेष समय तक ही उनका अर्थ हैं तो क्या वह समय,इस व्यक्ति के जीवन काल मे सही समय पर आ रहा हैं या नही.उदाहरण एक लिए एक छोटे से बच्चे की आयु के १ साल से लेकर ४ साल तक कि आयु मे उसके परम धनी या परम गरीब होने की भविष्य वाणी करने का क्या अर्थ.

किसी की विवाह आयु मात्र ३ साल की आयु मे निकाल देने का क्या अर्थ (कभी यह संभव रहा होगा पर परिणाम तो हमें आज देना हैं और आज की सामाजिक अवस्था मे क्या यह संभव हैं?)

किसी बालक के संतान योग या उसके सरकारी जॉब होनी कि उस आयु मे होने का क्या अर्थ हैं.

किसी भी भविष्य फल के देने के साथ,व्यक्ति की आयु ,उसकी मानसिक शारीरिक और आर्थिक स्थिति को भी समझ कर परिणाम देना कहीं ज्यादा श्रेयस्कर होगा.

अब यह हर बार उम्मीद की जाना की हम जिस भी ज्योतिष के पास जाये पहले वह हमारी सारी बातें सही बताये एक एक तभी, हम उससे सलाह लेंगे, यह तो निरर्थक बात हैं,क्योंकि तब हमे उसके श्रम एक हिसाब से उसे उचित पारिश्रमिक भी दे सकने मे समर्थ होना चहिये और यह भी संभव नही कि एक ज्योतिष हर बार अपने सही होने का या उसके ज्योतिष विद्या मे प्रवीण होने का प्रमाण पत्र हर किसी को देता रहे.

अनेक उच्च स्तरीय ज्योतिष तो किसी नव आगंतुक से यह सुनते ही,की मेरा इस विद्या मे विश्वास तो नही हैं पर उनके - उनके कहने पर आपके पास आया हूँ.वे यह सुनते ही सामने वाले व्यक्ति से साफ़ साफ़ कह देते हैं कि मैं आपको इस विद्या पर विश्वास कराने के लिए नही बैठा हूँ,अगर विश्वास हैं तो स्वागत हैं अन्यथा अपना समय नष्ट न करें .

इस तरह से किसी भी योग के परिणाम देते समय या आकलन करते समय बहुत कुछ बातों का ध्यान रखना होता हैं,जब कुछ बातें बहुत गंभीर हो तब जीवन आयु और वहां कहाँ और किस जगह का रहने वाला हैं और उसके यहाँ प्रचलित रीति रिवाज मे क्या यह संभव हैं ऐसी अनेको बातों पर ध्यान दे कर ही अपना फल कथन करना चाहिये.जो कार्य कुछ कठिन सा जरुर हैं.

इसलिए सिर्फ ज्योतिष गुणा भाग के साथ यदि साधनात्मक बल और इष्ट बल भी होगा तो यह इस विद्या के लिए मददगार हो होंगे और उससे भी जयादा आप जिस व्यक्ति को मार्ग दिखा रहे हैं उसके लिए बहुत अनुकूलता भी .

===

Will Astrology Yog materialize in Reality? - One view

Whenever any new student of astrology or person having interest in this shastra read these yogs it is but natural that he wants to see various yogs and especially the auspicious yogs in his horoscope and after reading the results his heart is filled with joy. But when we talk about inauspicious yogs present in our horoscope then it is quite natural to get disappointed or get apprehension that it may happen in reality. Many persons have got the hobby of reading their zodiac results and try to analyze their whole day proceedings accordingly. Now just leave aside the topic whether this practice is right or wrong rather we will focus on why all results prove to be right for some persons and on others none of the results prove to be right.

On the one hand correct birth ascendant is important but how many are there who can determine it correctly or they have any capable astrologer who is capable of doing correct calculation. On the other hand, it is also true that every shastra has got one limit, beyond which person has to rely on some other alternative then only degree of preciseness of said result will be higher. But when we are talking about that will a person definitely get all the results of astrological yogs which are present in his horoscope, it is not a certainty. Generally Astrologer will tell some auspicious yogs and there are some who in order to earn money will tell you some dreadful yogs in horoscope. Truth is concealed from both sides. Some fault also lies with us that we consider hard-work of any astrologer to be so cheap that we hesitate to give fee for hard work put by him. Results are but obvious.

Here one fact has to be understood very well that just by any Yog being auspicious or inauspicious, you will get its results, it is not possible.

This fact is especially valid in case of some sadhna-centric yogs that probably one will not get the Yog's results because first of all we have to see whether that person has got inclination or desire to move forward in sadhna field or not. Another thing that needs to be seen is that whether there are possibilities in his life that a particular yog will materialize. Here, I am specifically referring to age and circumstances of person…There is one class of astrologer who upon happening of any incident , relate incident to some astrological yog or other and boosts of his knowledge….On the other hand , there is one class which is continuously doing research and seeking answers like why and when. This class does not make much of noise….Always, the time for materialization of any yog should be seen and thereafter it should be seen whether that time will be coming in lifetime of that person?

Here what I mean is whether related Dasha or Mahadasha is present in person's lifetime or not. If it is not, then see Antardasha in Dasha of other planets where there is hope of getting results. Besides it, see whether such thing can happen. Reason is that if you arrive at age of anyone's marriage to be 35 after doing astrological calculation but if his/her total age is only 27/28, then how this yog could be materialized? It is point worth pondering over.

Here one more thing is that do not estimate anyone's character casually because there are so many rules and sub-rules that any high-level astrologer can commit errors.

And results of such errors will not be good. For example, if any auspicious planet is present in eighth house of person and there is one such yog in astrological yog which is called Asur Yog according to which person and his behavior will be like dictator. See another case that there exists a yog of infidelity in anyone's horoscope then generally no right opinion will exist in society regarding him. It is normal thing but it is not that much easy. Here, it has to be seen that whether tenth house of person is benefic or malefic. If tenth house is benefic then may be person's horoscope has such dreadful yogs, he will not translate into action. Tenth house is house of action and while concluding about anyone's character, this house has to be kept in mind.

So many times, person is extremely characterless but nobody is aware of it because no yog or state exhibiting disgrace/shame exists in his horoscope. Even his nearby person does not know that person is like this.

In the same manner, may be anyone's horoscope is looking so much great but good ascendant house provides base to it. Moreover, it has to be seen that whether he is mentally capable to attain that state? All these things have to be considered otherwise any high-level state he may attain but how long it will remain.

True test of any astrological yog lies in its materialization. Here , only time decides where are you standing and what is your level , you can call yourself astrologer just by analyzing any incident but fruitfulness lies in reading coming time and it is not in reading distant future but rather in predicting the incidents happening in near future. Here it is not about being right or wrong rather what is important is to adopt an attitude of researcher, to accept the errors committed in telling about future or when prediction is right, attaining and understanding new formula. Therefore it should be seen that when you are analyzing any serious question then age of person should be seen and it should also be seen that related yogs whether they are auspicious or inauspicious belong to class of giving lifelong effect or are they valid only uptil some particular time.

If it is valid only uptil a particular time then whether that time will arrive in lifetime of the person at right moment or not. For example, what is point in predicting that a child will be extremely rich or poor in age between 1 and 4.

What is point in calculating age of anyone marriage age to be only 3 years (It could have been possible anytime in past but we have to give predictions now and whether it is possible in today's social scenario?)

How can a child have yog of having children and government job in that age.Before predicting anyone's future, it will be better to understand age of person, his mental, physical and financial state and give results.

Now going every time to astrologer with the hope that first he should tell all things correctly one by one , then only we will take advise is useless thing because then we should be ready to pay him appropriate fee according to his hard-work. And it is also not possible that every time astrologer should give certificate of being right and competent in astrology

Many high-level astrologers, when they hear from any amateur that I do not have any trust in this Vidya but I have come only upon recommendation of some people. Listening to it, astrologer clearly says that I am not sitting here to restore your trust in this Vidya. If you have trust then you are welcome otherwise do not waste your time.

In the same manner, some points need to be considered before predicting results of any yog. When topic is serious then age and residing location of person and whether it is possible in customs and tradition prevalent in that society need to be considered and then predictions should be made. This seems little bit difficult. Therefore if along with astrological calculation, power of sadhna and Isht is present then they will be helpful for this Vidya and moreover, it will be favorable to person whom you are guiding.

WHAT IS RATN JYOTISH ?

रत्न ज्योतिष का एक प्रारंभिक परिचय

ज्योतिष का मानव जीवन पर असर और प्रभाव आज सभी को ज्ञात हैं,और न मानने वालो की तुलना में मानने वालों की संख्या कहीं जायदा हैं वस्तुत अगर किसी भी विज्ञानं में सत्य का सामना करने की शक्ति नहीं हो तो वह कैसे आज हजारों वर्षों से मानव समाज के बीच अपना स्थान बनाये रख सकता हैं, यूँ तो आज कई जंगली जन जातियां ऐसी हैं जो आधुनिक विज्ञानं को न जानती हैं, न मानती हैं तो उससे आधुनिक विज्ञानं की सत्यता और असत्यता पर भला प्रश्न चिन्ह कैसे लग सकता हैं.

और यह हमारा सौभाग्य हैं की आज कम से कम इस ज्योतिष शास्त्र के अनेको स्तम्भ कम या ज्यादा ही सही पर अपने स्वरुप में सामने हैं और इस ज्योतिष शास्त्र के अनेको भागो और प्रभागों के मध्य एक नाम रत्न ज्योतिष का भी हैं.

प्राचीन काल से अनेको दिव्य मणियों के बारे में उल्लेख मिलता ही आया हैं, जैसे पारद मणि और स्यम्यन्तक मणि और भी कई कई मणियाँ भी, इसका मतलब सिर्फ यह मणियाँ धारण करने की ही नहीं बल्कि इनका कुछ विशेष महत्त्व भी रहा होगा तभी तो उस प्राचीन काल में भी और आज के काल में भी लोग इनके पीछे पागल हुए रहते हैं.इन्हें सिर्फ पत्थर का टुकडा नहीं माना जा सकता हैं.

सदगुरुदेव जी ने मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं पत्रिका के एक अंक में ऐसी अनेको मणियों के बारे में हमारा ध्यान आकर्षित कराया था जिनसे साधना में सफलता कहीं आसानी से पायी जा सकती हैं.और यह उस काल के लोगों का सौभाग्य रहा हैं वे सब दिव्यतम निधियां जो जीवन के अनेको क्षेत्र में सहयोगी रही हैं सुलभ रही पर आज यह अवस्था फिर से शोचनीय हो गयी हैं .

ज्योतिष के परिणामो पर भले ही लोग प्रश्न वाचक चिन्ह लगाए पर लोगों के मध्य आज भी रत्न के प्रति आकर्षण तो हैं ही,एक तरह से इन्हें या इनके बारे में न जानने लें व्यक्ति, इन्हें सौन्दर्य बढाने वाले एक उपादान मान सकते हैं पर वास्तव में यह तो सही हैं पर इसके आलवा भी इनका महत्त्व भी कई कई गुणा अधिक हैं.

और यूँ तो इन मणियों का इतिहास राजा बलि की कहानी से ही सामने आता हैं जहाँ भगवान् विष्णु ने वामन अवतार के माध्यम से राजा बलि के शरीर के विभिन्न हिस्से से इन मणियों का जन्म हुआ हैं यह घटना सभी जानते हैं, क्योंकि वचन के उपरान्त जब भगवान् ने उसके शरीर का स्पर्श अपने चरण से किया तो वह पूरा रत्नमय हो गया और देवराज इंद्र ने उसे अपने वज्र से टुकड़े टुकड़े कर दिया .इस तरह से इन रत्नों का संसार के सामने आना हुआ,वास्तव में रत्न सिर्फ सौन्दर्य बढाने वाले उपादानो से बहुत कुछ अलग हैं .इनका सही प्रयोग किसी उचित और योग्य आधार वालें व्यक्ति के निर्देशों पर किया जाए तो व्यक्ति बहुत जल्द ही अपने लक्ष्य को पा सकता हैं.इस बात का अर्थ समझना चाहिये,वस्तुतः बुद्धिमान वही हैं जो इन रत्न विज्ञानं के गुणों की सहायता से अपने जीवन की प्रतिकूलताओ को अनुकूलताओ में बदल सकें.

ज्योतिष में जो भी कमिया या न्युन्ताये एक मानव जीवन की बताई जाती हैं जब किसी जातक के जन्मांक को देखा जाता हैं.और इस रत्न विज्ञान के माध्यम से उन कमियों और न्यूनताओ को एक सही वैज्ञानिक दृष्टी के माध्यम से उपयोगित कर मानव जीवन के कष्ट प्रद रास्ते को सुगम करने का काम,

यही विज्ञानं करता हैं.इस विज्ञानं में विदेशों में भी बहुत कार्य हो रहा हैं वस्तुतः रत्नों का एक अद्भुत कार्य हैं की किस तरह यह मानव जीवन के लिए यह उपयोगी सिद्ध होते हैं किस तरह से हमारे आचार्यों ने मनीषियों ने और उच्चतम आध्यात्म विदो ने यह खोज किया की किस तरह ये रत्न मानव जीवन के लिए उपयोगी होंगे किस तरह से हर रत्न किस तरह से किसी एक ग्रह का प्रतीक हैं.इस तरह से इस विज्ञानं को कोई सामान्य नहीं समझा जाना चहिये यह भी १०८ दिव्य विज्ञानों में से एक हैं जिनका एक सही स्वरुप सामने आना हैं और सिर्फ मुख्य रत्न ही नहीं उपरत्नो का भी एक अद्भुत संसार हैं न केबल ग्रहों के मुख्य रत्न की बदले में पहिने जाने के लिए ही नहीं बल्कि अनेको ऐसे दिव्य उपरत्न हैं जिनका अभी परिचय सामने आना बाकी हैं , जो की सस्ते सरल और सहज ही उपलब्ध हैं पर उनका वास्तविक स्वरुप छुप सा गया हैं.जिनकी दिव्यता से अभी भी जन सामान्य ही क्या बल्कि साधक समाज भी पूर्णतया अपरिचित हैं.

इन अनेको दिव्यतम रत्न विज्ञानं से सबंधित बातें और तथ्य तो समय समय पर आपके सामने आयेंगे ही जैसे जैसे हमारे वरिष्ठ सन्यासी भाई बहिनों की आज्ञा और निर्देश हमें मिलता जायेगा .

===

WHAT IS GENSTONE ASTROLOGY?

Today, all of us are aware of the effect and influence of astrology on human life. Those who accept it are more in number than those who do not accept it. In fact, if any science is not able to face the truth then how can it sustain in human society from thousands of years?

There are few tribal and nomadic castes that neither know nor accept modern science, so can we raise question mark on authenticity of modern science?

And we are very lucky that at least today various pillars of astrology are more or less present in their authentic form. One among many types and sub-types of astrology is gemstone astrology. From ancient time there has been mention of various divine gems like mercurial gem or symyantk gem etc. It does not mean that they were merely for wearing rather they would have got special importance. That’s why people are crazy behind them both in past and today’s era. They cannot be merely considered as piece of stone.

Sadgurudev attracted our attention towards such gems in one edition of Mantra Tantra Yantra Vigyan through which success in sadhna can be obtained very easily. And it was fortunate for people of that time that all those divine treasures which were beneficial in many spheres of life were easily available. But today again the condition has become deplorable.People may raise question on results predicted by astrology but people have keen attraction towards gemstones. Some people who do not know much about them may consider them as articles of beauty enhancement but in reality, they carry much more importance.

History of gems originated from story of King Bali in which through Vaaman incarnation of Lord Vishnu, these gems got birth from various portion of king Bali's body. All of you are aware of this incident. After promise, when lord touched his body with feet then his body become full of gems and then king of Devs Indra destroyed it into pieces. In this manner, gems came into the world. In reality, gems are much more than beauty-enhancement articles. If they are appropriately used under the direction of right and competent person, person can fulfil his aim very quickly. This fact has to be taken seriously. In fact intelligent people are those who through the qualities of gemstone science transform the adverse circumstances to favourable ones.All the deficiencies and shortcomings predicted by astrology after seeing the birth number of person can be removed/minimized through gemstone science by using them in scientific manner and make troublesome journey of human life very easy. Research is going on this science in foreign countries. In fact, it is an amazing work of gems that how can they prove useful for human life.

It is worth pondering over how our sages and saints discovered that these gems will prove beneficial for human life. Every gem represents one particular planet. Therefore, this science should not be considered ordinary. It is one among 108 divine sciences whose real form is yet to be revealed. Not only prime gems but there is amazing world of sub-gems. These sub-gems are not merely to be used as alternative for prime gem of planet rather there are various divine sub-gems whose introduction is yet to come, which are cheap, easily available but their authentic form has become hidden. Not only common masses but also the sadhak fraternity is completely unaware of them.We will try to bring forward the various facts related to this divine gemstone science as and when we get permission and direction from our senior ascetic brothers and sisters.

रत्नों की आवश्यकता आखिर हैं ही क्यों ?

WHY GEMS ARE NEEDED ?

इस विज्ञानं की उपयोगिता पर एक दृष्टी

सारा जगत जिस एक नियम पर आधारित हैं, उसे कर्म नियम कहा जा सकता हैं.हर व्यक्ति के अच्छे बुरे भाग्य या जीवन में अवनिति या उन्नति या जो भी उतार चढाव उसके सामने आते हैं उसके अगर सिर्फ संयोग के नियम से समझाया जाए तो मानो एक अराजकता सी चारों और मच जाएगी अत: यह नियम सही नहीं है और अब तो आधुनिक वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करने लगे हैं की इस ब्रम्हांड का निर्माण कोई एक संयोग नहीं बल्कि एक सुविचारित व्यवस्था हैं और इसको सुचारू रूप से सतत गतिशील करने के लिए जिन नियम या उप नियम या पराभौतिक नियम हैं,उनमे कर्म नियम सबसे ऊपर हैं और कहा जाए की एक यही नियम ही जीवन की सारी विसंगतियों को समझा सकता हैं.अतः इस नियम की महत्वता तो स्वीकार सभी करना पड़ता हैं.

भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं की जो कर्म हमने सृजन किये थे, उनका निराकरण भी हम कर सकते हैं.पर कैसे यह संभव हो तो इसके लिए बहुत सारे उपाय हैं, जिनमे मन्त्र,तन्त्र,यज्ञ और अन्य भी शामिल हैं और हर किसी प्रक्रिया की एक अपनी ही उपयोगिता हैं और इन प्रकारों का उच्चस्तरीय रूप अभी तो जन सामान्य के सामने आना बाकी हैं और जन सामान्यतः की सामान्यतः रत्नों धारण करने की अधिक रूचि रहती हैं .पर आखिर क्या आधार हैं इन सब बातों का. क्यों कुछ पत्थर को धारण करने पर एक व्यक्ति को अनुकूलता मिलती हैं तो वहीँ दूसरी और दुसरे व्यक्ति को उसी पत्थर जिन्हें हम रत्न धारण करने पर प्रतिकूलता मिलती हैं.क्या सचमुच गृह नक्षत्र का मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता हैं .?इसे कैसे समझा जाए?

वस्तुतः ग्रह नक्षत्र में मनुष्य से हजारों मील की दुरी पर हैं तो उनका हम पर असर पड़ना थोडा सा अजीब सा मालूम होता हैं पर वास्तव में यह ग्रह सिर्फ धनात्मक और ऋणात्मक करने छोड़ते रहते हैं, और हमारे कर्म फल इन धनात्मक और ऋणात्मक किरणों के असर से समय समय पर अपना असर दिखाते रहते हैं, जिस तरह से किसी खेत में रबी की और खरीफ दोनों फसले बो दी जाए तो भले ही उस खेत में पानी प्रवाहित किया जाए पर जब रबी का मौसम होगा, तब रबी वाली फसल होगी और खरीफ वाले समय पर खरीफ .

ठीक इसी तरह हमें भी समय समय पर इन ऋणात्मक किरणों का असर सहन करना पड़ता हैं और धनात्मक किरनो का लाभ यदि हमारे कर्म फल कुछ अच्छे हुए तो पर यह मानव शरीर एक मंदिर माना गया हैं और धनात्मक किरणों से ज्यादा ऋणात्मक किरणों का असर हमको प्रभावित करता हैं.और इन ऋणात्मक किरणों के असर से इस शरीर मंदिर की रक्षा करना भी एक अनिवार्य कर्तव्य माना गया हैं.क्योंकि यह मानव देह अमूल्य हैं और रत्न एक तड़ित चालक की तरह माना जाता हैं.और यह हमारे शरीर पर पड़ने वाले ऋणात्मक प्रभावों से हमारी रक्षा करता हैं .

और हमारे जीवन को और भी व्यवस्थित और आनंददायक बना सकने में समर्थ हैं, यह कर्म फल के असर को निर्मूल तो नहीं करता पर उसके प्रभाव को इतना कम कर सकता हैं की उसे लगभग न ही माना जा सकता हैं,ठीक इसी तरह से हमारे जीवन में आने वाले किसी भी शुभ प्रवाह या शुभ समय को कई कई गुणा बढ़ा सकता हैं.पर यह समझना भी जरुरी हैं की यह किसी नवीनता को जन्म नहीं दे सकता हैं.इसके साथ यह भी समझना जरूरी हैं कि इन रत्नों को धारण करवाने की सलाह देने वाले को किस स्तर का ज्ञान होना जरूरी हैं सिर्फ किताब से ही नहीं उसके पास उसके अनुभव की भी अमूल्य पूंजी होना ही चाहिए,सिर्फ किताबो के माध्यम से ही हर अवस्था में सही निर्णय नहीं दीया जा सकता हैं.

जीवन की अनेको दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति में यह रत्न विज्ञान व्यक्ति के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता हैं और उसको एक नया आधार दे पाता हैं और इसी तरह जो उसके लिए लगभग असंभव सा हैं उसे एक आधार देकर उसे जीवन की उच्चता और प्रसिद्धि के शिखर पर आसीन भी करा सकता हैं. बस जरुरत हैं तो इस विज्ञानं को समझ कर उसे सही अर्थो में उपयोग किया जाए.और इन रत्नों की सहायता तो उसे साधना में सिद्धि भी प्रदान करने में सहयोग कर सकती हैं,ज्योतिषीय दृष्टी से जो भी प्रतिकूल स्थिति हैं जो एक साधक को उसके लक्ष्य तक पहुचने में वाधा दे रही हैं.

==

Why Gems are required…

Whole world is based on one rule i.e. Law of deed. Every body's fate whether it is good-bad or development-degradation in life or any types of up-downs comes and if we just see the coincidences and tries to understand the rules then a big chaos will spread everywhere. Therefore, this law is not appropriate. Moreover, nowadays-even scientists are agreeing to this fact that construction of this universe is not just a coincidence rather it is a well-planned designing or arrangement. In addition, for its smooth functioning, those laws are considered and are it sub laws or metaphysical laws, amongst all the law of deed position number one. Only this law can make you understand all absurdity of life. Therefore, we all have to accept the importance of this law.

Lord Shri Krishna says in Bhagvat Geeta – those deeds, which we created, can be remove by us only. However, for making it possible, there are many ways to solve it, which includes Mantra, Tantra, Yantra and many other ways. In addition, every way consist its own importance and utility. Moreover, the advanced version of all these ways is remained to be open in front of all. Generally, people like to carry gems stones on their body. However, what is the base behind it? Why it is like that by wearing any stone or gem, a person gets favorability in life? On other side, the other person gets affected from it badly. Is it true that planets affects human being? Now the question is how to understand this?

In effect, the planets lay millions of distance away from us, so it seems strange that they affect us. Actually speaking these planets leaves only positive and negative rays. However, they influence our deeds sometimes positively sometimes negatively. For example in any field if we inseminate rabbi and kharif seeds and nurtures it properly. Nevertheless, point is that the crop will grow only in their respective season.

Similarly, we also have to face the malefic of these negative rays and benefices if our deeds are good. However, this human body is as temple, which is, affected more by negativity rather that positivity. Moreover, keeping our temple form body safe from these malefic is an essential duty. This is because human body is priceless. In such situation, gems are treated to be quick healer. And they keeps us safe from the malefic of planets.

Moreover, they are capable enough to make our lives better and prosperous. Well, they do not nullify the deeds effects but they reduce the intensity. Exactly they also can multiple the auspicate of our life. Therefore, it is equally important to understand that it cannot create any newness in our life. Again this is also equally important from whom you are consulting, whether that person possesses right amount of knowledge or not? Or he is just a book worm. Because by just reading or referring books cannot be equivalent the amount of experience in this field.

In many misfortunes the gem science work like light pillar in human life. It provides a new base. Similarly, which is impossible in life for a person turns into bundles of new possibilities. And leads him to the new sky of achievements. What needed to done is to understand this gem science and to use it in real sense. Even apart from above, this gem science aids us in our sadhnatmak and spiritual life. They really help us to achieve our aims. As per astrological point of view, it also helps and negates the malefic effects in life.

RELATION BETWEEN PLANETS AND GEMS

रत्न विज्ञानं का ग्रहों से सबंध

रत्न विज्ञानं यूँ तो अपने आप में अनेको रहस्य छुपाये हुए हैं और इस महाविशेषांक के आगामी अंको में,जब इसके उच्चतम ज्ञान से सबंधित अंको के प्रकाशन की जब अनुमति मिलेगी, तब हम इसके अनेको गुप्त रहस्य को भी आपके सामने लायेंगे,पर उन अंको की प्रारंभिक पृष्ठ भूमि भी तो अभी जरुरी हैं.इसलिए यह जानना भी जरुरी हैं की हर रत्न को किस ग्रह से सबंधित किया गया हैं और यह सामान्य सी जानकारी भी कई कई बार बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं.

न केबल यह बल्कि इन रत्नों को धारण करने के लिए किस धातु का उपयोग किया जाना यह भी एक महत्वपूर्ण विषय हैं क्योंकि उचित रत्न के साथ उचित धातु का संयोग भी एक अनिवार्य प्रक्रिया हैं.

अगर उसका एक निश्चित लाभ लेना हो तो, क्योंकि विज्ञान का मतलब ही यही हैं की उसके हर भाग को जैसा निर्दिष्ट किया गया हो उसी रूप में पालन करना तभी एक प्रक्रिया पूरी होती हैं और उसका समुचित लाभ भी लिया जा सकता हैं.

ग्रह और सम्बंधित रत्न

- सूर्य –माणिक्य
- चन्द्रमा –मोती
- मंगल –मूंगा
- बुध – पन्ना
- शुक्र –हीरा
- बृहस्पति –पुखराज
- शनि –नीलम
- राहू –गोमेद
- केतु –लहसुनिया

ग्रह और सबंधित धातु

- सूर्य, मंगल,बुध------ स्वर्ण
- चंद्रमा,बृहस्पति –चाँदी
- राहू और केतु ---पंचधातु

- शनि –लोहा,रांगा

Gems and Planet rapport

Gem science is conceals many secrets in it. Moreover, in preliminary Special editions, when we will get permission to publish advanced information regarding this, we would definitely try best to put forth the new secrets. However, it is necessary to provide the basic information so that in future you will be able to understand it properly. Therefore, it is very essential to know which gem is of which planet. Such simple information sometimes keeps high importance.

Not only this but also which metal should be used to wear this gem is equally necessary information. As it is very important to know exact proportion and combination of gems and metal for using purpose. This is also an essential process only if certain benefit is desirable. Because science itself does means that following every procedure as instructed for achieving desired success.

Planets and related Gems

- Sun – Cornelian
- Moon – Pearl
- Mars – Coral
- Mercury – Emerald
- Venus – Diamond
- Jupiter – Topaz
- Saturn – Sapphire

- Rahu – Onyx
- Ketu - Beryl

Planets and related metals

- Sun, Mars, Mercury – Gold
- Moon, Jupiter – Silver
- Rahu and Ketu – Five metals
- Saturn – Iron, Raanga

SOME PRECAUTIONS FOR GEMOLOGY

कुछ सावधानी जिन्हें ध्यान में रखना ही चाहिए ही ...

जब किसी भी विज्ञानं का पूर्ण लाभ लिया जाना हो तो उसके सभी अंगो का परिपूर्ण रूप से अध्ययन भी किया जाना भी उतना ही आवश्यक हैं.जब रत्नों का धातु से और ग्रहों से सबंध हैं तो किस वजन के वह धारण किये जाना चहिये वह भी तो एक आवश्यक बात हैं क्योंकि हमारे आचार्यों का ज्ञान पूरी तरह से वैज्ञानिक मत युक्त रहे हैं भले ही उस कड़ी के लुप्त हो जाने के कारण हम यह समझ नहीं पा रहे हो पर यह भी तो एक सच्चाई हैं .और इस परिपेक्ष्य में कुछ सामान्य सी सावधानी जो आपको रखना ही चाहिये.

- अच्छी तरह से अपनी कुंडली का अध्ययन करवा कर ही आपको रत्न धारण करना चाहिए क्योंकि सामने दृष्टी से देखें जाने पर कई कई बार जातक बेहद परेशानी में फस जाता हैं,अनेको कुंडलियों में ग्रहों का संयोजन भी कई बार बहुत जटिलता युक्त होता हैं .

- सामन्यतः ज्योतिष जातक की कुंडली देखकर उनके लग्न स्थान के मालिक के रत्न को पहिनने के लिए कह देते हैं यह ठीक हैं, पर यहाँ भी कई कई बार लग्न स्थान का स्वामी ग्रह स्वयम बेहद कमजोर अवस्था में कुंडली में हो और बेहद विपरीत अवस्था में हो तब कुशल ज्योतिषी के अनुभव की जरूरत होती हैं.

- हर जातक की कुडली में किस राशि में वह ग्रह हैं उसके अनुसार एक निश्चित वजन का ही रत्न उसके लिए उपयोगी होता हैं,अतः सभी के लिए एक निश्चित वजन का रत्न कह देना उचित नहीं हैं ,पर जब इस बात का पूरी तरह से ज्ञान न हो तो सदगुरुदेव जी नेयह निर्देश दिया हैं की कम से कम चार रत्ती का वजन तो रत्न का होना ही चाहिये.(इसमें हीरा रत्न शामिल नहीं हैं)

- धारण करने से पूर्ण जब यह निश्चित हो जाए की यह रत्न जातक के लिए सर्व दृष्टी उपयोगी हैं तब ही उचित प्राण प्रतिष्ठा करवा कर ही धारण करना चाहिए और यह कार्य किसी भी योग्य पंडित से करवा लेना चाहिए जो इसका विधान पूर्ण के साथ जानता हो.अन्यथा उचित प्राण प्रतिष्ठा के अभाव में रत्न अपना पूर्ण प्रभाव नहीं दे पाते हैं.

- रत्न लिए जाते समय यह ध्यान रखना चाहिए की उसमे किसी प्रकार की टूट फुट, लाइन या कोई भाग में दरार आदि न हो क्योंकि एक सुगढ़ और सुडौल रत्न ही अपेक्षित उचित परिणाम दे सकने में समर्थ होता हैं .यह सही हैंकि एक निर्दोष रत्न की कीमत काफी ज्यादा होती हैं पर जीवन की बहुमुल्यता देखने पर यह निर्णय आपको करना ही होगा.

- हर रत्न का एक जीवन काल भी होता हैं अतः यह भी समझ लेना चाहिए की उस काल के बाद उसकी प्राण ऊर्जा लगभग समाप्त सी हो जाती हैं .अतः एक बार उसकी पुनः प्राण प्रतिष्ठा की जाना चाहिए.

- हर रत्न को धारण करने का एक वार और एक समय होता है उसका पालन भी किया चाहिए.

- तो विपरीत ग्रहों के रत्न को एक साथ या पास पास की अंगुली में धारण नही किये जाना चाहिए .

- इसी बात को नवरत्नों की अंगूठी में भी ध्यान रखना चाहिए .

- किसी दोष युक्त रत्न की जगह उपरत्नो का भी उपयोग आसानी से किया जा सकता हैं .

  और जो भी इस विषय में ज्यादा जानकारी चाहते हो उन्हें सदगुरुदेव द्वारा लिखित "रत्न ज्योतिष " का अच्छी तरह से अध्ययन कर लेना चाहिए .इस बहुमूल्य किताब में इस विज्ञानं से सबंधित सभी बातें पूर्णता के साथ दी हुयी हैं .

------------------------------------- --

Gems and their precautions

Whenever it is procuring benefit of any science then it is equally necessary to know and study each parts of that concerned subject. Gems have direct connection with metals and planets, so it is equally important to know which amount of Gems's weight one should consider. Reason behind this is since our old scholar's knowledge was completely based on scientific logics and facts though it is different matter those facts have been disappeared in times space and we are unable to understand it. So in this regard below given are the general precautions that you should consider…

- This is necessary that one should wear a Gems only after considering the thorough study of his/her horoscope. Because in outer way it seems that Jataka (person) is suffering from many obstacles in his life, and even in many horoscope the combination of planets are also tough.

- After going through the whole horoscope, Astrologer generally see the lord of first house and directly conclude to wear the Gems of related planet. Sometimes it went right but many times, it happens that the lord of first house itself is in weak condition in horoscope. In such odd situation, an efficient astrologer experience utterly needed.

- In every Jataka's horoscope, it is essential to figure out where the planet lies, in which zodiac sign, and accordingly weight of Gems prescribed. Therefore, this would not be right at all to recommend same weight of Gems to everybody. In such circumstances when one does not have complete knowledge, Sadgurudev ji always use too instructs for minimum jequirity Gems is be recommended. (here diamond Gems is excluded)

- Before wearing such Gems when it is confirm that, the Jataka would be benefit in all sense, then only proper establishment and sacred procedures are be done. Well, these procedures are to be done by any perfectionist who should be well versed in complete processes of enchantments and establishment. Otherwise, instead of getting whole benefits, the Gems will give its half effects.

- While purchasing Gems, it should be properly check whether it is defected or not, any lines or any type of crack etc. should not be presented as a well-shaped and well-symmetrical Gems only can provide best results. It is fact that an impeccable Gems costs very high. However, after looking life preciously decision is yours at last.

- Every Gems consists a particular life. Therefore, it is clear to understand that after completing that shell life the Prana energy is almost lost. So, it is better to repeat the establishment procedure.

- Every gem is worn on particular date and time. In addition, it is recommended following that.

- The opposite nature planet gems are not to be wear in consecutive fingers.

- This should also be adhering while making the ring made up of nine planets named as Navratna Ring.

- Instead of wearing any faulty gem, the sub gems can also be wearing.

Moreover, whosoever would wish to get more information in this regard should definitely go through the book written by sadgurudev "Ratna Jyotish". As in the above regard, complete information has been given in this book.

RATN JYOTISH ...AN EXPERIENCE

हस्त रेखा और अंक ज्योतिष तो सभी के मन पसंद विषय रहते हैं.हर घर परिवार मे या हमारे परिचित मे एक न एक तो ऐसा होगा ही जिसे इन विषय मे तथाकथित महारत होगी ही.और इस विज्ञानं को बहुत ही सरल सा मान लिया जाता हैं खासकर किसी भी व्यक्ति को जब कोई रत्न बताया जाता हैं की यह रत्न उसके लिए उपयोगी होगा.यहाँ यह समझने की आवश्यकता हैं की जितना यह कार्य सरल दिखता हैं उतना वास्तव मे हैं नही.हालाकि इस ज्योतिष विभाग के आचार्यों ने इस बात पर जोर दिया हैं की लग्न से सबंधित रत्न किसी को भी पहनाया जा सकता हैं और इसमें किसी भी प्रकार की कोई वाधा नही हैं.पर यह तो एक उपरी उपरी बात हो गयी कई बार बहुत सोच विचार करना पड़ सकता हैं इस नियम का पालन करने पर, मानलो लग्न भाव बहुत कमजोर या लग्नेश नीच राशि का हो और वह कहीं जायदा समस्या प्रदान कर रहा हो तब?

इस अवस्था मे कुछ ओर सोचना पड़ेगा.वस्तुत एक ज्योतिष का सामान्य सा विद्यार्थी कई बार नियमों की गहनता न समझते हुये उसे सिर्फ शाब्दिक रूप से ही उपयोगित कर देता हैं और इस कारण कई बार आश्चर्य जनक परिणाम भी प्राप्त होते हैं तो कई बार ..?

यहाँ इस बात पर भी ध्यान रखना होता हैं कि किस वजन का रत्न आपको, अपने सामने बैठे व्यक्ति को कहना हैं की वह इतने वजन का रत्न पहिने.यह या इस बात का निर्धारण उस व्यक्ति की कुंडली मे सबंधित ग्रह किस राशि मे बैठे हैं इस बात पर निर्भर करता हैं .

एक समय मेरे एक दोस्त ने मुझे अपनी कुंडली दिखाई.वह काल मे कुछ ज्योतिष का ज्यादा अध्धयन हुआ रहा तो कुछ विशेष गंभीरता से नही बस यूँ ही एक नजर डाल कर कह दिया की हीरा रत्न उपयोगी होगा क्योंकि वह कुंभ लग्न की कुंडली थी और मेरे मित्र का रुझान सिर्फ रत्न पहिनने पर रहा था,और कोई बात या समस्या उनके मन मे नही थी .

पर हीरा कितने वजन का हो यह लिखा नही था .सदगुरुदेव जी ने एक नियम दिया हैं कि रत्न को कम से कम ४ रत्ती के वजन का होना ही चाहिए ,पर राशि के हिसाब से यह वजन बढ़ भी सकता हैं पर कम से कम इतना वजन तो होना ही चाहिए ही.अब हीरा के बारे मे राशि के हिसाब से कुछ दिया नही था.तो क्या निर्णय करूँ .तो अपने मित्र को कह दिया की मेरे हिसाब से कम से कम इतने वजन का तो हीरा होना ही चाहिए ..और बात आई गयी हो गयी .अगले दिन वहीँ मित्र काफी गुस्से मे मिले मैंने कहा क्या बात हैं.बोले आज अच्छी बात हुयी मैं सीधे ज्वेलर्स की दूकान पर गया बोला की हीरा हैं उसने कहा की मिल जायेगा, आपको किस रेंज का चाहिए ,तो मैंने तत्काल कह दिया की ४ रत्ती का कम से कम होना चाहिए उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और बोला की माफ करना,कुछ बुरा लग जायेगा .मैंने कहा की कोई बात नही बोल ही दो,उसने कहा की अच्छे अच्छे टोयोटा कार से चलने वाले भी ४ रत्ती का हीरा नही पहिन पाते ,मैंने कहा की ऐसा क्यों ? उसने कहा की कम से कम ४/५ लाख मे आएगा .

मैंने कहाँ बस .इतना ही .

हम दोनों मुस्कुरा उठे,तभी मैंने कहा की किताब मे हीरा के वजन वाली बात क्यों नही दी हैं अब समझ मे आया .

खैर अगले दिन हम दोनों शहर के सबसे बड़ी शॉप मे गए और अब हम नीलम पर बात कर रहे थे क्योंकि नीलम तो कुंभ लग्न वालों के लिए सामन्यतः श्रेष्ठ रत्न हैं,तो उस दूकान वाले ने जितने भी नीलम के रत्न दिखाए, मुझे हर किसी मे खोट ही दिखाई दे.

हर रत्न को नकारता जा रहा था क्योंकि स्पस्ट हैं कि किसी रत्न मे हलकी लाइन या टूट फुट या आकार का सुगढ न होना और किसी मे कोई बिंदु बना हुआ तो किसी मे कोई अजीब सा ..इस तरह से कुछ देर मे उसकी दूकान मे कोई रत्न नही था जो शास्त्रीय मान्यता पर पूरा खरा उतरे और उसने कहा की आप जिस तरह से पूरा निर्दोष रत्न चाहते हैं. वह तो कोई भी नही लेगा क्योंकि उसकी कीमत तो कई कई गुणा होगी .

यह एक अद्भुत बात रही की हम जब जिस विज्ञानं को मानते हैं तब ऐसा ..?इसलिए आचार्यो मे उपरत्नो का प्रचलन स्वीकार किया क्योंकि एक तो उनका मूल्य कम और उनमे चाही गयी शुद्धता पायी जा सकती हैं या जड़ी बूटी का भी कुछ ऐसा ही हैं .

हालाकि की बिना रत्नों की तांत्रिक प्रक्रिया के पूरा पूजन हुये बिना अभी उन्हें धारण करना कुछ उचित नही हैं पर आज कहाँ किस के पास समय हैं तब पूरी प्रक्रिया पर जोर देना मानो अपना समय नष्ट करना ही हैं.और यह भी आश्चर्य की बात हैं इस सबके बिना भी रत्न का अपना ही अद्भुत असर हैं ,बिना इन सब प्रक्रिया के ही भी अनेको ने जब भी रत्न को धारण किया जो उनके लिए उचित रहे तो उन्हें अद्भुत परिणाम मिले ही हैं वह भी जीवन के सभी क्षेत्र मे.तब यह बहुत सोच मे डाल देती हैं की की अगर एक पूरी तरह से निर्दोष रत्न और पूरी तांत्रिक प्रक्रियाओं से युक्त हो तो तब वह क्या अर्थ रखता होगा और जातक को कहाँ तक पहचानने सामर्थ्य रखता होगा,जरुरत तो हैं आज इन विषय को समझने की और आवश्यक क्रियाओं को सही रूप से संपादित करने वाले विद्वानों की .सदगुरुदेव जी ईस विषय पर भी इतने नियम दिए हैं की कोई योग्य या सीखने वाला उस को अपना कर तो देखें और कुछ ऐसे सौभाग्य शाली रहे हैं जिन्हें सदगुरुदेव द्वारा यह रत्न मिले और वे आज अपने क्षेत्र के उच्चस्थ व्यक्तित्व हैं . इस तरह से आज अब समय हैं रत्न विज्ञानं और रत्नों की सामर्थ्यता को समझने की .

===

GEMSTONE ASTROLOGY: ONE EXPERIENCE

Palmistry and Numerology are the favourite topics of all of us. There will be at least one in our family or among our acquaintances who will have so-called competence in this subject. And this science is considered to be very simple especially when person is told any gem to be useful for him. Here it has to be understood that this task may seem simple but actually it is not so. Though Acharyas of astrology department has stressed on the fact that gem related to Ascendant can be worn by anyone and there is no problem in doing so. But this is merely a superficial talk. Many times a lot of thinking has to be put behind following this rule. For example Lord of ascendant (Lagna) is very weak or is of debilitated zodiac sign and is causing a lot of problems. Then? Under such circumstances, one has to think differently. Generally any ordinary student of Astrology does not consider the depth of rules and use them literally and as a result of which amazing results are obtained and sometimes?

Here one more fact needs attention that what would be the weight of gem which you are prescribing for the person. It is decided by seeing that in which zodiac sign are related planets residing in that person's horoscope.

Once upon a time, one friend showed me his horoscope. At that time, I used to study astrology more. So I just saw and said that Diamond gem will be useful because it was Aquarius Lagna horoscope. My friend has interest in wearing only stone, he was not facing any problem.

But it was not written that what should be weight of diamond. Sadgurudev Ji has given one rule that gem should be at least of 4 Ratti (weight equal to 8 grains of rice). But this weight can increase depending upon the zodiac sign. However, minimum 4 Ratti should always be there. Now nothing was given about diamond according to zodiac sign.

So I told my friend that at least diamond should be of this much weight…..and topic was over. Next day, same friend met me and was very angry. I said what happened. He told that Today, I went directly to Jeweller's shop and enquired about diamond. Shopkeeper asked me that it is available, which range do you want? I told instantaneously that it should be at least of 4 Ratti. Shopkeeper was astonished and said that sorry, please do not feel bad.

I told him please tell, I will not. He told that even those driving Toyota car does not wear 4 Ratti diamond. I asked why? He told that it will at least cost 4/5 lakhs.

I said just this much…

We both smiled. Then I said that now I understood why there was no weight given in book corresponding to diamond. Well, next day we went to biggest shop of the city and asked about Sapphire because Sapphire is best gem for those having Aquarius ascendant. That shopkeeper showed so many Sapphire stone. I did not found any of them convincing. I was saying no to each stone because there was small line in some gem, some were slightly broken, some were irregular-sized and some were looking little bit strange… There was no gem in his shop which satisfies the standards of Shastra. He said that if you want completely pure gem, then nobody will take it because it will cost you many times more.

It was very astonishing that science which we consider so much then such….? Therefore Acharyas have accepted sub-gems because on the one hand they are economical and on the other hand one get desired purity level sub-gems. Same thing applies in case of herbs.

However, it is not appropriate to wear stone without doing Tantric procedure or doing its complete poojan. But who has got the time to do so. Therefore stressing on complete procedure is just wastage of time.

And it is quite amazing that without all this, gems have such an astonishing effect , many person who wore these gems without all these procedures , they got amazing results , that too in all fields of life. This fact compels us to think that if gem is completely pure and tantric procedure is done on it, then how much capable it would be and how much person can progress wearing it. What is needed is to understand this subject and scholars who can carry out necessary procedures correctly. Sadgurudev Ji has given so many rules regarding this subject which can be followed by capable one as well as students. What can be said about auspiciousness of those few who got gems from Sadgurudev and they have attained high-position in their respective fields. So today is the time to understand Gemstone Science and capability of gemstones.

सदगुरुदेव प्रदत्त तीव्र प्रभावशाली सरल रत्न प्रयोग :आपके लिए

SARAL RATN PRAYOG

सरल प्रयोग जिन्हें करना ही चाहिए

रोग मुक्ति के लिए : एक रत्न प्रयोग

“प्रथम सुख निरोगी काया” यह तो जीवन के लिए कुछ अति आवश्यक बातों में से सर्व प्रथम कही गयी हैं और क्यों न हो,किसी भी उपलब्धि फिर वह भौतिक या आध्यात्मिक ही क्यों न हो उसको हस्तगत करने के लिए साधक का स्वास्थ्य को सर्वप्रथम उत्तम होना ही चाहिए अन्यथा कैसे कोई भी ठोस उपलब्धि को पूर्णता से पाया जा सकता हैं.और इसके लिये अनेको उपाय हो सकते हैं और सदगुरुदेव जी ने अनेको अनेको उपाय हम सभी के सामने रखें फिर वह चाहे पत्रिका के माध्यम से हो या शिविरों के माध्यम से या फिर केसेट्स के माध्यम से या फिर किसी किसी शिष्य को स्वयम उन्होंने ही यह प्रदान किया.

पर यह निश्चित हैं की सदगुरुदेव की आध्यात्मिक उच्चता को खासकर जिसमे उनका आयुर्वेद का पक्ष रहा हैं जन सामान्य क्या उच्चस्तरीय भी समझ नहीं पाए और उन्हें मुख्यता तंत्र, मंत्र और ज्योतिष का ही प्रकांड आचार्य मानते रहे पर ऐसा नहीं हैं सदगुरुदेव जी ने ने एक बार तो बहुत ही पूर्णता से यह बताया की वास्तव में इन सबसे कहीं कहीं ज्यादा उच्चता और ज्ञान की विशालता उनके अन्दर जिस क्षेत्र की हैं वह आयुर्वेद हैं पर यह हमारी पीढ़ी का दुर्भाग्य हैं की हम उनके इस ज्ञान को आत्मसात नहीं कर पाए हम बहुत कम ही उनके ज्ञान के इस पक्ष का परिचय पा पायें, पर एक बार पुनः आशा की किरण उदित होने लगी हैं जब उनके आत्मवत सन्यासी शिष्य शिष्याओं ने एक बार अपना दृढ मानस इस और बना लिया हैं .

सदगुरुदेव ने इस "आयुर्वेद सुधा" नाम की एक पत्रिका निकालने का मानस भी बनाया पर उस काल के शिष्य वर्ग की उदासीनता को देख कर उन्होंने वह विचार जो इतने आगे तक साकार होने की दिशा में बढ़ चला था उसे उन्होंने स्थगित कर दिया. सदगुरुदेव जी की किताब "मूलाधार से सहस्त्रधार "उनके असीम साग़रवत ज्ञान का एक परिचय देने के लिए एक कण मात्र ही हैं.और आज भी अनेको लोग उसमे दिए प्रयोग और ज्ञान की प्रखर उदात्तता को देख कर आश्चर्य हो जाते हैं.

यह उनके अद्भुत ज्ञान का एक छोटा सा परिचय हैं की रोग मुक्ति में रत्न का प्रयोग किया जा सकता हैं.किसी भी प्रकार का रोग हो यह प्रयोग आप किसी भी गुरु वार से प्रारंभ कर सकते हैं .

रतन उपयोगित :हल्ट हकिक

सहयोगी साधना सामग्री : नीम की लकड़ी के पांच टुकड़े,पांच लाल रंग के पुष्प (प्रति दिन)

मंत्र : **ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं रोग नाशाय फट .**

अपनी जिस भी शारीरिक रोग को आप दूर करना चाहते हैं,उसके दूर होने और आरोग्यता,निरोगिता पाने के लिए आप संकल्प ले कर इस प्रयोग को करें, यह सरल प्रयोग है अतः इसमें श्रद्धा,विश्वास की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं.

हर दिन इस हल्ट हकिक पर जिसे आप अपने सामने रखकर मंत्र जप करेंगे, उस पर 5 लाल रंग के पुष्प अर्पित करें ,इसी तरह नीम की लकड़ी के पांच टुकड़े भी इस हल्ट हकिक पर अर्पित कर दें. इसके बाद इस मन्त्र की पुरे मनोयोग से 5 माला मंत्र जप करें. इस तरह से ४० दिन करना है.

और अगले दिन फिर से पांच नए लाल रंग के पुष्प और नीम के टुकड़े उस पर अर्पित करना हैं.और पुराने सारे पुष्पों और नीम की लकड़ी को एक पात्र में इकट्ठा करके किसी भी निर्जन स्थान पर फेक दें .

और प्रयोग समाप्ति के बाद सदगुरुदेव से सफलता की प्रार्थना करें ,

===

हकिक पर रोग मुक्ति हेतु 5 गुरुवारीय एक और सरल प्रयोग :

हर दिन अपने गुरु मंत्र जप का क्रम अर्थात कम से कम १६ माला जप करने के बाद हकिक पत्थर के ११ दाने ले ले और साथ में ११ सफ़ेद रंग के पुष्प लेकर इन दोनों पर एक साथ ११ बार गुरु मंत्र जप करके इन सबको पश्चिम दिशा की और फेक दें .

पर यह ध्यान रखने योग्य बात हैं की यह हकिक के दानो पर प्रक्रिया आपको 5 गुरुवार को लगातार करना हैं,और इस क्रम में कोई व्यवधान न हो .पर शेष अन्य दिनों में १६ माला गुरु मंत्र जप करना ही हैं .

और अंत में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह हैं की संकल्प में पूर्णता के साथ रोगी व्यक्ति का नाम और उसका रोग का नाम उल्लेख करना ही चाहिए ही.

==

INTENSE, EFFECTIVE AND EASY GEMSTONE PROCEDURE GIVEN BY SADGURUDEV: FOR YOU ALL

FOR GETTING RID OF DISEASES: A GEMSTONE PROCEDURE

“Pehla Sukh Nirogi Kaaya” (first and foremost pleasure is of having disease-free body) can be called first and foremost among most important facts of life. And why not, in order to attain any materialistic or spiritual achievement,

it is very important for sadhak's health to be in better condition otherwise how any concrete achievement can be attained completely. And there can be many means of achieving it. Sadgurudev Ji provided many ways of doing it through magazine, shivirs, cassettes or giving it directly to disciples. But it is also true that not only common public but even higher-level people could not understand spiritual heights of Sadgurudev especially his Ayurveda aspect and primarily considered him as eminent scholar of Tantra, Mantra and astrology. But reality is not like this. On one instance, Sadgurudev elaborated in detail that in reality, knowledge which he possessed the most among various branches of knowledge is Ayurveda. But it was bad-luck of our generation that they could not imbibe his knowledge. Only few of us were able to get introduced to this aspect of his knowledge but once again, a ray of hope has risen again when his soul-children ascetic disciples have made a firm mind in this direction.

Sadgurudev made up his mind to launch magazine named "Ayurveda Sudha" but after seeing the disinterest of disciples of that time, he postponed his thoughts. Book of Sadgurudev "Muladhaar Se Sahastrar" is only a glimpse of his infinite depth of knowledge. And even today many persons are amazed by sublimity of procedures and knowledge given in it.

It is just a small introduction to his amazing knowledge that gemstone can be used to get rid of diseases. It may be any type of disease. This procedure can be started on any Thursday.

Gemstone to be used: Halt Hakik (Agate)

Assisting Sadhna Article: Five pieces of Neem (Azadirachta indica) wood, five red colour flowers (everyday)

Mantra: **OM KLEEM HREEM KLEEM ROG NAASHAAY PHAT**

Do this procedure after taking resolution to get rid of physical disease you are suffering with and attaining disease-free life. It is an easy procedure. Therefore, trust and dedication plays an important role.

On each day offer five red colour flowers on the Halt Hakik in front of which you are chanting mantra. In the similar manner, offer five pieces of Neem wood on Halt Hakik. After it, chant 5 rounds of this mantra with complete dedication. This procedure has to be done for 40 days.

And on next day again take new five red-coloured flowers and pieces of Neem for offering. And collect old flowers and Neem wood in one container and throw them in any uninhabited place.

And after completion of procedure, pray to Sadgurudev for success.

===

ONE EASY PROCEDURE ON AGATE FOR GETTING RID OF DISEASE (5 THURSDAYS)

After daily chanting 16 rounds of Guru Mantra, take 11 agate stones and 11 white coloured flowers. Then chant Guru Mantra 11 times on both of them and throw them in west direction.

But it has to be kept in mind that this procedure has to be repeated on agate stones for 5 Thursday and there should not be any disturbance in this procedure. But on other remaining days, 16 rounds of Guru Mantra have to be chanted.

And in last, most important fact is that while taking Sankalp (resolution), name of diseased person along with disease has to be mentioned.

RATN TANTRA – SOME FACTS

रत्न विज्ञानं के नए आयामों से परिचय कराता हुआ

ब्रह्माण्ड अनंत रहस्यों से युक्त है तथा इन्ही अनगिनत रहस्यों के अंतर्गत कई कई प्रकार के विविध रत्न उपरत्न की शक्तियों के बारे में सदियों से हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने बताया है.और इन रत्नों के माध्यम से एक व्यक्ति या साधक अपने जीवन को विविधताओं से युक्त कर सकता हैं अपने जीवन को भी भी प्रखरता युक्त बना सकता हैं और जीवन की उस उचाईयों को भी हस्तगत कर सकता हैं जो की सामान्य रूप से बिना इन दुर्लभ रत्नों के अगम्य हैं रत्न या रत्नमणि की विविधता मुख्य रूप से ४ प्रकार से अनुभव की जाती है और उसी के आधार पर रत्नमणि को चार भागो में विभक्त किया गया है.

1. सामुद्रिकरत्नमणि – समुद्र को सदैव से रत्नाकर की संज्ञा दी जाती हैं ,और १०८ दुर्लभ दिव्य विज्ञानं में से एक रत्नाकर विज्ञानं भी हैं ,समुद्र से प्राप्त दुर्लभ रत्न उपरत्न को सामुद्रिक रत्न मणि कहा जाता है. इसका सब से उत्तम उदाहरण मोती है.

2. वनस्पतियरत्नमणि – तंत्र का यह एक अत्यंत गुह्य पक्ष है जिसके अंतर्गत विविध रत्नमणि कोई कोई वनस्पतियों से प्राप्त की जाती है या फिर वनस्पतियों की सहायता से निर्माण किया जाता है, ऐसे रत्नों को वनस्पतिय रत्नमणि कहा गया है.

3. प्राणिजरत्नमणि – जिव अर्थात प्राणियो से अंग, शरीर आदि से प्राप्त रत्न को प्राणिज रत्नमणि कहा जाता है. सर्प मुक्ता, गज मुक्ता इत्यादि प्राणिज रत्न है.

4. खनिजरत्नमणि – खनिजरत्न मणि अर्थात जो खनिज स्वरुप में प्राप्त है या पृथ्वी तत्व की घनीभुतता से जिन रत्न उपरत्नो का निर्माण हुआ है वह रत्नमणि, इन रत्नों के बारे में जनमानस के मध्य काफी बाते प्रचलित है. इसका सब से उत्तम उदाहरण 'हीरा' है.

आपके सामने पञ्च महाभुत में से कुछ महाभूत से युक्त कुछ अत्यंत ही दुर्लभ प्रयोग आपके सामने हैं ,क्योंकि मानव जीवन तो पञ्च महाभूत युक्त हैं और जब इनसे सबंधित प्रयोग मिले जो अत्यंत ही तीव्र प्रभाव और सफलता प्रदायक हो ,साथ ही साथ इन प्रयोगों को जो सदगुरुदेव जी की कृपा से प्राप्त हुए हैं, को पूर्णता के साथ करना वास्तव में जीवन का एक सौन्दर्य ही कहा जा सकता हैं.

==

Universe is full of infinite secrets and under these innumerable secrets, from centuries our ancient sages and saints have told about powers of various types of gemstones and sub-gemstones. Through the gemstones person/sadhak can make his life multi-dimensional, make his life vibrant and achieve those heights of life which cannot be attained normally without these rare gemstones. Diversity of gemstones or Ratnmani is felt in four ways and based on it Ratnmani are divided into 4 categories.

- Saamudrik Ratnmani (Oceanic Gemstones) – Sea/ocean has always been called as Ratnakar (storehouse of gemstones) and one out of the rare 108 divine sciences is Ratnakar Science. Rare gemstones and sub-gemstones obtained from sea are called Saamudrikratnmani. Best example of it is Pearl.

- Vanaspati Ratnmani (Herbal Gemstones) – It is one of the most hidden aspects of Tantra under which diverse gemstones are obtained from some herbs or they are created with the help of herbs. Such gems are called Herbal gemstones.

- Praanij Ratnmani (Gemstones obtained from Creatures) –Gemstones obtained from body or body parts of creatures are called Praanij Ratnmani. Sarp Mukta and Gaj Mukta are Praanij gems.

- Khanij Ratnmani (Mineral Gemstones) – are available in mineral form or the gems/sub-gems which are formed due to density of earth element. Common public know a lot about these gems. Prominent example of this category is 'Diamond'.

Some of the rare prayogs related to some of elements out of 5 great elements are in front of you. Human life is composed of five great elements. If one gets such prayogs which are highly effective and success-providing and to add to that if they are obtained by grace of Sadgurudev, doing completely these procedures can be called beauty of life.

ABHIVART TANTRA MANI PRAYOG

दुर्लभ शत्रु मर्दन प्रयोग

"अभिवर्तेनमणिना येनेन्द्रोअभिवा वृधे"

अभीवर्त तंत्र मणि तंत्र का एक अद्भुत प्रयोग है. वस्तुतः यह मणि के भी विविध प्रकार है. यह मणि युद्ध विज्ञान तंत्र के अंतर्गत आती है. लोहे में नैसर्गिक रूप से यह गुण है की अगर उस पर मांत्रिक क्रिया की जाए तो वह उर्जा को अग्नि तत्व के रूप में परावर्तित कर सकता है.और इसी लिए लोहे से निर्मित कोई भी गोली या गुटिका को अभीवर्त तंत्र मणि कहा जाता है.यह मणि शत्रुओ के मर्दन के लिए अद्भुत कार्य कर सकती है. यह मणि अग्नि तत्व प्रधान मणि है.अग्नि तत्व प्रधान होने के कारण इसका असर भी तीव्रता युक्त होता हैं और अपने आप में जहाँ या जब भी कोई भी ऐसा कार्य जिसके कारण हमारी प्रगति में वाधा पड़ रही हो तो वहां पर इसे प्रयोग कर के अपना मनोवांछित हस्तगत किया जा सकता हैं.

क्योंकि अग्नि तत्व की गति हमेशा उर्ध्व मुखी होती हैं और सारी वाधाओ को नष्ट करके यह अपना रास्ता बना ही लेता हैं.ठीक यही गुण साधक की वाधाओ को नष्ट करके यह संपन्न करता हैं.

साधक यह प्रयोग किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी या अमावस्या को करे. समय रात्री में १० बजे के बाद का रहे.

साधक स्नान आदि से निवृत हो कर काले वस्त्र को धारण करे तथा काले आसन पर बैठ जाए. साधक को दक्षिण दिशा की तरफ मुख कर बैठना चाहिए. साधक गुरुपूजन एवं भैरव पूजन का क्रम करे तथा गुरु मन्त्र का जप करे. इसके बाद साधक अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करे की मैं अमुक (शत्रु का नाम) शत्रु (अगर एक से ज्यादा शत्रु है तो समस्त शत्रुओ के लिए) के उच्चाटन के लिए यह प्रयोग सम्प्पन कर रहा हूँ, भगवती चांडाली मुझे सफलता प्रदान करे.

इसके बाद साधक अपने सामने किसी पात्र में अभीवर्त तंत्र मणि अर्थात लोहे की एक गोली रख दे तथा उसको काजल लगाए.

इसके बाद साधक निम्न मन्त्र की २१ माला जप करे. साधक को यह जाप रुद्राक्ष माला से करना है. मन्त्र में अमुक की जगह शत्रु का नाम ले. एक से ज्यादा शत्रुओ के लिए 'समस्त शत्रु'

ॐ चाण्डाली शत्रुमर्दिनि अमुकं उच्चाटय उच्चाटय फट्

(OM CHAANDAALI SHATRUMARDINI AMUKAM UCCHATAY UCCHATAY PHAT)

मन्त्र जप पूर्ण होने पर साधक लोहे की गोली को तथा माला को शमशान में फेंक दे. यह कार्य दूसरे दिन भी किया जा सकता है. इस प्रकार एक ही रात्रि में यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है.भले ही यह एक दिवसीय प्रयोग हैं पर प्रयोग समाप्ति के बाद जब तक कार्य आपकी आशानुरूप समपन्न न हो जाए तब तक कम से कम एक माला जप तो प्रति दिन करना ही चाहिए .क्योंकि साधना की उर्जा को भी तो साधक में समाहित होने में समय लगता हैं .

ABHIVART TANTRA MANI – SHATRU MARDAN PRAYOG

“Abhivartenmaninaa Yenendroabhiva Vradhe”

Abhivart Tantra is amazing prayog of Mani Tantra. In fact there are many types of this Mani. This mani comes under Yuddh Vigyan Tantra. It is natural quality of iron that if mantrik procedure is done on it, it can transform energy into fire element. And that’s why any gutika or ball made of iron is called Abhivart Tantra Mani. This Mani can do amazing work for destroying enemies. This Mani has primacy of fire element due to which its effect is very intense. Whenever something is proving to be obstacle in our progress then we can make use of it and get desired results. Fire element always moves upwards and it can overcome all obstacles to make his own path. In the similar manner, this quality can destroy the obstacles of sadhak.

Sadhak should do this procedure on eighth day of Krishn Paksha of any month or on Amavasya. It should be done after 10:00 P.M in night.

Sadhak should take bath, wear black dress and sit on black aasan facing south direction. Sadhak should do Guru Poojan and Bhairav poojan and chant Guru Mantra. After it sadhak should take water in his palm and take Sankalp that I am doing this procedure for the Ucchatan of Amuk (name of enemy) enemy (if it is done for more than one enemy then foe whole enemy) , may Bhagwati Chaandaali provides me success.

After it, sadhak should keep Abhivart Tantra Mani i.e. one iron ball in any container in front of him and apply lampblack on it.

After it sadhak should chant 21 rounds of below mantra. Sadhak should use Rudraksh rosary for this purpose. In mantra, use name of enemy in place of Amuk. For more than one enemies use “Samast Shatru”

OM CHAANDAALI SHATRUMARDINI AMUKAM UCCHATAY UCCHATAY PHAT

After completion of chanting, sadhak should throw the iron ball and rosary in cremation ground. This can be done on the next day too.

In this manner, this procedure is accomplished within one night. It may be a one day procedure but if one still not gets desired results after completion of procedure then daily one round of this mantra should be chanted. It takes time for energy of sadhna to be imbibed by sadhak.

SHANKH MANI PRAYOG

आयुष्यवृद्धि के लिए एक अनूठा प्रयोग

दिविजातः समुद्रज सिन्धुतस्पर्याभृतः स नो हिरण्यजाः शङ्ख आयुष्प्रतरणो मणिः

अर्थात सूर्य के समान तेज वाले समुद्र से प्राप्त शंख रत्नमणि आयुष्य की वृद्धि करे.

यह जल तत्व प्रधान मणि है. मनुष्य शरीर का मुख्य तत्व जल तत्व जो की मनुष्य के शारीरिक ढाँचे के लिए कार्य करता है साथ ही साथ आयुष्य पर इसका अत्यधिक प्रभाव भी है. इस लिए शंख को आयुष्य प्रदाता कहा गया है. और ऐसा प्रयोग पाना तो जीवन का सौभाग्य हैं.

क्योंकि बिना पूर्ण आयु के भी सारे जीवन का कोई अर्थ नहीं हैं.वास्तव में देखा जाए तो निरोगी काया के बाद इसका ही सबसे ज्यादा अर्थ हैं मानव जीवन में क्योंकि अगर अल्पायु रहे तो भी कोई अर्थ नहीं और उच्चस्तर की उपलब्धियां हस्तगत करने के बाद जब पूर्ण आयु भी हो वह भी रोग मुक्त तब ही यह जीवन का सौन्दर्य कहलाता हैं .अतः एक ऐसा प्रयोग जिसके माध्यम से साधक की आयु मे वृद्धि और उसकी ऊर्जा में वृद्धि हो सकें यह भी कोई कम सौभाग्य की बात नहीं हैं.क्योंकि जहाँ आयु वृद्धि की बात हैं वहीँ पर यह भी एक निश्चित सा हैं की रोग रहित आयु हो .क्योंकि तभी तो आयुष्य वृद्धि का कोई अर्थ हैं . और यह प्रयोग ऐसा कर पाने में समर्थ हैं

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन से शुरू कर सकता है.

साधक यह प्रयोग दिन या रात्रि के किसी भी समय कर सकता है.

इस प्रयोग के लिए साधक को एक अत्यंत ही लघु शंख लेना चाहिए जिसको गले में पहना जा सके या तावीज़ में भर कर पहना जा सके.

साधक स्नान आदि से निवृत हो जाए तथा पीले रंग के वस्त्र को धारण करे तथा पीले आसन पर उत्तर की तरफ मुख कर बैठ जाए.

साधक अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाए तथा कोई पात्र उस पर रख दे. उस पात्र में केसर से 'ह्रीं' बीज लिखे. उसी के ऊपर साधक को वह शंख स्थापित करना है. साधक गुरु पूजन, गणेश पूजन को सम्प्पन करे तथा इसके बाद साधक गुरु मन्त्र का जाप करे. साधक शंख मणिरत्न का भी पूजन संपन्न करे. इसके बाद साधक न्यास करे.

करन्यास

ॐ ह्रीं श्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः

ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्ठकाभ्यां नमः

ॐ करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

ॐ ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्

ॐ ह्रीं श्रीं कवचाय हूं

ॐ ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्

न्यास होने पर साधक निम्न मन्त्र का २१ माला जाप करे. यह जाप साधक स्फटिक/ कमलगट्टे की माला से या शंख माला से जाप करे.

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ

(OM HREENG HREENG HREENG SHREENG SHREENG OM)

२१ माला पूर्ण होने पर साधक शंख को नमस्कार करे तथा उसको तावीज़ में या लोकेट के रूप में अपने गले में धारण कर ले. साधक यह शंख १ महीने तक धारण करके रखना चाहिए, इसके बाद भी साधक चाहे तो शंख को धारण कर के रख सकता है लेकिन कम से कम १ महीने तक धारण कर के रखना चाहिए. माला का विसर्जन नहीं करना है यह आगे भी साधनाओ के लिए उपयोग की जा सकती है.

SHANKHMANI PRAYOG –FOR INCREASE IN LIFE

Divijaatah Samudraj Sindhutasparyabhritah Sa No Hiranyjaah Shankh Aayushprtarno Manih i.e. Shankh (conch) Ratnmani obtained from ocean has intensity of sun and increases life.

This Mani has primacy of water element. Water element, main element of human body works for the body structure of human. Along with it, it has high influence on life. That's why conch has been called life-provider. And attaining such procedure is auspiciousness of life because without complete age, life has got no meaning. In reality, in human life it is most important thing after disease-free body because there is no meaning of living underage life. It is beauty of life to live a complete and disease free life after attaining high-level achievements.Therfore, getting one such procedure through which there is increase in age and energy of sadhak is very auspicious. Because whenever we talk about increase in life, it is implicit that it should be disease-less life. Then only increase in life has got meaning. This procedure is capable of doing such a thing.

Sadhak can start this procedure from any auspicious day.

This procedure can be done by sadhak anytime in day or night.

For this procedure, sadhak should take one very small conch which can be worn in neck or can be filled in amulet and then worn.

Sadhak should take bath, wear yellow dress and sit on yellow aasan facing North direction.

Sadhak should spread yellow cloth on Baajot in front of him place a container on it. Write "HREENG" beej in that container with saffron. Sadhak should then establish conch upon it. Sadhak should perform Guru Poojan and Ganesh Poojan and then chant Guru Mantra. Sadhak should poojan of Shankh Maniratn too. After it, sadhak should do Nyas procedure.

KAR NYAS

OM HREENG SHREENG ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

OM HREENG SHREENG TARJANIBHYAAM NAMAH

OM HREENG SHREENG SARVANANDMAYI MADHYMABHYAAM NAMAH

OM HREENG SHREENG ANAAMIKAABHYAAM NAMAH

OM HREENG SHREENG KANISHTKABHYAAM NAMAH

OM KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAS

OM HREENG SHREENG HRIDYAAY NAMAH

OM HREENG SHREENG SHIRSE SWAHA

OM HREENG SHREENG SHIKHAYAI VASHAT

OM HREENG SHREENG KAVACHHAAY HUM

OM HREENG SHREENG NAITRTRYAAY VAUSHAT

OM HREENG SHREENG ASTRAAY PHAT

After nyas procedure, sadhak should chant 21 rounds of below mantra. This can be done by crystal/Kamalgatta rosary or conch rosary.

OM HREENG HREENG HREENG SHREENG SHREENG OM

After completion of 21 rounds, sadhak should pray to conch and wear it in his neck in from of amulet. Sadhak should wear it for one month. If sadhak wishes, he can continue wearing it but at least it should be worn for one month. Rosary should not be immersed. It can be used for sadhnas in future.

दर्भमणि तंत्र प्रयोग

DARBH MANI TANTRA PRAYOG

सुरक्षा प्राप्ति प्रयोग हेतु एक अद्भुत प्रयोग

दर्भमणि को तंत्र तथा रसायन में अभ्रक कहा गया है. अभ्रक का एक छोटा सा टुकड़ा भी अपने आप में एक मणि है. तंत्र तथा पारद के क्षेत्र में अभ्रक का अत्यधिक महत्त्व है, यह मणि वायु तत्व प्रधान मणि है.पञ्च महाभूतो में वायु तत्व में जो गुण हैं की वह दिखाई नहीं देता इस कारण यह सुरक्षा प्रदान करने में प्रबल सहयोगी कारक सिद्ध होता हैं.आज सुरक्षा की किसे नहीं आवश्यकता हैं ,काल का प्रवाह कहें या आज के जीवन की विषमता की कोई भी कहीं पर भी सुरक्षित नहीं हैं,और जीवन की असुरक्षा के साथ साथ, जीवन से जुडी अन्य चीजों जैसे जोब की सुरक्षा आदि भी तो एक आवश्यक अंग हैं इस कारण आज इस प्रयोग की प्रबल आवश्यकता हैं.और जो साधक होता हैं वह किसी एक प्रयोग को करके बैठा नहीं रहता हैं बल्कि वह तो लगातार साधना करते रहता हैं कारण साधना करना तो उसके लिए एक अनिवार्य सी प्रक्रिया हो जाती हैं जैसे जीवन के लिए श्वास जरुरी हैं ठीक वैसे ही साधना भी तो एक अत्यावश्यक अंग हैं.

इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति अपने घर परिवार के लिए पूर्ण सुरक्षा की प्राप्ति कर सकता है, बाधाओं से मुक्ति पा सकता है तथा अगर घर परिवार में कुछ मनमुटाव है तो उसे भी खत्म कर घर में पूर्ण शांति का वातावरण स्थापित किया जा सकता है.

यह प्रयोग साधक किसी भी शुभ दिन से शुरू कर सकता है. समय दिन या रात्रि का कोई भी रहे.

साधक स्नान कर लाल वस्त्रों को धारण करे तथा लाल आसन पर बैठ जाए. दिशा उत्तर रहे.

इसके बाद साधक अपने सामने एक छोटा सा टुकड़ा सफ़ेद रंग की अभ्रक का रख दे. साधक इस टुकड़े को कुमकुम से पोत दे. साधक गुरु पूजन, गणेश तथा भैरव पूजन करे. गुरु मंत्र का जाप करे.

साधक को इसके बाद न्यास करना चाहिए.

करन्यास

क्षां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

क्षीं तर्जनीभ्यां नमः

क्षूं सर्वानन्दमयि मध्यमाभ्यां नमः

क्षें अनामिकाभ्यां नमः

क्षौं कनिष्टकाभ्यां नमः

क्षः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास

क्षां हृदयाय नमः

क्षीं शिरसे स्वाहा

क्षूं शिखायै वषट्

क्षैं कवचाय हूं

क्षौं नेत्रत्रयाय वौषट्

क्षः अस्त्राय फट्

न्यास होने पर साधक निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जाप करे. यह जाप साधक मूंगा माला से करे.

ॐ क्रीं क्षौं (OM KREENG KSHAUM)

मन्त्रजाप के बाद साधक को अभ्रक का टुकड़ा अर्थात दर्भमणि को अपने पूजा स्थल में स्थापित कर दें. इस प्रकार यह प्रयोग पूर्ण होता है. साधक इस प्रयोग में उपयोग की गई माला को शक्ति साधना में उपयोग किया जा सकता है.

===

DARBHMANI – FOR ATTAINING SECURITY

Darbhmnani has been called Mica in tantra and chemistry. A small piece of mica is a gem in itself. In field of tantra and Mercurial science, mica is very much significant. This gem has primacy of air element. Out of five great elements, air element has quality that it is not visible. As a result, it proves to be beneficial in providing security. Who does not need security, may be it is demand of time or complexities of today's life , nobody is secure nowhere and along with insecurity of life, things connected to life like Job security is important element. That's why this prayog is needed the most. Sadhak does not become idle after doing a procedure; rather he continuously keeps on doing sadhna. Sadhna becomes an essential procedure for him. As breath is important for life, sadhna is also most important part of life.

Through this procedure, sadhak can attain complete security for his family, get rid of obstacles and if there is some dispute in family, it can be resolved and peaceful environment can be established at home.

Sadhak can do this procedure from any auspicious day. It can be done anytime in day or night.

Sadhak should take bath, wear red dress and sit on red aasan facing North direction.

After it, sadhak should keep one small piece of white-coloured Mica in front of him. Sadhak should apply vermillion all over it. After it, sadhak should perform Guru Poojan, Ganesh and Bhairav poojan. Sadhak should then chant Guru Mantra.

Thereafter, sadhak should do Nyas procedure.

KAR NYAS

KSHAAM ANGUSHTHAABHYAAM NAMAH

KSHEEM TARJANIBHYAAM NAMAH

KSHOOM SARVANANDMAYI MADHYMABHYAAM NAMAH

KSHAIM ANAAMIKAABHYAAM NAMAH

KSHAUM KANISHTKABHYAAM NAMAH

KSHAH KARTAL KARPRISHTHAABHYAAM NAMAH

HRIDYAADI NYAS

KSHAAM HRIDYAAY NAMAH

KSHEEM SHIRSE SWAHA

KSHOOM SHIKHAYAI VASHAT

KSHAIM KAVACHHAAY HUM

KSHAUM NAITRTRYAAY VAUSHAT

KSHAH ASTRAAY PHAT

After completion of Nyas, sadhak should chant 21 rounds of below mantra. Sadhak should use Moonga rosary for chanting.

OM KREENG KSHAUM

After completion of chanting, sadhak should establish piece of mica i.e. Darbhmnani in worship place. In this manner, this procedure is completed. Rosary used in this procedure can be used in Shakti sadhna.

SWARN RAHSYAM -14

अत्याधिक महत्वपूर्ण लेख :एक बार पुनः आपके लिए

इस समय आवश्यक हैं की हम एक बार फिर से इन तथ्यों को समझे ...

मैं ध्यान पूर्वक महानुभाव की बातें सुनने लगा .धातुवाद का महत्त्व मेरे लिए गौण ही था परन्तु ये भी रस तंत्र का एक अद्भुत भाग है और है भी बहुत आकर्षक . इसलिए सदगुरुदेव की ही इच्छा मानकर और ज्ञान वर्धन के लिए उपयोगी समझ उन वाक्यों को अपने अन्तः भाव में आत्मसात करने लगा .

महानुभाव अपनी ही मौज में कहने लगे की .... क्या , आप जानते हैं धातुवाद का क्या महत्त्व है एक रस साधक के लिए ??????

मैंने कहा शायद पूरी तरह नहीं ......

हम्म्म .... धातुवाद या लोह सिद्धि रस तंत्र की एक अद्भुत क्रिया है जिसके द्वारा निकृष्ट धातुओं जैसे की लोहा, रांगा,सीसा, जस्ता,ताम्बा, पीतल, आदि को रजत या स्वर्ण में पूर्णरूपेण परिवर्तित किया जाता है.

यहाँ तक की पारद को भी स्वर्ण में तबदील किया जा सकता है .जिस प्रकार सिद्ध रस का निर्माण कर समस्त ब्रह्मांडीय रोगों का नाश किया जा सकता है. निरोगी देह और लंबी आयु प्राप्त की जा सकती है. वैसे ही उस सिद्ध रस के द्वारा स्वर्ण का निर्माण भी किया जाना संभव है . यहाँ मैं ये बता दूं की यदि सिर्फ स्वर्ण निर्माण के लिए

सिद्ध रस का निर्माण किया जाये तो वो कभी भी निर्मित नहीं हो सकता . क्यूंकि पारद इस प्रकृति का सर्वाधिक चैतन्य तत्व है , साधक के मनो भावों को पढ़ कर , पात्रता को परखने के बाद ही सफलता प्रदान करता है . जब साधक का ध्येय मात्र स्वर्ण सिद्धि होता है तब ये तो निश्चय ही सत्य है की साधक का मनोरथ अर्थ प्राप्ति है ना की परम तत्व की प्राप्ति . अब ऐसे में आप रस सिद्धि के अधिकारी भला कैसे हुए.

क्यूंकि शरीर को रोगमुक्त करना भी मात्र इसलिए जरुरी नहीं है की आप सुखों का उपभोग करे बल्कि उस अविनाशी आत्मा को आप एक तेजस्वी देह प्रदान कर सके जिससे की वो उस परम रूप को प्राप्त कर सके. सुखों का उपभोग करना गलत नहीं है , गलत है उपभोग के लिए जीवन जीना . शरीर- योग या भक्षण रस संस्कार में १८

वां है , और इसके पहले का संस्कार वेधन है .... है ना???

जी ...जी बिलकुल. मैंने कहा .

वो मात्र इसलिए क्यूंकि ये मानव शरीर और जीवन अनमोल है . केवल मानव ही ये निर्धारित कर पाता है की वो किन कर्मो को अपने जीवन में अपनायेगा वो जो उसे देवत्व की और ले जायेंगे या फिर वो जो उसे असुरत्व की और ले जायेंगे. जगत पलक को भी अपनी लीलाएं दिखाने के लिए ,

ज्ञान और शिक्षा के प्रसार के लिए मानव शरीर का आलंबन लेना पड़ता है , ऐसा नहीं है की वो लीलाओं को विदेह होकर नहीं कर सकता , परन्तु तब हमें एकात्मता तो अनुभव नहीं होगी ना.

यहाँ एक बात मैं आप को बताता हूँ की शरीर योग या भक्षण और वेधन संस्कार वास्तव में ये संस्कार हैं ही नहीं ये तो क्रामन संस्कार के बाद की दो क्रियाएँ हैं जिनके द्वारा ये परखा जाता है की वो रस सही तरीके से निर्मित हुआ है या नहीं. शरीर पर प्रयोग करने से पहले या उसे भक्षण करने से पहले उस रस को,

धातु पर प्रयोग कर के देखते हैं की वो उसमे उत्क्रांति करता है या नहीं . यदि वो रस धातुगत समस्त न्यूनताओं को दूर कर उसे दिव्य स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है तभी ये माना जाता है की वो शरीर में भी उत्क्रांति कर दोषों को नष्ट कर दिव्यता प्रदान करेगा. स्वर्ण को दिव्य धातु मानने का कारण ही ये है की इसे आप कितना भी तपाओ , कितनी भी देर तक अग्नि में रख कर गलाओ .इसके भर में कोई अंतर नहीं.

आता बल्कि जितना आप इस तपाते हैं उतना ही ये सुन्दर वर्णीय होते जाता है . अन्य धातुओं को आप जब अग्नि पर गलाते हैं तो ठंडा करने पर ये मूल भार से हर बार कम होते जाते हैं. अर्थात उनमे दोष हैं. अग्नि जैसे धातुओं की परिक्षण की कसौटी होती है वैसे ही परिस्तिथियाँ मानव जीवन की कसौटी होती है . और जब तक आपमें दोष होते हैं तब तक आप विशुद्ध हो ही नहीं सकते.मूल रूप को प्राप्त ही नहीं कर सकते.धातु के अन्तः और बाह्य दोषों का नाश होने पर ही वे स्वर्ण में परिवर्तित हो पाते हैं.

पर धातुवाद की ये क्रियाएँ इतनी सहज नहीं है .इसके लिए न जाने कितनी तैयारियां की जाती हैं.

मैंने पूछा ... कौन कौन सी तैयारियां करनी पड़ती हैं??????

स्वर्ण सिद्धि या देह सिद्धि की मंजिल तक पहुचाने के लिए खुद पारद को पञ्च यात्रा करनी पड़ती है. उन्होंने कहा.

कैसी यात्रा? मेरा प्रश्न था.

पारे से पारद , पारद से रस , रस से रस राज , रस राज से रसेंद्र तक की यात्रा .

इससे क्या होता है और ये कैसे किया जाता है.????

प्रकृति में जो पारद पाया जाता है वो कंचुकी युक्त होता है. अर्थात विषमय होता है जब उसकी कन्चुकियों और विष को समाप्त करना हो तो उसे शुद्ध किया जाता है . कुमारी रस, रक्त चित्रक मूल रस, रजनी चूर्ण, स्वर्ण गेरू और लहसुन रस के द्वारा ३ दिन तक खरल करने से पारा शुद्ध हो जाता है और कंचुकी रहित भी . ये पारा अब पारद कहलाता है . जो की नील वर्णीय होता है . इसी पारद पर ही संस्कार की क्रिया संपन्न की जाती है . अब इस पारद को रस बनाने के लिए अष्ट संस्कार किये जाते हैं.ये अष्ट संस्कार गुणाधान का कार्य करते हैं और पारद को वीर्यवान भी.गुरु द्वारा निर्देशित और शास्त्र सम्मत तरीके से ही ये संस्कार होना चाहिए.

समय अधिक लग जाये चलेगा ,पर जल्दबाजी में किया गया कार्य सफलता नहीं देगा. इसलिए पूरे धैर्य के साथ संस्कार करना चाहिए.

यदि आपने पारद का चयन पूर्ण सावधानी के साथ किया हुआ है, और संस्कार भी सही तरीके से किये हुए हैं तो आपने आधा कार्य सही तरीके से कर लिया. एक महत्त्वपूर्ण बात याद रखना जरुरी है की पारद के साथ साथ सभी रसो, उपरसो , धातुओं और उप्धातुओं का शुद्धिकरण होना अत्यंत आवश्यक है. यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो जब आप इन में से किसी भी पदार्थ का संयोग पारद के साथ करते हो तो पारद फिर से दोष युक्त हो जायेगा और उसका वेध प्रभाव लगभग खत्म ही हो जायेगा..

यहाँ तक की स्वर्ण ग्रास के लिए जो स्वर्ण बाजार से लाया जाता है वो भी दोष युक्त होता है अतः उस विधान की जानकारी भी होने चाहिए.

यदि पारद को स्वर्ण ग्रास दिए बगैर आप रसखोट या भस्म बनाते हैं तो भला बीज जारण करे बगैर वो स्वर्ण ही नहीं बना पायेगा. हाँ यदि स्वर्ण युक्त दिव्यौश्धियों से संस्कार संपन्न हुए हैं तो कुछ और बात है.

कुछ महत्वपूर्ण बातें मैं यहाँ पर प्रकट कर रहा हूँ.... जो की रस साधकों के लिए ध्यान रखने योग्य है जिसका ध्यान रस कार्य करते समय यदि साधक रखता है तो उसकी सफलता का प्रतिशत बढ़ जाता है ,बाकि पूर्ण सफलता तो सदगुरुदेव के आशीर्वाद से ही संभव है.

रस कार्य जितना वैज्ञानिक कर्म है उतना ही साधना कार्य भी. रसेश्वर , रसान्कुशदेवी का नित्यार्चन अनिवार्य है . रस सिद्धों का ध्यान कर उन्हें नमन करते हुए यदि पारदेश्वर का अभिषेक किया जाये तो कई गुप्त सूत्र स्वयं ही स्पष्ट होते जाते हैं.

कनकावती साधना, वट-यक्षिणी साधना ,कनक-प्रभा साधना,कनक-धारा साधना,स्वर्नाकर्षण भैरव साधना, महाकाल भैरव साधना, स्वर्णसिद्धि साधना आदि में से कोई एक साधना को तो अवश्य ही करना चाहिए जिससे की आपको पूर्ण अनुकूलता मिले. यदि तारा महाविद्या के गुप्त रहस्य सदगुरुदेव से प्राप्त हो सके तो निश्चय ही सफलता आपकी अनुगामी होगी. हाँ रसेश्वरी दीक्षा के बगैर तो इस मार्ग पर बढ़ा ही नहीं जा सकता.

प्रत्येक तत्व के गुणों की जानकारी साधक को होनी ही चाहिए .प्रत्येक तत्व का अपना महत्त्व होता अहै रस कार्य की सिद्धि के पथ पर , जैसे नमक को सामान्य समझना ही गलत है . नमक को यदि सही तरीके से रस कार्य के लिए रस शाला में तैयार किया जाये तो ये पारद का क्रमण गुण तो बढाता ही है साथ ही साथ अन्य

धातुओं के अन्तः गत दोषों को भी साफ़ कर धातुओं को उज्जवल करता है . क्या पता है आपको की पारद के ऊपर इतना परिश्रम क्यूँ किया जाता है,ताकि उसका पक्ष-क्षेदन किया जा सके ताकि वो किसी भी पिघली हुयी धातु या गर्म धातु में मिल सके . पारद को रूह कहा जाता है और जब किसी भी धातु के शरीर में रूह का समावेश हो जाता है तो वो रुक्म मतलब स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है . यहाँ धातु से अभिप्राय उन धातुओं से है जिसका गलनांक पारद से कही ऊपर हो , जैसे की ताम्र, रजत, लोहा आदि.

और ये तभी संभव हो पाता है,जब पारद अग्निसह्य हो गया हो. इसके लिए गर्भद्रुति और अभ्रक का मिलाप पारद से किया जाता है . ये सब अति गोपनीय और कठिन क्रियाएँ हैं जिनके लिए सतत गुरु मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है . पर इसका एक छोटा सा रास्ता भी जिसका मात्र मैं संकेत ही कर सकता

हूँ ..... और वो ये है की मात्र नमक को खास तरीके से यदि तैयार किया जाये तो ये नमक ही पारद को अग्निसह्य कर देता है .तथा अन्य सभी उड़नशील तत्वों को भी ये अग्निस्थायी कर देता है.

इसी प्रकार कुछ विशेष वनस्पतियों तथा क्रियाओं का संयोग करने से ये पारद आपके मनोरथ को पूर्ण कर देता है.

(अगले लेख में बाकि सूत्रों का विवरण आप सभी के समक्ष शीघ्र ही करूँगा.)

Swarna tantra part 14

I was listening that eminent person’s talk very attentively…well significance of Alchemy(Dhatuwaad) was quite secondary for me. But ist is a wonderful part of alchemy and attractive too.So I thought it was revered Sadgurudev’s wish and its knowledge worthy too.Therefore I started imbibing it.

In such a delighted way he started telling and asked - do you know the importance of alchemy for an alchemist?

I said not in complete sense…

Hmmm... Alchemy and loh siddhi is an ultimate and wonderful activity of a Ras Tantra via the crude metals like tin,led,copper,zinc,bronze are converted into silver and gold.In fact alchemy can be converted into Gold.As far as siddh ras is produced and any disease type of whole universe can be cured by it…In fact the long live age and absolutely fine health can be achieved.From this siddh ras only the gold can be formed.Here I would like to tell you if you would produce siddhh ras just for sake of gold formation so you may not succed.As alchemy is the extreme soulful fact of our environment. By reading sadhaks mind n soul,by inspecting the worthiness then only he can taste the success.When his target is to produce gold,then it is confirmed that he wished to have money from it. Means he is pursuing whole act for sake of money not for the achievment of Param Tatva..Now you think are you hold right to achieve Ras Siddhi?

Then how can you ask for the success?

Because it is not necessary to keep the body fit n fine just for enjoying the materialistic happiness in life but also bestowing the glorious and irradiating body to that immortal soul via he can reach upto the the ultimate truth i.e. Param Tatva. See I m not saying the consumption of all materialistic amenities is wrong.what is wrong is to live life for such a materialistic thing… Sharir Yog or devouring (bhakshan) is the 18th sanskar of Ras and before that penetrating(Vedhan) is there. Isnt it??

I said Yes… yes of course..

It is because this human body and life is very important… as only humankind have the sense to take decision regarding his lih life path which will take him to divinity or demonity…Even that almighty has to take the dependency of this human body to show different plays..It is not like that he cannot make realises us by bodyless should but then how we will be able to get the realization of one nature.

Here I would like to tell you all that actually the Sharir Yog or bhakshan and Vedhan sanskar are the two activities which comes later the Kraman.. via which is inspected whether the produced ras is proper or not.Before experimenting it on our body or before bhakshan we need to experiment it on that metal and have see the results whether it has been changed(utkranti) or not.

If that ras converts and keeps away all the deficiencies and transformed into gold then only it is certified and used for body transformation and to deliver divinity. Why gold has been considered the divine metal than others because there would be no difference in wieght if you put gold into fire for long time,for melting..though it will become more pure,glitter and beautiful.In the same way if you put any other metal in fire it will be give reduced wieght afterwards.hence they are faulty.

Fire is the examined touchstone of all metals likewise conditions are the touchtone of human life.And till the time you are full of faults you cannot become pure.cannot earn the exact form. Metal is converted into gold only when it inner and outer part became faultless.

Hmmmm but these activiteies are not that easy to learn.dont know how much preparation has to be done for this… So I asked which type of preparation has to be done??

He said….To reaching at the stage of Swarna Siddhi and Deh Siddhi Parad ownself has to attempt five journeys..

I asked…Which journey you are talking about?

Para to Parad,Parad to ras, ras ro rasraj and rasraj to rasendra's journey..

What happens from it? And how it has to be done?

The alchemy which is found from the natural source is full of layers…means it is full of posionous layers.For vanishing these layers it has to go from the process of purification.By for three continous days with the Kumari ras, rakt chitrak mool ras,rajni churna,swarna gairik and lehsun ras becames pure.It is known as Parad which is slightly in blueish color.And on this parad only all sanskar has been done.And for making it into Ras the asthasanskar has to be attempted.it works like gundhan and makes it courageous and vigorious.All this must be attempted under the Guru's guidence and with religiously. If it completes in extra time,its ok but not to be attemted in hurry.Therefore one has to keep patience while proceeding all this.

See,if you have selected Parad with full of awareness and attempted all sanskar as mentioned so you have won the half battle.One more thing should be keep in mind while doing i.e. along with the Parad it is quite important to purify all other upras, metals, submetals also.Because if you use it without purifying state with the Parad then again Parad becomes faulty and all the hardwork would nullify...

Infact the gold which is come up in market is also in the fault state.So this also we should know how to tackle.

Without swarna gras if you use Parad for raskhot and bhasma and even without the beejjagran then how it will convert into gold? But it would be altogether different if divine medicinal gold is used.

Therefore I would really like to tell u all while going through such process one must keep all these point in mind and attempt so the success percentage would definitely increase.Rest all depends on the blessings of Shreesadgurudev.

However the ras karya is scientific as much as it is Sadhna karya too.Daily worshipping of Raseshwar and Rasankushdevi is very necessary.While keepinh in mind about the ras sidhhs and meditating way and worshipping the pardeshwar with sprinkling water various secrets forms comes infront of us by their own.

For achieving ultimate comforts in life atleast one must attempt any one of this i.e.Kankawati Sadhna,Wat-Yakshini Sadhna,Kanak-Prabha Sadhna,Kanak Dhara Sadhna,Swarnakarshan Bhairav Sadhna,Mahakaal Bhairav Sadhna, Swarnasiddhi Sadhna.If you get the secrets of Tara Mahavidya from Sadgurudev then success will follow you..Yess without raseshwari diksha you cannot step forward…

Knowledge of each fact must be known by sadhak.As each have their own importance on the path of Ras siddhi.Like understanding salt as a common element is totally wrong.If normel salt has been prepared in right way in ras shala then it enhance the strenghth of parad along with that it really vanish all the faults of other metals and glittered them.Do you know why this many hardworks are attempted on the Parad because to attempt the Paksha Shkedhan i.e. to be melt and get gel up with any other dissolve stated melt metal.

It has been called as soul and when it is involve with any metal then it becomes soulfull body i.e. converted gold.Here metal is used in such context which melting level is too high as compared to Parad for e.g. copper, silver,iron etc..

And this is possible only when it is flamed properly..For this Garbhdruti of loh,vajra and Abhrak has to be mix with the Parad.these are very secrets and difficult process of ras for which the guidance of Sadgurudev is required and essential. Well apart from this way there is another small way which I can only indicate you i.e. if you prepared the salt especially in such way so it only can do parad agnisahya and rest udansheel facts also with the another metals too..

In the same way from different Herbs,elements and activities you can achieve and completes your all wishes…

(In next article I will disclose rest of the keys in front you as early as possible)

सरल लक्ष्मी साधना

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

धन धान्य प्रदाता लक्ष्मी प्रयोग अब इसे एक बार तो करके देखिये

आदिकाल से आज तक, और आज के इस समय मे तो सिर्फ और सिर्फ धन ही मानव की स्थिति का एक मात्र परिचायक हैं, यहाँ तक आचार्य चाणक्य ने भी लिखा हैं की मैं भी वही और मेरी और मेरी विद्या भी वहीँ पर सिर्फ एक धन के न होने के कारण आज मेरी यह स्थिति हैं की कोई भी मुझे नही पूंछता न ही कोई मेरा सम्मान करता हैं.और जब इतने उच्चकोटि के योगी साधक विद्वान ने यह लिखा हैं तो निश्चय ही इसमें कोई दो राय नही की,

धन आज मानव जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता ही बन गया हैं और जीवन के सभी स्तंभ मानो उसी पर टिके हैं.इस हेतु आज हर साधक को धन का महत्त्व समझना ही चाहिये और निश्चय ही कोशिश करके ऐश्वर्यवान होना ही चाहिये.

स्वयम सदगुरुदेव ने कई कई बार इस तथ्य का उदहारण दिया हैं की मेरे हर शिष्य को ऐश्वर्यवान होना ही चाहिये और इसलिए ही तो उन्होंने इतनी अधिक लक्ष्मी साधनाए दी हैं. सामान्यत: साधक इन लक्ष्मी साधना को बहुत ही हलके स्तर पर लेते हैं उनके मन मे बृहद साधनाओ के प्रति एक अलग सी रूचि रहती हैं पर सदगुरुदेव जी ने इस तथ्य को समझाया हैं की खासकर लक्ष्मी साधनाओ मे बृहद साधनाओ की अपेक्षा लघु साधना जयादा लाभ प्रद देखी गयी हैं .और उनका परिणाम भी जल्दी प्राप्त होता हैं.अतः साधको को इन सामान्य से सरल सी लगने वाली लक्ष्मी साधनाओ को भी अपने दैनिक जीवन मे एक स्थान देना ही चहिये और सफलता का अनुभव भी करना चाहिए.

ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मयै श्रीं श्रीं ॐ नमः .

इस अद्वितीय मंत्र को बस एक माला मंत्र जप प्रतिदिन यदि दैनिक पूजन मे स्थान देना ही चाहिये.और जीवन मे धन आगमन का भी प्रयास भी करें साधना और जीवन मे कर्म का सुखद संयोग भी रहना चाहिए .

Saral Lakshmi Prayog

From ancient times till today and especially in today's era money is one and only indicator of condition of person. Even Acharya Chanakya has written that I and my knowledge are still the same but it is the absence of money which has brought about such a condition where no one gives me consideration and respect. When such high-level Yogi, sadhak and scholar has written it then definitely there can't be two opinions on the fact that money has become most important necessity of human life and it seem that all pillars of life rests on it.Therefore, every sadhak should understand the importance of money and definitely try to become prosperous.

Sadgurudev himself on so many instances has stressed on this particular fact that my each and every disciple should be prosperous and that is precisely the reason why he gave lot of Lakshmi sadhnas. Generally, sadhak considers this Lakshmi sadhna in very casual manner, they have got lot of interest in big sadhnas but Sadgurudev has told that especially in case of Lakshmi sadhnas, as compared to big sadhnas , small sadhnas have seen to be much beneficial and fruits of them are also obtained very quickly. Therefore, sadhak should give place to this seemingly simple and easy Lakshmi sadhnas in their daily life and experience success too.

Om shreem shreem mahalakshmayai shreem shreem om namah.

One should chant just one round of this amazing and unparalleled Mantra during daily poojan and make an effort to earn money too. In both sadhna and life, pleasant synthesis of Karma should be done.

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

1. हर महीने एक शिवरात्रि आती हैं तो जिनके भी घर मे अपने जीवन साथी से कुछ क्लेश्कारक स्थिति बनती रहती हो, वह शिव रात्रि से हर दिन प्रातकाल उठकर जिस मटके से घर के लोग जल पीते हो उससे एक लोटा जल निकाल कर घर के चारो ओर छिडक दें ,पर यह लोटे से किसी अन्य को जल नही पीना चाहिये .
2. शयन कक्ष मे डबल बेड का विस्तर एक ही होना चाहिये अगर डबल बेड मे दो विस्तर बिछे हैं तो यह स्थिति पति पत्नी के लिए अनुकूल नही होती है.
3. शयन कक्ष मे हमेशा मनोहारी और स्नेह बढ़ाने वाले चित्र लगाये भूल कर भी किसी युद्ध या क्रोध मुद्रा वाले चित्र नही लगाना चाहिए .

4. हर गृहस्थ के घर मे कनकधारा स्त्रोत का ११ या कम से कम १ पाठ तो होना ही चाहिये, यह घर मे सुख संपत्ति बढ़ाने वाला और मंगल कारक होता हैं .

5. सफ़ेद कपड़े एक झंडा सा बनवा कर, उसे पीपल के पेड़ मे लगा दें. इससे व्यापार मे आने वाली रुकावटे दूर होने लगती हैं.

6. जिन्हें भगवती लक्ष्मी की कृपा चाहिये, उन्हें दोनों हाथो से अपने सिर को नही खुजलाना चाहिये.

7. जिन्हें भगवती लक्ष्मी की कृपा चाहिये, उन्हें चाहिए की कोशिश करें की घर मे कबाड इकठ्ठा न हो .

8. किसी भी प्रकार का दोष को दूर करने मे भगवान हनुमान की उपासना का तो अपना ही महत्त्व हैं और इतना ही नही उन पर लगाये गए सिंदूर के भी अनेको चमत्कारिक प्रयोग हैं,जिनमे से एक यह हैं की उनके कंधे पर लगा हुआ सिंदूर को अपने माथे पर लगा लेने से व्यक्ति को अगर कोई नज़र आदि दोष लगा हो तो उसका निराकरण भी हो जाता हैं .

9. अपने शयन कक्ष मे दर्पण नही लगाना चाहिये ,और अगर हैं तो उसे हटा दें या उस पर एक कपड़ा जब उसका प्रयोग न किया जा रहा हो तो उससे ढांक दें .

10. शयन कक्ष मे इसी तरह जल भी नही रखा जाता हैं इस बात पर भी विचार करें.यह सबंधो मे तनाव लाता हैं .

Totke for you

- Those who are facing some conflict with their life partner, from Shiv Raatri of any month every day they should get up in the morning and take one mug of water from earthen port and sprinkle it all around the house. But nobody should drink water from that mug. Shiv Raatri comes every month.

- There should be only one bedding on double bed in bed room. If there are two beddings on double-bed, then this situation is not favorable for wife.
- Always erect pleasing and lovely pictures in bedroom. Even by mistake, any picture of war or depicting anger should not be erected.
- Every householder should read Kanakdhara Stotra 11 or at least 1 time. It is auspicious for house and adds to its pleasure and wealth.
- Make any white cloth flag and erect it on Peepal tree. It helps in getting rid of business hurdles.
- Those aspiring for grace of Bhagwati Lakshmi should not scratch their head by hands.
- All those who wish to attain grace of Bhagwati Lakshmi; they should try that no dust should pile up in their home.
- Hanuman worship carries a lot of significance in getting rid of any type of fault and not only this, sindoor applied on him has got lot of miraculous prayogs. One out of them is that applying sindoor (which is applied on his shoulders) on his forehead saves person from any evil eye in future and if person is already suffering from evil eyes, it is removed.
- No mirror should be placed in bedroom. And if it is present, either get rid of it or cover it with one cloth when it is not being used.
- In the similar manner, water is also not kept in bedroom. This fact should also be kept in mind. It also disturbs relations.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

आयुर्वेद

1. अगर हर दिन प्रातकाल एक नीबू को एक गिलास जल मे मिलकर पिया जाए तो इससे वात सम्बंधित रोगों की तकलीफ दूर करने मे बहुत आराम मिलता हैं.
2. अगर फल खाने के साथ साथ दिनमे थोडा बहुत व्यायाम तथा कुछ शरीर की साफ सफाई भी कर ली जाए तो यह उन फलों के गुणों को आपके अंदर और तीव्रता से असर देने मे सहायता करेगा.
3. साधारणतः कहा जाता हैं कि सुबह वासी मुंह मतलब बिना मंजन किये फल खाए जाएँ तो लाभ की आशा कहीं और ज्यादा हो सकती हैं.
4. फल खाने के बाद लगभग घन्टे आधे घंटे पानी नही पीना चाहिये.

5. बेल के शर्बत का या बेल को खाने से पेट की कब्ज आदि समस्याये दूर करने मे बहुत सहायता मिलती हैं.

6. अमरुद भी कब्ज रोग दूर करने मे बहुत आधिक सहायता करता हैं,इस बात का ध्यान रखना चहिये कि जिन्हें कब्ज आदि रोग हैं उन्हें फल आदि का सेवन जायदा करना चहिये और जहाँ तक संभव हो बाज़ार की दवाईयों जो इस विषय से सबंधित हो से दूर ही रहें क्योंकि इनके दूरगामी परिणाम बहुत लाभदायक नही हैं.

7. अमरुद जैसे फल का लाभ पाचन शक्ति बढ़ाने मे और ह्रदय ,मस्तिष्क आदि को बल प्रदान करने मे बहुत होता हैं .साधारणतः जिस मौसम मे जो फल आयें उनको उसी मौसम मे खाने से कोई हानि नही होती ,जब तक कि किसी विशेष फल के लिए आपका स्वास्थ्य या आपका चिकित्सक उसकी अनुमति किसी कारण से दे न रहा हो तो .(इस अवस्था मे अपने चिकित्सक की सलाह का पालन करें)

8. टमाटर रोज खाने से शरीर के लिए आवश्यक विटामिन की पूर्ति सहज ही हो जाती हैं.

9. सुबह शाम यदि तुलसी के पत्ते का रस शहद मे मिलाकर चाटने से स्वप्न दोष जैसे रोग को दूर करने मे बहुत सहायता मिलती हैं.

10. इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि शहद को कभी भी गरम करके न ले, यह बहुत हानिकारक हैं ,और जब भी शहद को पानी या दूध के साथ लेना हो तो पानी या दूध भी हल्का सा कुनकुना हो ,गरम पानी या गरम दूध के साथ भी भूलकर शहद न लें.

Ayurveda

- Having Juice of one lemon with a glass of water every morning provides relief from Vaat (one of the humours of body (in the form of wind)) related disease.

- If along with eating fruits, little bit of exercise and cleansing of body is done then it will help in increasing effect of qualities of fruits inside you.

- Generally it has been said that if fruits are eaten without brushing teeth then it provides better results.

- After eating fruits, one should not drink water for approximately half hour.

- Drinking wood-apple syrup or eating wood-apple helps to get rid of constipation related problems.

- Guava also helps a lot in getting rid of constipation disease. It should be kept in mind that those who are suffering from constipation should eat fruits more and as far as possible they should avoid drugs present in market related to it because their long-term effects are not that much beneficial.

- Fruit like guava helps in increasing digestive power and provides strength to heart and brain etc. Generally there is no harm in eating fruits in the season in which it comes uptil the time your health or doctor does not allow you to eat a particular fruit(In such a case , follow advise of your doctor)

- Eating tomato daily easily fulfill need of vitamin necessary for body.

- Having mixture juice of basil leaf in honey in morning and evening helps a lot to get riddance from disease like nightfall.

- Keep one thing in mind that do not take honey after warming it, it is very dangerous. And when honey has to be taken with water or milk, then water and milk should be warm, do not take honey with hot water or hot milk.

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक **आयुर्वेद शक्ति और लघु प्रयोग महाविशेषांक**

होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be Aayurved shakti aur laghu prayog Mavisheshank for details of that plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit

Our official web site:: www.npru.org

And blog Nikhil-alchemy2.blogspot.com & yahoo group Nikhil alchemy

Our web site http://nikhil-alchemy2.com

Our facebook group :Nikhil alchemy

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI SADGURUDEV